FOREWORD.

This book makes no pretensions to originality. While not a translation, yet it follows very closely Sir Wm Muir's little book entitled "Muhammad and Islam." The object is to give Hindi-speaking Christians an opportunity to know the facts about the life of the founder of Islam.

॥ भूमिका ॥

(१) अरब देश के विषय में।

यह देश आशिया महाद्वीप के नैऋत्यकोण में है। वह तीन ओर जल से घिरा हुआ है। उत्तर की ओर सूरिया देश है दक्षिण की ओर अदन की खाड़ी और अरब समुद्र है।पश्चिम को ओर लाल समुद्र है और पूर्व की ओर फ़ारस की खाड़ी और ओमान की खाड़ी है। यद्यपि यह देश तीन ओर जल से घिरा हुआ है तौभी वह बहुत करके एक सूखा हुआ देश है। समुद्र के किनारे २ अच्छी जमीन पाई जाती है। उस पर थोड़ा सा पानी बरसता है पर देश के अन्दर का भाग एक महा भयानक मरुस्थल है। वहां की नदियां बहुत करके सूखी रहती हैं। जब उन में थोड़ा सा पानी आता है तब वह समुद्र तक नहीं बहता परन्तु रेतीली जमीन में सूख जाता है। पानी के सोते बहुत कम हैं। यदि कोई सोता कहीं निकले तो वह बहुमूल्य समझा जाता है॥

देश के पश्चिम और दक्षिण किनारों पर पहाड़ हैं जो दक्षिण की ओर बहुत ऊंचे हैं। देश के बीच का मरुस्थल एक उच्चसमभूमि है जो कहीं २ समुद्र की सतह से ८००० फुट ऊंची है॥

अरबी लोग अपने विषय में यह बताते हैं कि हम दो भाग के हैं, उत्तरीय और दक्षिणीय। उत्तरीय भाग के लोग इसमाइल के सन्तान और दक्षिणीय भाग के लोग काहतान नाम एक महावीर के सन्तान हैं। इस बात का प्रमाण कहीं नहीं मिलता है और वह कहानी सी मालूम पड़ती है। इतना हम कह सकते हैं कि उत्तर और दक्षिण के लोगों में कुछ भेद था। दक्षिणीय लोग उत्तर के लोगों से पहिले अपनी जंगली दशा को छोड़ सुधराव करने लगे। दक्षिण के लोग समझते थे कि उत्तर के लोग पक्के अरबी नहीं हैं और सैकड़ों बरस तक उन पर कुछ न कुछ शंका करते थे। दक्षिण के लोग गांव और शहरों में रहकर व्यापार करते थे और उत्तर के लोग चरवाहे होकर किसी विशेष स्थान पर नहीं रहते थे।

मुहम्मद् के समय से पहिले अरब के लोग बहुत करके स्वतंत्र रहे। उन के देश पर चढ़ाई करना बहुत कठिन था। मरुस्थल में बैरियों की सेना के लिये खाने पीने को कुछ नहीं मिल सकता है। तौभी दो चार बार परदेशियों ने किसी न किसी भाग पर अपना अधिकार थोड़ी देर तक चलाया जैसे कि अबिसीनिया के राजा ने थोड़े समय तक येमेन पर (जो अरब के दक्षिण में है) प्रभुता किई॥

(२) मुहम्मद् के जन्म से पहिले कुछ बातें जो हुई हैं॥

कहते हैं कि इस्लाम में छ.टी२ बातों का बड़ा प्रभाव हुआ है। मतलब है कि मुहम्मद् साहिब के जीवन चरित्र की छोटी२ बातें भी सारे इस्लामियों के लिये नमूना समझी जाती हैं। मुहम्मदी धर्म का प्रधान और बनानेहारा मुहम्मद् ही है और कुरान की सारी बातें उस की इच्छानुसार लिखी गईं। पीछे जब हम मुहम्मद् के घराने का हाल बतलावेंगे तब यह बात और अच्छी तरह से प्रगट होगी। मुहम्मदियों के यहां जो सुन्नत है। उस में मुहम्मद् साहिब की हर बात हां छोटी२ बातें भी लिखी गई हैं और लोग समझते हैं कि ये हमारे लिये ईश्वर की ओर से नियम ठहरी हैं॥

कहते हैं कि उमर ने एक बार काबा के काले पत्थर पर दृष्टि करके कहा कि अल्लाह की कसम मैं जानता हूं कि त पत्थर ही है और तुझ से न भलाई न बुराई हो सकती है। यदि मुझे मालूम न होता कि नबी ने तुझे चूमा तो मैं न चूमता परन्तु उस के चूमने के कारण मैं भी चूमता हूं। मुहम्मदियों के बीच इब्न हांबल एक प्रसिद्ध मनुष्य था। उस के विषय में कहा गया है कि वह तरबूज नहीं खाता था इस कारण से कि यद्यपि वह जानता था कि नबी ने उस को खाया तौभी इस बात की चर्चा नहीं मिली कि नबी ने केवल अन्दर ही अन्दर का भाग खाया, कि पूरा खाया कि तोड़ के अथवा छुरी से काट के खाया अथवा दांत से काट के खाया। सो उस ने कहा कि मैं न खाऊंगा न हो कि मैं धोखा खाऊं॥

ऐसी २ बातों को समझना अर्थात कि होशियार लोग ऐसी बातों की चिन्ता क्यों करते यह हमारे लिये कठिन है पर तौभी यह न समझना चाहिये कि ये लोग मूर्ख हैं। वे समझते हैं कि यह हमारे लिये अच्छा है कि हमारी छोटी से छोटी बातें भी मुहम्मद साहिब के नमूनानुसार किई जावें। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि मुहम्मद साहिब का वृत्तान्त क्योंकर समझने के योग्य है॥

मुहम्मद साहिब के जीवन वृत्तान्त को समझने में उचित है कि हम इस का विचार करें कि जो २ बातें उस ने सिखाईं सो उस को कहां से मिलीं। विद्वान लोगों के बीच यह बात प्रसिद्ध है कि उस समय के अरबियों पर और विशेष करके मुहम्मद साहिब पर यहूदियों और ईसाइयों का असर हुआ। मुहम्मद साहिब ने मौके पर अपना काम किया। यदि वह अपने समय से पहिले आता तो लोग उसकी न मानते। अरबी लोग अपने मत को बदलने के लिये तैयार थे और तैयारी विशेष करके यहूदियों और ईसाइयों के द्वारा हुई। मक्का में तो यहूदी लोग नहीं रहते थे पर मदीना में जहां मुहम्मद साहिब करीब दस बरस तक रहे थे, वहां बहुत यहूदी थे। इस के सिवाय तैमहा खैबर और येमेन में बहुत यहूदी थे। न केवल यह परन्तु बहुत से अरबी लोग यहूदी मतावलम्बी हो गये थे। अरब देश के यहूदी खेती, व्यापार, कारीगरी आदि काम करते थे। कुरान में की बातों से स्पष्ट है कि यहूदियों का बहुत प्रभाव हुआ। कुरान यहूदियों की कहानियों से भरा हुआ है और मालूम होता है कि यहूदिया की शिक्षा से अरबियों ने माना कि अल्लाह को छोड़ और कोई अल्लाह अर्थात् "ईश्वर" नहीं है॥

ईसाई धर्म अरब में तीन ओर से आया। पहिले पालिस्तीन और सूरिया से आया। पालिस्तीन में के ईसाई यरदन पार हो कर मरुस्थल की ओर जाकर धीरे २ अरब की ओर बढ़ते गये। बोस्त्रा शहर में जो यरदन के पूरब में है और अकाबा की

खाड़ी के सिरे पर जो अय्या शहर है उस में मुहम्मद साहिब के समय बिशप थे। घसान प्रदेश के राजा लोग भी ईसाई थे। सूरिया और पालिस्तीन देशों के मरुस्थल में बहुत ईसाई तपस्वी थे। इन सभों के प्रभाव से कई लोग ईसाई हो गये। किसी ने कहा है कि यदि मुहम्मद साहिब न होता तो थोड़ी देर में उत्तरीय अरब के सारे लोग ईसाई हो जाते॥

फिर दूसरी ओर अर्थात् बाबूल देश से ईसाई लोग अरब में आये। वहां बहुत ईसाई लोग थे। तीसरी ओर अबिसीनिया देश था जहां से ईसाई लोग अरब में आये। येमेन में बहुत ईसाई हो गये थे और मालूम होता है कि वहां के ईसाइयों और यहूदियों के बीच बड़ा झगड़ा हुआ। एक बार अबिसीनिया के राजा ने यत्न किया कि मक्का में जाकर काबा को गिरवा डालूं परन्तु उस का यत्न निष्फल हुआ। कुरान के "हाथी" नाम सुरा में इस का कुछ बयान है॥

अरब के जिस भाग में मुहम्मद पैदा हुआ वहां ईसाइयों का असर कम था, पर यह न समझना चाहिये कि कुछ न था। वहां के लोगों के बीच ईसाई गुलाम थे। फिर वे लोग व्यापार करने के लिये सूरिया आदि ईसाई देशों में जाया करते थे। एक अरबी कवि ने कहा है कि "अलहास ने ईसाइयों के बिचार कहां पर सीखे हीरा के मदिरा बेचनेहारों से सीखे और उन्हों ने उसे सिखाया"॥

सोचना चाहिये कि वहां किस प्रकार के ईसाई लोग पाये जाते थे। जब यूरोप में ईसाई मण्डली प्रबल हुई तब तत्वज्ञान की बातों के विषय में बड़ा झगड़ा होने लगा और जो पक्ष प्रबल निकलता था सो दूसरे पक्ष के बहुत लोगों को भगा देता था। इस प्रकार से बहुत पक्ष उठे और उन के लोग मिसर, अरब, फ़ारस आदि देशों में तितर बितर किये गये इस कारण से उन देशों में कई प्रकार की मण्डलियां पाई जाती थीं। कुछ २ यूनानी मण्डलियां थीं, कुछ निस्टोरिया मण्डलियां, कुछ पिलेगिया मण्डलियां थीं। इस

कारण से क्या देखा जाता है कि उस समय में अरब देश के सब ईसाई लोग एक प्रकार की शिक्षा नहीं देते थे॥

कोई पक्का प्रमाण नहीं मिलता है कि उस समय तक धर्म शास्त्र याने बाइबल अरबी भाषा में उल्था किया गया था। सो जो कुछ अरबी लोग ईसाई धर्म के विषय में जानते थे सो केवल उन की मण्डलियों को देखने से और बातचीत के सुनने से जानते थे। जो बात किताब में पक्की नहीं किई जाती सो अवश्य बदलती जाती। इस से साफ दिखाई देता है कि मुहम्मद साहिब ने यीशु के विषय में ठीक बातें नहीं सीखीं। कोई प्रमाण नहीं है कि मुहम्मद साहिब ने ईसाई धर्म को सीखने का यत्न किया। जो २ कहानियां लोगों के बीच में चलती थीं उन्हीं को बिना जांच किये उस ने ग्रहण किया॥

॥ पहिला अध्याय ॥

बाल्यावस्था ।

अरब देश का नबी मक्का शहर में सन ईस्वी ५७० म उत्पन्न हुआ यह कुरेश जाति का था यह जाति मक्का शहर और उस के आस पास के देशों पर अधिकार रखती थी। इस शहर के पास एक पुराना मन्दिर है जिसे काबा कहते हैं उस में की मूर्तियों को करीब सारे अरब देश के लोग पूजते थे और हर साल वहां एक मेला लगता था जिस में सारे अरब देश के लोग आया करते थे । इस लिये कि कुरेश लोग काबा के अधिकारी थे अरबी लोग उन का बड़ा आदर करते थे । इस जाति की कई एक शाखाएं थीं। जिस शाखा में नबी पैदा हुआ सो उस समय मुख्य समझी जाती थी । मुहम्मद का पिता अब्दुल मुतालिब का बेटा अब्दुल्ला था । उस की माता का नाम अमिना था । अपनी शादी के थोड़े समय पश्चात उस का पिता सूरिया देश को व्यापार करने के लिये गया लौटते समय वह मदीना शहर में बीमार पड़ कर वहीं मर गया। इस समय विधवा के पास एक घर, ५ ऊंट और एक दासी थी जो घर का काम करती थी । इस दासी का नाम ओमयमान था। यह पैतृक धन थोड़ा तो था पर उस समय के अरबियों के बीच जिस के पास इतना धन था सो गरीब नहीं समझा जाता था । अब्दुल्ला की मृत्यु के थोड़े समय पीछे अमिना को एक पुत्र हुआ उस ने इस की खबर अब्दुल मुतालिब के पास भेजी और बच्चे को काबा में ले जाकर धन्यवाद दिया । उस बच्चे का नाम मुहम्मद (प्रशंसनीय) ठहराया गया । उस के बालकपन के विषय में बहुत सी कहानियां सुनने में आती हैं लेकिन थोड़ी सी बातें सच मालूम पड़ती हैं॥

कुरेश जाति की मां लोगों का दस्तूर था कि बच्चों को दूध पिलाने के लिये किसी बंजारे के घर में छोड़ देती थीं। इस प्रकार से बच्चे मक्का शहर की बुरी आब हवा से बच

मरुस्थल में रह कर तनदुरुस्त हो जाते थे। कुछ दिन तक दासी ने मुहम्मद को पाला जिस के पीछे उस की मा ने उसे हलीमा को जो बनी सद जाति की थी सौंप दिया वह वहां दो वर्ष रहा तब हलीमा ने उस का दूध छुड़ाकर उसे लौटा दिया। मां ने उसे तन्दुरुस्त देख कहा कि मैं मक्का की आब हवा से डरती हूं सो फिर इसे ले जाओ। फिर हलीमा ने दो वर्ष बाद उसे लौटाया। वह एक बार घबरा गई थी क्योंकि मुहम्मद उस समय बावला हो गया था। हलीमा और उस का पति यह समझके कि उसे भूत लगा है चाहता था कि वह हमारे घर में न रहे। मा ने उन को समझा के मनाया तब मुहम्मद उन के पास एक साल और रहा परन्तु वह फिर बावला हो गया इस लिये वह पांच साल की अवस्था में अपनी मां के पास रहने लगा। वह हलीमा को बहुत प्यार करता था अकाल के समय में हलीमा उस के पास मक्का शहर में आई तब उसने उसे एक ऊंट और भेड़ बकरियों का एक झुण्ड दिया। किसी दूसरी भेंट के समय मुहम्मद ने उस के बैठने के लिये अपना दुपट्टा बिछाया और बड़े प्रेम से अपना हाथ उस की छाती पर रक्खा॥

बहुत वर्ष बाद जब लड़ाई में बनी सद जाति हार गई तब कैदियों ने मुहम्मद से कहा कि आप हमारी जाति में रहते थे यह सुन कर उस ने उन को छोड़ दिया। एक समय एक स्त्री ने जो कैदी थी कहा कि मैं हलीमा की बेटी हूं देखिये जब आप हमारे साथ रहते थे तब आप ने मुझे दांत से काटा था यह उस का निशान है। यह बात सच थी मुहम्मद ने कहा कि आप मेरे यहां रहिये यदि आप जाने चाहती हैं, तो मैं आप को इनाम दूंगा वह इनाम लेकर अपने घर चली गई। शायद उस के बावला होने का कारण वही बात थी जिस कारण से वह बड़े होने पर बेहोश हुआ करता था। और बातों के विषय में उसे मरुस्थल में रहने से बहुत लाभ हुआ शरीर मजबूत हुआ और उस की भाषा पक्की अरबी रही। उसने अपना छटवां साल अपनी मां के साथ

मक्का शहर में बिताया। इस समय अमिना ने ठाना कि मैं मदीने को जाऊंगी । वह चाहती थी कि अपना लड़का उस के पिता के रिश्तेदारों को दिखलाऊं यात्रा के लिये २ ऊंट थे। ओमयमान ने बच्चे की सेवा किई। अमिना वहां उस मकान में उतरी जहां उस का पति मरा था । बहुत बर्षों के पीछे जब मुहम्मद वहां रहने को गया तब उस ने उस जगह को पहिचाना कि यहां मैं अपनी मां के साथ कुछ दिन रहा मैं यहां बच्चों के साथ खेलता था। यह मेरे पिता की कबर है और मैं ने इस तालाब में तैरना सीखा , अमिना मदीने में एक माह ठहर कर लौट ने लगी और आधे रास्ते में बीमार होकर मर गई। दासी लड़के को मक्का ले गई यद्यपि यह दासी जवान थी तौभी बच्चे के पालने में विश्वास योग्य रही । मुहम्मद समझता था कि मैं अनाथ होके कैसी दशा में हूं । उसे मां के मरने का बड़ा रंज था॥

कुरान में अल्लाह की दया के विषय में लिखकर मुहम्मद कहता है „ क्या उसने तुझे अनाथ पाके तेरे लिये शरणस्थान तैयार न किया ,, ॥

फिर एक समय जब वह मदीने से मक्के को जाता था तब अपनी मा की कबर के पास रोने लगा जब लोगों ने पूछा कि आप क्यों रोते हैं तब उसने कहा कि यह मेरी मां की कबर है जिसे अल्लाह ने मुझे देखने दिया है । मैं अपनी मां की याद करके रोने लगा हूं ॥

मुहम्मद अपनी मा की मृत्यु के पीछे अपने दादा अब्दुल मुतालिब के यहां रहने लगा वह यद्यपि ८० वर्ष का था तौ-भी अपने पोते का पालन खुशी से करता था वह अक्सर काबा की छाया में बैठा करता था। मुहम्मद के काका लोग अब्दुल मुतालिब के पुत्र मुहम्मद को वहां से भगाने चाहते थे पर उन का पिता कहा करता था कि उसे रहने दो । मुहम्मद घर में भी अपने दादा के साथ साथ रहा करता था। इस के दो वर्ष पश्चात अब्दुल मुतालिब

मर गया इस समय मुहम्मद आठ वर्ष का था जब लोग उस के दादे की लाश ले जाने लगे तब वह रोते हुए उन के संग गया। दादा के मरने से मुहम्मद को अधिक दुःख हुआ क्योंकि उस के काका लोग घर के अधिकार को संभाल नहीं सकते थे। इस कारण कुछ पदवियों को जो अब तक घराने की थी छोड़ना पड़ा। इस घराने की घटती पर दूसरा घराना बनी श्रोमेया नाम का बढ़ने लगा और उस समय तक अधिकारी रहा जब तक मुहम्मद ने मक्के पर चढ़ाई करके उस को न जीत लिया। इस समय वह बैर शुरू हुआ जो ओमेया और हाशिम के घरानों के बीच बहुत दिन तक रहा। जब अब्दुल मुतालिब मरने पर था तब उस ने अपने पुत्र अबुतालिब के हाथ में मुहम्मद को सौंप दिया। अबुतालिब ने उसे उचित रीति से पाला जब तक मुहम्मद जवान न हुआ तब तक उसी के साथ साथ रहा। अबुतालिब यद्यपि बड़े घराने का था तौभी कंगाल था धन प्राप्त करने की आशा से वह सूरिया देश को गया वह मुहम्मद को मक्के में छोड़ने चाहता था पर जब वह जाने लगा तब मुहम्मद ने उसे छोड़ने न चाहा। सो अबुतालिब उस की बिन्ती सुन उसे अपने साथ ले गया। उन की यात्रा बोस्त्रा शहर तक की थी। वह कई माह की यात्रा थी इस यात्रा में मुहम्मद ने ख्रीष्टियानों की मण्डलियों और ईश्वर के भजन करने की रीतियों को देखा। यद्यपि सूरिया देश की मण्डलियां बहुत बिगड़ी हुई थीं तौभी उस के भजन करने की रीतियां मक्के के मूर्तिपूजकों की पूजा के दस्तूरों से बहुत भिन्न थीं इस में मुहम्मद के लिये बड़े विचार की बात थी॥

॥ दूसरा अध्याय ॥

मुहम्मद की तरुणावस्था और उस का शादी करना।

मुम्महद की तरुणावस्था के विषय में हम बहुत कम जानते हैं ओकास शहर में जो मक्के से तीन मंजिल दूर था वहां हर साल मेला हुआ करता था सो मुहम्मद इस मेले में जाया करता था वहां उस ने लोगों के व्यापार को देखा और उन की कविता सुनी। इस मेले में उस ने यहूदी और ईसाइयों को भी देखा और निश्चय है कि उस में उन के धर्म्म की कई बातें सीखीं बार २ उस ने कहा है कि वहां पर कौस से जो नज़रान का विशप था मेरी भेंट हुई और उस के मुंह से मैं ने इब्राहीम के मत के विषय में सुना ॥

इस मेले में एक झगड़ा उत्पन्न हुआ जिस से कई वर्षों तक कुरैश और एक दूसरी जाति के बीच में लड़ाई होती रही। मुहम्मद इस समय २० वर्ष का था वह लड़ने को तो गया पर उसे लड़ने का कुछ शौक न था वह इतना काम अवश्य करता था कि जो बांण जमीन पर गिरते थे उन्हें दूसरे लड़ने वालों को उठा २ कर देता जाता था। उस समय एक बात और उठी जिस में उस का शौक था अब्दुल मुतालिब के मरने के पीछे कोई बलवन्त अधिकारी न था जो लोगों के बीच न्याय करे इस कारण बड़ा अन्धेर होने लगा। कुरैश जाति के लोगों ने विचार किया कि हमारे बीच में जितने घराने हैं उन के सब अधिकारी लोग मिल कर बाचा बांधे जिस्तें न्याय किया जावे सो उन्हों ने उपवास का एक दिन ठहराया जिस में बहुत लोग शामिल हुए उन्हों ने यह किरिया खाई कि जब तक समुद्र में पानी रहे तब तक हम अन्धेर बन्द करने को कोशिश न छोड़ेंगे। उन का अभिप्राय पूरा हुआ। इस में मुहम्मद भी शामिल था। उस के विषय में मुहम्मद ने एक बार कहा कि इस बाचा के स्मरण के बदले में जो मैं ने दूसरों के साथ अन्याय को बन्द करने के लिये बांधी मैं अरबदेश के सब से अच्छे ऊंट को भी ग्रहण न करता। उस ने कुछ समय ढोरों के

चराने में बिताया। वह अपने पिछले दिनों में कहा करता था कि उचित था कि मैं जो नबी हूं दाऊद और मूसा के समान अपना कुछ समय झुण्ड के चराने में बिताऊं। एक बार लड़ाई के समय में उसने कुछ बैंगनी रंग का फल देखा और यह पुकार के कहा कि जो सब से काला है सो तोड़के देना फिर कहा कि अपने ढोरों को चराते समय मैंने ऐसे फल को तोड़ा। कोई सच्चा नबी न उठा जिस ने पहिले गड़रिये का काम न किया हो। रात को जब वह मरुस्थल में अपने झुण्ड की रखवाली करता था तब उस ने ताराओं की अद्भुत बातों पर विचार किया होगा। पहाड़ों में आंधी का बल गर्जन और बिजली समेत देखा होगा। इस से जगत में की शक्तियां जो किसी से कभी रुकतीं नहीं उन का उस ने ज्ञान प्राप्त किया होगा। इस से उस का विश्वास बढ़ा। एक सर्व उपस्थित सर्वकारक अल्लाह (परमेश्वर) पर उसका ऐसा पक्का विश्वास था कि जिस को देख कर लोग आश्चर्य्य करते थे॥

कहा जाता है कि मक्के के जवानों में से मुहम्मद सदाचार के लिये प्रसिद्ध था। एक समय वह रात को झुण्ड की चौकसी करता था तब उसने अपने साथी से कहा कि तुम देखते रहो मैं शहर में जाके दूसरे जवानों के समान खेल तमाशा देखूंगा। रास्ते में वह एक शादी के कारण रुक गया और वहीं सो गया। फिर दूसरी रात को जब वह जा रहा था तब स्वंग से बाजे की आवाज सुनी और वह ठहरकर सो गया। मुहम्मद कहता है कि इस के पीछे बुराई को मैंने कभी न ढूंढ़ा। हम इन कहानियों पर अधिक विश्वास नहीं करते हैं पर तौभी हम इन से जान सकते हैं कि तरुणावस्था में मुहम्मद एक अच्छा आदमी था क्योंकि वह लुच्चपन से घिन करता था और सब व्योहारों में सीधा और ईमानदार पाया जाता था इसी कारण से उस को अलअमीन अर्थात् विश्वास योग्य नाम दिया गया॥

कुछ समय के पश्चात अबुतालिब ने अपने ग़रीब होने के कारण कहा कि तुम अब बड़े हो गये हो सो उचित है कि

तुम अपने लिये आप कमाओ। देखो खदीजा के ऊंट सामान लेकर सूरिया देश को जाते हैं और उस के पास कोई प्रबन्ध-कर्ता नहीं हैं तो तुम उस के कारिन्दा हो कर जाओ। मुहम्हद जाने को राजी था सो अबुतालिब ने खदीजा से कह दिया कि तुम मुहम्मद को अपना प्रबन्धकर्ता करके भेज दो और उस को मजदूरी के लिये चार ऊंट दिये जावें। खदीजा ने उत्तर दिया कि यदि आप किसी अन्यजाति वाले के लिये इतना मांगते तो मैं देती फिर कितना अधिक करके मुहम्मद के लिये जो अपनी जाती का है न करूंगी सो मुहम्मद प्रबन्धकर्ता हो कर वोस्त्रा शहर को गया इस लिये उसे फिर मौका मिला कि सूरिया के ईसाइयों और उन की मंडलियों को देखे। वह लेन देन के काम में मन नहीं लगाता था पर वह स्वभाव ही से होशियार और चतुर था इस लिये जब वह लौटा तब खदीजा को बहुत कुछ नफ़ा हुआ। लौटते समय खदीजा के एक नौकर ने मुहम्मद से कहा कि आप खुद खदीजा के पास जाकर काम सुफल होने का संदेश दीजिये। खदीजा अपनी दासियों के सङ्ग छत पर बैठी थी। आज्ञा पाके मुहम्मद ने लेन देन के विषय में बताया। खदीजा उस के काम से बहुत खुश हुई और वह मुहम्मद पर मोहित भी हो गई। इस समय वह चालीस वर्ष की थी और उस की दो बार शादी भी हो गई थी। उस के एक बेटा और दो बेटियां थीं वह धनवान सुन्दर और उच्चजाति की थी। बहुत लोग उस से शादी करने चाहते थे परन्तु वह विधवा की दशा से प्रसन्न थी लेकिन जब उसने मुहम्मद को देखा तब ही उस का मन बदल गया कुछ काल तक उस ने अपने मन को दबाने चाहा पर न दबा सकी अंत में उसने मुहम्मद से बात करने के लिये अपनी बहिन को भेजा उसने मुहम्मद से पूछा कि आप अपनी शादी क्यों नहीं करते हैं ? उत्तर मिला कि मैं खाली हाथ कैसे शादी करूं उसने कहा कि यदि कोई सुन्दर उच्चजाति की, और धनवान स्त्री आप से शादी करने चाहती

हो तो आप क्या करेंगे मुहम्मद ने चौंक कर कहा कि कौन है उस ने कहा कि और कोई नहीं केवल मेरी बहिन ही है उस ने कहा मैं उसे कैसे पा सक्ता हूं स्त्री ने कहा कि मैं उस का सब बन्दोबस्त करूंगी मुहम्मद ने कहा कि मैं तैयार हूं। खदीजा का पिता मूर्ख था सो खदीजा डरती थी कि कहीं वह इन्कार न कर देवे सो उस ने एक बड़ा भोज तैयार किया और अपने पिता को खूब खिलाया पिलाया फिर एक गाय काट सब पाहुनों पर शादी का कपड़ा डाल के एक दम शादी को पूरा किया। जब बाप होश में आया तब पूछने लगा कि इस का क्या अर्थ है? यह कपड़ा यह भोजन, यह सुगन्ध और यह कटी हुई गाय, उन्होंने कहा कि आप के दामाद मुहम्मद ही ने पहिनाया है इस पर वह बड़े क्रोध में आकर कहने लगा कि जिस को कुरैश के सब बड़े अधिकारी लोग चाहते हैं क्या उसे मैं एक कङ्गाल जवान को दूं अपनी तलवार निकाल वह लड़ने को तैयार हुआ पर अन्त में जब लोगों ने उसे समझाया कि यह खदीजा ही का काम है तब वह मान गया। यद्यपि मुहम्मद की शादी झगड़े के साथ हुई तौभी वे दोनों आनन्द के साथ रहते थे। खदीजा ने पहिले के समान अपने काम को चलाया और मुहम्मद को ध्यान और बिचार करने का मौका मिला। उस ने अपने सब बिचार खदीजा को बताये। उन के दो बेटे और चार बेटियां पैदा हुईं पर दोनों बेटे बचपन ही में मर गये। बड़े बेटे का नाम कासिम था इस कारण अरबी दस्तूरों के अनुसार मुहम्मद को अबलकासिम याने कासिम का बाप कहते। पिछले दिनों में मुहम्मद ने इस समय को ऐसे आनन्द के साथ स्मरण किया कि एक समय आएशा ने जिस को मुहम्मद अपने पिछले दिनों में अधिक चाहता था कहा कि मैं इन दूसरी स्त्रियों से अधिक खदीजा पर जलती हूं॥

॥ तीसरा अध्याय ॥

काबा को फिर से बनाना ।

मुहम्मद की शादी के दस वर्ष पीछे मक्के के लोगों ने काबा को फिर से बनाना आरम्भ किया । इस समय मुहम्मद भी वहां उपस्थित था । यह घर बहुत पुराना था । काबा का अर्थ है घन । उसे यह भी नाम दिया जाता है अर्थात् बैतउल्लाह (ईश्वर का घर) मुहम्मदियों की एक कहानी है कि इब्राहीम ने इस काबा को बनाया । उस के पास एक कुआ है जिसे हाजिरा का कुआ कहते हैं क्योंकि उन की कहानी है कि हाजिरा ने अपने लड़के को यहां रख कर उस की मृत्यु के लिये ठहरी थी फिर वह रंज के मारे सफा और मरवा दो टेकड़ियों के बीच में पानी ढुंढ़ने लगी इतने में जेम २ नाम सोता वहने लगा ॥

काबा के साम्हने होबाल नाम एक बड़ी मूर्ति थी यह मक्के वालों का मुख्य देवता था । होबाल के आस पास और भी बहुत सी मूर्तियां थीं । हर साल तीन पवित्र माहों में से जिन में लड़ाई करना मना था एक माह में बड़ा मेला लगता था और चारों ओर से यात्रियों की भीड़ की भीड़ आती थी, काबा के कोने में एक काला पत्थर लगा है । इस पत्थर के देखने से मालूम होता है । कि यह आकाश से गिरा । यात्री लोग इस काले पत्थर को चुमते हैं और पवित्र कुए का पानी पीते हैं । फिर अर्फात नाम पहाड़ जो १२ मील दूर है उस की यात्रा करने में दो तीन दिन बिताते हैं आधे रास्ते में मिना नाम एक स्थान है जहां पशु बलि किये जाते हैं यही बड़ी यात्रा कहलाती है । जो पूजा काबा के पास किई जाती है सो छोटी यात्रा कहलाती है । छोटी यात्रा को साल के हर माह में कर सक्ते हैं ॥

पानी की बाढ़ से काबा का इतना नुक़सान हुआ कि उसे तोड़ कर फिर से बनाना पड़ा । जब दीवाल उठाने लगी तब मुख्य २ घरानों में झगड़ा होने लगा कि काले पत्थर को उस के स्थान पर कौन रक्खे । उन के लड़ने पर एक ने कहा कि जो पुरुष पहिले दिखाई देवे वही इस का निर्णय करने हारा

होगा। उस के कहते ही मुहम्मद आया सभों ने कहा अलअमीन है अच्छा है। मुहम्मद ने अपना कपड़ा ज़मीन पर रखकर कहा इस पत्थर को रख दो फिर उसने झगड़ा करनेहारों से कहा कि हर एक घराने से एक एक मनुष्य इस कपड़े के एक एक कोने को पकड़े सो इस प्रकार से पत्थर उठाया गया और मुहम्मद ने उसे उस के ठीक स्थान पर जमा दिया। छत के लिये एक जहाज की लकड़ी निकाली गई जो मक्के के पास एक पत्थर से ठोकर खाकर टूट गई थी। फिर काबा के ऊपर एक काला परदा डाला गया। इस प्रकार से काबा बनकर तैयार हुआ ॥

इस समय मुहम्मद का एक लड़का मरा सो उसने अबुतालिब के लड़के अली को अपने यहां ले लिया इस समय यह ५ या ६ वर्ष का था। इस समय से अली और मुहम्मद के बीच में बड़ी मित्रता हो गई। थोड़े दिन के पीछे उस ने हारथा के लड़के जैद को भी अपने घर में ले लिया। जैद और मुहम्मद की भी बड़ी मित्रता हो गई। जैद २० वर्ष का था। डाकुओं ने उसे छुटपन ही में चुरा कर बेच डाला था और खदीजा ने उसे मोल लिया था। जैद नाटा, काला और बदसूरत था पर बड़ा काम करने वाला था। मुहम्मद उसे बहुत प्यार करता था सो खदीजा ने उसे मुहम्मद को इनाम की तौर पर सौंप दिया। जैद का पिता जो उसे बहुत साल से ढूंढ़ रहा था और आख़िर को उसे मालूम हुआ कि वह मक्के में है सो वह बहुत रुपया लेकर उसे ढूंढ़ने के लिये आया पर जैद ने जाने न चाहा। उस ने मुहम्मद से कहा कि मैं आप को न छोड़ूंगा आप मा बाप से अधिक प्यारे हैं इस पर मुहम्मद ने जैद को काबा के पास ले जाकर सभों के साम्हने कहा कि आप लोग साक्षी हैं जैद मेरा लड़का और मैं उस का पिता हूं। वह मेरा उत्तराधिकारी होगा उस का पिता खुश होकर चला गया। इस समय से जैद स्वतंत्र होकर मुहम्मद का बेटा कहलाने लगा। जैद ने ओमयमन से शादी किई। ओमयमन की उमर जैद की उमर से बहुत अधिक थी पर मुहम्मद ने जैद से कहा कि यदि तुम उस से शादी करो तो बिहिश्त में बड़ा इनाम

पाओगे। उन के एक लड़का हुआ जिस का नाम ओसामा था जो एक बड़ा सेना पति हो गया। जैद के माता पिता एक प्रकार की ईसाई जाति के थे अनुमान है कि यद्यपि वह बचपन में चुराया गया था तौभी वह ईसाइयों के विषय में कई एक बातें जानता था इसलिये कुछ २ मुहम्मद को बता सक्ता था। खदीजा के रिश्तेदारों में भी कई लोग थे जो यद्यपि ईसाई न थे तौभी ईसाई धर्म्म के विषय में कुछ २ जानते थे। उस के एक चचेरे भाई ने कान्स्टेन्टिनोपल शहर में डूब ली थी उस ने कोशिश किई कि मक्के को वश में करने के लिये कान्स्टेन्टिनोपल के राजा से मदद मिले। इस में सुफल न होके वह बोस्रा शहर में जाके रहने लगा। खदीजा के एक और चचेरे भाई के विषय में लिखा है कि वह ईसाई होकर धर्म्मपुस्तक के कुछ भाग का उल्था अर्बी भाषा में करने लगा॥

मालूम होता है कि उस समय अरब में लोग धर्म्म की बातों पर विचार करते थे। चार मुतलाशियों का बयान मिलता है जो इब्राहीम के सच्चे मत को ढूंढ़ते थे। इन में से जैद एक था जिस ने काबा की मूर्ति पूजा और लड़कियों के पैदा होते ही मार डालने की रीति को मना किया और बताया कि मुहम्मद एक नबी होगा। मक्के में यहूदी और ईसाई गुलामों की दशा में पाये जाते थे और मदीना के आसपास यहूदियों की बस्तियां थीं इन के पास मुहम्मद पुराने और नये नियम के विषय में सीख सक्ता था। इस समय मुहम्मद की लड़कियां बड़ी होने लगीं सो बड़ी की शादी खदीजा के भतीजे से हुई और दो की मुहम्मद के काका अबुलहब के लड़कों के साथ हुई। मुहम्मद आराम से तो रहता था पर तौभी उस का मन शांत न था। वह इस समय ४० वर्ष का था और उसे उस की जाति की बिगड़ी हुई दशा बुरी लगती थी। इस कारण उस के मन में शंका उत्पन्न हुई और वह सत्यधर्म्म का खोज या विचार करने लगा। मक्के से तीन मील दूर हीरा पहाड़ है सो वह इस पहाड़ की गुफा में विचार करने को जाया करता था। वहां वह कभी २ अकेला और कभी २ खदीजा भी जाया करती थी यहां वह कभी थोड़े समय और कभी कई दिनों के लिये रहा करता था॥

॥ चौथा अध्याय ॥

मुहम्मद नबूवत करने लगता।

मुहम्मद के मन में एक झगड़ा हो रहा था कि मानो अंधेरा और उजियाला लड़ता होवे। वह धीरे समझने लगा कि अल्लाह अद्वितीय सृजनहार और सभों का अधिकारी है और न्यायक भी है। मनुष्य सब लाचार दुखित और मूर्तिपूजा में डूब रहे हैं अच्छों के लिये एक स्वर्ग है और बुरों के लिये एक नरक स्थापित है। एक पुनरुत्थान होगा जिस के पीछे एक न्याय का दिन आवेगा और परलोक में मनुष्य को भले बुरे का फल मिलेगा। देखो सूरा ९५,१०२,१०४। इन में देखा जाता है कि अल्लाह अपने को हम कहता है और मुहम्मद को तू कहता है। इस के पहिले कि मुहम्मद को यह बात मालूम हुई कि अल्लाह खुद मुझ से बोलता है बहुत समय बीत गया था। कहते हैं कि कभी २ उस के मन का दुःख इतना था कि वह आत्मघात करने चाहता था। कभी २ वह बेहोश होकर दर्शन देखता था। इन बातों के विषय में हम बहुत कम जानते हैं कुछ ईसाई कहते हैं कि यह मिर्गी का रोग था और यही उसे बचपन में भी हुआ था। कहते हैं कि यह बेहोशी उस के पिछले दिनों में जब वह अल्लाह का वचन पाता था आया करती थी पर ठीक नहीं जान सक्ते कि ऐसे समयों में उस की क्या दशा थी। उस के समय से एक और कहानी चली आती है॥

मुहम्मद के दर्शन पाने के आरंभ में इस प्रकार से हुआ कि हर दर्शन बहुत ही साफ देखने में आये। जब ये दर्शन होने लगे तब वह हीरा पहाड़ की गुफा में अकेला जाने चाहता था और वह वहां कई दिन तक रहता था फिर खदीजा के प्यार के कारण घर लौटता था। इस प्रकार से कुछ समय तक करता रहा पर वह बात एक दम उस के मन में आई कि यह अल्लाह की ओर से है। यह इस प्रकार से हुआ कि जब वह पहाड़ में घूम रहा था तब आकाश से एक आवाज आई कि हे मुहम्मद मैं

जब्राएल हूं। तब वह डर गया और जब २ वह ऊपर देखता था तब आकाश में दूत का रूप देखता था। वह भाग के खदीजा के पास गया और कहा कि खदीजा मैं यहां की मूर्तियों से और पुजारियों की नबूवत से बहुत घिन करता हूं परन्तु मुझे डर है कि मैं भी नबूवत न करने लगूं। खदीजा ने कहा कि ऐसा कभी न होगा। उस ने ये बातें अपने चचेरे भाई वरका से कहीं वरका ने कहा कि यह सच कहता है यह सच्ची नबूवत का आरंभ है। जिस प्रकार मूसा पर व्यवस्था उतारी गई उसी प्रकार तुझ पर भी बड़ी व्यवस्था उतारी जावेगी। जिस रातको अल्लाह ने ठहराया कि मुहम्मद पर दया करे उस समय जब्राएल ने उसे गुफा में दर्शन दिया और एक लिखा हुआ पत्र उस के साम्हने रखकर कहा कि पढ़ तब मुहम्मद ने कहा कि मैं पढ़ नहीं सक्ता हूं इसपर दूतने उसे ऐसा दबाया कि उसने जाना कि मेरा समय आ गया है। दूत ने दूसरी बार कहा कि पढ़ तब उस ने डर के मारे कहा कि क्या पढ़ूं दूत ने कहा कि सृष्टि कर्ता परमेश्वर के नाम से पढ़ जिस ने मनुष्य को खून के थक्के से बनाया है। सूरा ९६॥

अब दूत चला गया तब मुहम्मद ने कहा कि उस के वचन मेरे मनमें मानो गड़गये हैं। इसके पीछे उसे कई दिनों तक दर्शन न मिला। तब वह निराश हुआ और यह सोच के कि मुझे भूत लगा है आत्मघात करने चाहता था। वह बाहर किसी चटान को ढूंढ़ता था कि उस पर से कूद कर मर जाऊं। इतने में उसने आस्मानमें सिंहासन पर बैठे हुए स्वर्ग दूत को देखा। दूत ने कहा कि हे मुहम्मद तू अल्लाह का नबी है और मैं जब्राएल हूं इस पर मुहम्मद घर को लौटा। दूसरी बार अपने ही सोच के कारण डर कर उस ने खदीजा से कहा कि मुझे कपड़े से ढांप दो जब वह कांपता हुआ पड़ा था तब उस ने यह वचन सुना कि हे मनुष्य तू जो ढंपा हुआ पड़ा है उठ और उपदेश कर और अपने प्रभु की महिमा प्रगट कर अपने कपड़े को साफ कर और सब अशुद्धता से अलग हो आदि। सूरा ७४.॥

जब मुहम्मद दर्शन पाता था तब घबराया करता था माथे से पसीना गिरता था और वह मानो बेहोश हो जमीन पर गिर पड़ता था। वह यह कहा करता था कि अल्लाह का बचन मुझ पर दो प्रकारसे आता है कभी२ जब्राएल मुझसे ऐसे बोलता है जैसे एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से बातें करता है। और समयों में घंटे के बजने के समान छेदकर वह मुझे फाड़ता है इस से मुझे बहुत दुख होता है। बुढ़ापे में अपने पक्के बालों को दिख कर वह कहता था कि यह उस समय के भयंकर दर्शनों के कारण हुआ। मुहम्मद को इस प्रकार के दर्शन हुआ करते थे जिन में वह समझता था कि अल्लाह मुझे साक्षात दिखाई देता है पर जैसे वह उम्र में बढ़ते जाता था तैसे दर्शनों की भी तेजी कम होती जाती थी जो बातें उस ने दर्शनों में सुनी उन को उस ने कुरान कहा॥

॥ पांचवा अध्याय ॥

उस के पहिले शिष्यों का सताया जाना और अबिसिनिया को भागना।

जब मुहम्मद के मन का शक्क निकल गया तब वह अपने मित्रों और रिस्तेदारों के बीच में शिष्य करने लगा। उस के पहिले शिष्य उस के निज घराने के थे याने खदीजा, जैद, ओसमयमान और अली आदि॥

खदीजा मुहम्मद को बहुत साहस दिया करती थी मुहम्मद ने पहले प्रगट में नहीं सुनाया परन्तु कोई ४० या ५० जन उस के शिष्य हो गये। ये बहुत करके तरुण थे परन्तु अबुबकर नाम शिष्य मुहम्मद कीसी अवस्था का था उस के विषय में मुहम्मद ने कहा कि पहिले सभों ने मेरी शिक्षा का शक्क किया पर केवल अबुबकर ने बिना कुछ शक्क किये मान लिया। वह एक धनवान सौदागर था और अपने धन को इस्लाम के कारण सताये हुए गुलामों के छुटकारा देने में खर्च करता था॥

कुछ समय पीछे वह प्रगट में शिक्षा देने लगा। उस की शिक्षा समझने के लिये सहज थी उस ने अपने नये पंथ को इस्लाम (अल्लाह को अर्पण करना) कहा फिर उस ने कहा कि मैं पुराने नबियों के समान अरबी लोगों के लिये एक नबी आया हूं क्योंकि अरब में अब तक कोई नबी न हुआ और यह भी कहा कि मुर्तियां घिनौनी वस्तुएं हैं एक अल्लाह है उस का कोई साथी नहीं मनुष्यों से अति महान है किसी सृजी हुई चीज को उस का साथी कहना अनुचित है। उस ने अरबी लोगों को बुलाया कि अपने परदादे इब्राहीम के सच्चे धर्म को फिर मानने लगें। उस ने सिखाया कि विचार का और पुनरुत्थान का दिन होगा और स्वर्ग, नरक है जिन में भले बुरों को उनके कर्मानुसार फल मिलेगा। पहले कुरैश लोगों ने उस का बड़ा ठट्ठा किया वे कहते थे कि देखो अब्दुल्ला का बेटा जो स्वर्ग की बातें कहता है पर जब वह उन की मूर्तियों को तुच्छ जानने लगा और कहने लगा कि तुम्हारे बाप दादे सब नरक में गये हैं तब नाराज हो कर उसे सताने लगे। मक्के के लोग काबा पर घमंड करते थे वे मुहम्मद की बातों को नहीं समझते थे सो उन को डर था कि मुहम्मद काबा की पूजा को कहीं मिटा न डाले इस लिये उन्हों ने कहा कि इस नये धर्म को नाश करना है सो मुहम्मद के लोग बहुत सताये गये केवल वे बच गये जो ऊंचे घराने के थे॥

जो गुलाम मुहम्मदी हो गये उन का बचाने हारा कोई न था लोग उन्हें शहर से बाहर रेती में पटक कर बांधते थे कि वे धूप से सताये जावें। यदि वे मुहम्मद को मुकर कर मूर्तियों को मानते तो उन की प्यास बुझाई जाती थी और वे घर को लौटाये जाते थे परन्तु एक हब्शी गुलाम स्थिर रहा जिस समय वह सताया जाता था तब अबुबकर उस तरफ गया और उसे देखकर दाम दे छुड़ाया। जो मुकर गये उन पर मुहम्मद ने बड़ी दया की। एक उस पास आकर कहने लगा कि जब तक मैं आप को न मुकरा तब तक उन्हों ने मुझे न छोड़ा। मुहम्मद ने कहा कि तुम्हारा मन कैसा है उस ने कहा कि मेरा मन स्थिर है तब मुहम्मद ने कहा यदि वे फिर तुम को सतावें तो ऐसा ही

करना क्योंकि कुरान में लिखा है कि जो सताये जाने के कारण झुकर जावें सो दोषी नहीं हैं। मुहम्मद सताया नहीं गया उसका काका यद्यपि विश्वासी नहीं था तौभी उस की रक्षा करता था लोगों की विरुद्धता दिन २ बढ़ती जाती थी उन्हों ने उसे और उस की शिक्षा को ठट्ठे में उड़ाया। अन्त में मुहम्मद ने अपने लोगों को पश्चिम की ओर इशारा करके कहा कि वहां धर्मी राज्य है वहां भागकर बचो और अल्लाह तुम्हारे लिये मार्ग तैयार करेगा इस लिये १५ जन लाल समुद्र के पार अबिसिनिया देश को भाग गये। इस समय मुहम्मद की आयु ४७ वर्ष की थी और उस की शिक्षा देने का पांचवां साल था॥

॥ छटवां अध्याय ॥

मुहम्मद का मूर्तियों को मानना, अबिसिनिया को दूसरी बार भागना, ओमर और हमज़ा का मुहम्मदी होना।

जो लोग भाग गये थे सो तीन माह के पश्चात लौटे क्यों कि उन्हों ने सुना था कि अब मक्के में सब लोगों का मेल हो गया है। सचमुच थोड़े समय के लिये मेल हो गया था। इस बात में बहुत सी कहानियां मिलाई गई हैं पर तौभी मुख्य बातें सच हैं कि मुहम्मद ही ने मेल कराया था; उस ने मक्के के लोगों से कहा कि हम तुम्हारी मूर्तियों को अल्लाह का रूप मानेंगे। कुरान में लिखा है कि क्या तुम लाट, ओज़ा, और तीसरी मनात नहीं देखते हो। इस बात के संग उसने कहा कि ये बड़ी देवी हैं जिन की सहायता से हम अल्लाह पास जाते हैं इस लिये लोगों ने मूर्तियों की पूजा किई। इस को सुन खुरैश लोग बड़े खुश हुए जब मुहम्मद ने सूरा के अन्त में कहा कि सिज़दः कर तब वे सब सिज़दः करने लगे। पर मुहम्मद ने जल्द पश्चात्ताप कर लिया और कुरान में इस बात के अन्त में यह मिलाया कि क्या तुम लोगों के लड़के और अल्लाह के केवल लड़-कियां होवें। ये केवल नाम ही हैं जिन को तुम्हारे बाप दादों ने

निकाला। इस पर उस की जाति वाले बड़े नाराज हुए क्योंकि उस ने उन को धोखा दिया इस लिये वे इस्लामियों को अधिक सताने लगे। कोई २ लोग इस कहानी को नहीं मानते हैं पर हमारी समझ में यदि ऐसा कोई काम न होता तो वे लोग अबिसिनिया से न लौटते ॥

इस के पश्चात वह मूर्तियों के विरुद्ध अधिक बोलने लगा कुरान में लिखा है कि वे सचमुच तुम्हें फिराने पर थे कि हमारे विषय में एक झूठ बात लिखो कि वे तुम्हें अपना मित्र बनावें सूरा १७ वां देखो ॥

इस के बाद वह कभी न बदला पर मूर्तियों के विषय में समझाता रहा। जब अबिसिनिया से वे लोग लौटे तब अधिक विपत्ति होने लगी। वे मुहम्मद की सलाह से फिर भाग गये। उन की वहां बहुत अच्छी दशा थी इसलिये मक्के से और लोग भी वहां गये करीब १०० मुहम्मदी वहां इकट्ठे हुए। इस पर कुरैश लोग डरने लगे और दूतों को भेज कर राजा से कहा कि इन मुहम्मदियों को हमारे हाथ में सौंप दो। राजा ने इंकार किया। इस समय तक ईसाई और मुहम्मदी साथी थे। जो लोग भागे थे उन में से कुछ लोग ईसाई हो गये। कुरैश लोगों ने अबु-तालिब के पास जाकर कहा कि आप का भतीजा हमारे देवताओं की निन्दा करता है हमें मूर्ख ठहराता है और हमारे बाप दादों के विषय में कहता है कि वे नरक में जल रहे हैं आप उसे धमकाइये नहीं तो हम उस से बदला लेवेंगे। उस ने उन्हें मीठे वचनों के द्वारा थोड़े समय के लिये शांत किया। फिर वे दुबारा आ नाराज होकर कहने लगे कि अब हम से सहा नहीं जाता है यदि आप उसे नहीं रोकेंगे तो उसका पक्ष कीजिये जिस्तें हम आप को जाने। सो उसने घबराकर अपने भतीजे को बुलाया और कहने लगा कि आप अपने को और मुझे इस भार से बचाइये मुहम्मद ने कहा कि यदि आप मेरे दहिने हाथ में सूर्य और बायें हाथ में चन्द्रमा देवें तौभी मैं न फिरूंगा जब तक अल्लाह मुझे न रोके तब तक यही काम करता रहूंगा। वह जाने लगा पर काका के दुःख के कारण रोने लगा इस पर उस के काका

ने कहा कि हे मेरे भाई के बेटे लौट आ। अब शांति से जा जो कुछ तुम कहने चाहते हो सो कहो मैं अपने जीते जी तुम्हें न छोड़ूंगा। इस के द्वारा मुहम्मद की जान बची परन्तु वह बहुत सताया गया। इस समय के करीब मक्के के दो प्रसिद्ध जन मुहम्मदी हो गये॥

हमज़ा अब्दुल मुतालिब का बेटा मुहम्मद का चाचा था एक समय हमज़ा ने किसी से मुहम्मद की निन्दा करते हुए सुना तो उस ने मुहम्मद का पक्ष किया इस समय से वह तन मन से उस की सेवा करने लगा॥

ओमर भी खुरैश बंश का था एक समय उस ने अपनी बहिन को मुहम्मद की बातों को पढ़ते हुए पाया तो गुस्से में आकर उससे झगड़ने लगा जिस से उस की बहिन को चोट आई उस के खून को देख कर उस का मन पिघल गया। ओमर भी पढ़ने लगा। पढ़ते २ उसका मन बदल गया और वह कहने लगा कि ये कैसी अच्छी बातें हैं मुझे मुहम्मद के पास ले चलो कि मैं अपना विश्वास बताऊं सो वह उसे मुहम्मद के पास ले गई। मुहम्मद डर के मारे छिपा हुआ था ओमर को देखकर लोग कांप गये पर मुहम्मद ने कहा कि उसे भीतर आने दो फिर उस के कमरबंद को पकड़ कर कहने लगा कि हे ओमर तू कब सताने को छोड़ेगा ओमर ने कहा मैं साक्षी देता हूं कि आप अल्लाह के नबी हैं आनन्द से पूर्ण होकर मुहम्मद पुकार उठा कि अल्लाह अकबर (परमेश्वर महान है) इन दोनों मनुष्यों के मुहम्मदी होने से मुहम्मद को बहुत लाभ हुआ खुरैश जाति के लोग ओमर से डरते थे इस लिये मुहम्मद के शिष्य साहस करने लगे। पर अब घरानों में झगड़ा होने लगा। जब खुरैश जाति के दूत अबिसिनिया से निष्फल लौटे तब उन्हों ने उसे सताने का एक नया उपाय निकाला। उन्हों ने आपस में बाचा बांधी कि हम बनि हाशिम के घराने वालों को जाति से बाहर निकाल देंगे और उन से व्यवहार न करेंगे। इसे लिख सभों ने अपने हस्ताक्षर कर छाप लगाकर उसे काबा की दीवाल पर चिपका दिया। इसलिये बनिहाशिम के लोग इकट्ठे होकर अबुतालिब के मुहल्ले

में रहने लगे यहां वे जोखिम से बच सक्ते थे पर खाने पीने के सामान की ओर से तकलीफ थी केवल मेले के समय जब बदला लेना मना था तब वे निकल सक्ते थे ॥

इस मेले में मुहम्मद ने बहुत उपदेश दिया परंतु उस का परिश्रम व्यर्थ हुआ। उस का काका अबुलहब उस के पास रहकर सुननेहारों से कहा करता था कि उसे मत मानो वह झूठा और लफङ्गा है इस पर सुननेहारे मुहम्मद से कहा करते थे कि आप के लोग आप को जानते हैं वे क्यों नहीं मानते हैं इस लिये मुहम्मद हर दिन निराश होकर घर लौटता था अबुलहब और मुहम्मद के बीच बड़ा बैर हो गया इसे १११ सूरा में देखो। मुहम्मद के काम के सातवें साल से बनिहाशिम के लोग ३ वर्ष तक अबुतालिब के मुहल्ले में रहे ॥

॥ सातवां अध्याय ॥

बाचा का तोड़ना, खदीजा और अबुतालिब की मृत्यु और मुहम्मद की दूसरी शादी।

एक दिन मुहम्मद ने सुना कि जिस कागज पर कुरैश लोगों ने बाचा लिखी उसे दीमक खा गई। यह सुन अबुतालिब काबा के पास गया। प्रधान लोग वहां इकट्ठे हुए थे उस ने उन्हें यह बात बताई और उन की क्रूरता के विषय में समझाया फिर वह काबा में प्रार्थना कर घर लौटा। कुरैशों के बीच कुछ लोग थे जो मुहम्मद पर दया करना चाहते थे अबुतालिब की बातें सुन साहस कर और हथियार बांधकर अबुतालिब के मुहल्ले में गये और कहा कि आप लोग यहां से अपने २ घर जाइये। थोड़े दिनों तक आराम हुआ। करीब इसी समय मुहम्मद का घराना तितर बितर हुआ था। उस की एक लड़की को छोड़ सभों की शादी हो गई थी थोड़े माह पश्चात खदीजा मर गई और आज तक मुहम्मदी लोग खदीजा की कबर देखने को जाते हैं। इस के कुछ काल पीछे अबुतालिब भी मर गया और खदीजा के पास

गाड़ा गया। उसने ४० वर्ष तक मुहम्मद की रक्षा किई थी। मुहम्मद की छोटी लड़की फातिमा की मङ्गनी अली से हुई थी ॥

अब यद्यपि इतनी विरुद्धता न थी तौभी नये शिष्य बहुत कम थे जो लोग शिष्य होते थे सो बड़े लोगों में से न थे। मुहम्मद कुछ उपाय ढूंढने लगा कि बढ़ती हो। पूर्व की ओर कोई ७० मील दूर एक ताईफ नाम शहर था। खुरैश जाति से ताईफ के लोगों की रिस्तेदारी थी पर उन के बीच में जलन थी क्योंकि काबा को छोड़ कर ताईफ नगर के लोग अपनी मूर्तियों को मानते थे। मुहम्मद ने सोचा कि जिन को मक्के के लोग नहीं मानते शायद ताईफ के लोग जलन के कारण मानेंगे सो वह जैद को लेकर वहां गया और अपना मत सुनाने लगा लेकिन १० दिन पीछे उन्हों ने उस की निंदा किई और उसे ऐसा मारा कि खून बहने लगा। जेद के सिर में घाव हुआ। वे कई मील तक भाग के एक बारी में छिप गये। यह बारी खुरैशों के दो धनवान मनुष्यों की थी। इन्हों ने मुहम्मद पर दया करके उस के पास एक ईसाई गुलाम के हाथ कुछ खाने को भेजा इस ने और एक ईसाई गुलाम के शांतिदायक वचन से मुहम्मद को साहस फिर हुआ। प्रार्थना करके उस ने मक्के का रास्ता लिया। मुहम्मद मक्के में लौटने से कुछ डरता था। नखला नाम तराई में ठहरके कई बार मक्के के लोगों से बिन्ती किई कि बिना सताये मुझे लौटने दीजिये। उस की बिन्ती किसी ने न सुनी। एक दिन उस ने उस मनुष्य से सहायता मांगी जिस ने खुरैश लोगों की बाचा तोड़ने में सहायता किई थी। इस की सहायता से मुहम्मद लौटा और काबा के काले पत्थर को चूम कर अपने घर को चला गया। उस की आशा इस समय बहुत कम थी ॥

इस विपत्ति के समय उस ने अपनी दूसरी शादी किई इस समय खदीजा को मरे करीब दो या तीन माह हुए थे। जब सौदा के साथ उस ने शादी किई तब अबुबकर की लड़की अयेशा से मंगनी किई यह इस समय ६ या ७ साल की थी। मुहम्मद अबुतालिब के यहां रहता था पर तौभी कंगाल था

मालूम नहीं कि खदीजा का धन कहां गया। उस साल के मेले के समय में मुहम्मद ने बड़ी कोशिश किई कि यात्रियों में से शिष्य बनावें। जब भीड़ मिना की तराई को जानेवाली थी तब मदीना के ७ मनुष्यों से उस की भेंट हुई और उसने उनसे पूछा कि आप किस जाति के हैं तब उन्हों ने कहा कि बनिखजरज के हैं उस ने कहा कि बैठिये मैं आप लोगों से कुछ बातें करूंगा सो उस ने उन्हें अपनी शिक्षा दिई और वे आनन्द से सुनने लगे उसने बताया कि मक्केमें मुझे कितनी तकलीफ है फिर कहा कि क्या आप लोग मुझे मदीना में ग्रहण करेंगे ? उन्हों ने कहा कि आप की शिक्षा तो अच्छी है पर आप को मदीना ले जाना मुश्किल होगा इस कारण से कि हमारी जाति में लड़ाई हो रही है हम को लौटने दीजिये ईश्वर हमारे बीच शान्ति करावे तो हम आने वाले साल के मेले के समय आप के पास आवेंगे॥

॥ आठवां अध्याय ॥

मदीना में इसलाम का प्रचारा जाना।

मदीना शहर का पुराना नाम यथरेब था वह उस रास्ते पर बना हुआ था जो मक्के से सूरिया को गया है पुराने समय में कुछ यहूदी जातियों ने पालस्तीन से भाग कर उसे बसाया था पीछे बनि औस और बनि खजरज दो अरबी जातियों ने यहूदियों को शहर से निकाल दिया। यहूदी लोगों ने शहर के बाहर अपने लिये गढ़ों को बनाया॥

मदीना में इस समय इन दो अर्बी जातियों में प्रधानता के लिये लड़ाई हो रही थी यहूदी लोग कभी२ एक और कभी२ दूसरे का पक्ष करते थे यहूदियों की सख्या बहुत थी और वहां के लोग इन के विषय में बहुत कुछ जानते थे यहूदियों ने कहा था कि हमारा एक नबी आने वाला है सो यह आशा मदीना के सब लोगों के मन में थी और मुहम्मद इस बात को पकड़कर कहा करता था कि मैं वही हूं। वह आनेवाले मेले के लिये ठहरा

रहा पर उस के मन में शङ्का था कि मदीना के लोग आवेंगे वा नहीं जब मेला भरा तब मदीना के १२ मनुष्य दोनों जातियों के मुहम्मद को ग्रहण करने के लिये आये। यह बात सन ६२१ में हुई। इन्हों ने किरिया खाई कि हम एक ही अल्लाह को मानेंगे हम न चोरी करेंगे, न व्यभिचार करेंगे और न बच्चों को घात करेंगे झूठा दोष किसी पर न लगावेंगे और नबी की वातों को कभी न टालेंगे। फिर मुहम्मद ने यह कहा कि स्वर्ग में तुम्हें उत्तम जगह मिलेगी। इस बाचा को अक्बा की पहिली बाचा कहते हैं यह नाम उस स्थान का है जहां बाचा बांधी गई थी। यह बाचा उन्हों ने आधी रात को अन्धेरे में बांधी थी। ये १२ जन मदीना में लौटकर इसलाम मत को प्रचारने लगे घर २ और जाति २ के लोग मानने लगे। यहूदी लोग बड़ा आश्चर्य करते थे। जिन्हें सैकड़ों वर्ष से यहूदी लोग मूर्तियों के विषय में समझाते रहे सो एक दम अपनी मूर्तियों को तोड़ कर फेंकने लगे इस का कारण यह था कि यहूदी धर्म्म अन्य देशियों का धर्म्म था और इसलामी धर्म स्वदेशी था॥

मदीना में इतने मुहम्मदी हुए कि उन के सिखलानेहारे बस न थे इस लिये उन्हों ने मुहम्मद के पास एक चिट्ठी भेज कर एक जवान शिक्षक को बुलाया जब वह मदीना में पहुंचा तब उस ने देखा कि लोग प्रार्थना और कुरान पढ़ने को इकट्ठा हुआ करते हैं इस समय से मदीना की दोनों जाति इकट्ठी होकर इबादत करती थी॥

॥ नौवां अध्याय ॥

मुहम्मद का और एक साल मक्का में रहना।

सन् ६२१

~~मदीना~~ मक्के में हाल कुछ बदला नहीं। मुहम्मद उपदेश करता रहा वल्कि अधिक बोलने लगा लम्बी लम्बी कहानियां बोलने लगा। ये कहानियां मूसा की किताबों से, यहूदियों की तलमूद

नाम किताब से और अरबी लोगों की कहानियों से बहुत करके मिलती हैं। वे विश्वासियों को शान्ति देने के और खुरैशों को डांटने के लिये बोली गईं। उन में कहा जाता है कि आने वाले संसार में और इस संसार में भी ईश्वर का क्रोध दुष्टों पर भड़केगा। इन कहानियों में मुहम्मद की भाषा बहुत ही सुन्दर है। मुहम्मद ने कहा कि क़ुरान की भाषा एक आश्चर्य कर्म है। उस ने अपने बैरियों से कहा कि इन सूराओं के समान तुम एक भी सूरा नहीं बोल सकते हो। इन की एक एक आयत मेरे नबी होने का चिन्ह है। खुरैशों ने उस से बदला लेने के लिये कहा कि वह एक बावला नबी है जिस को किसी अन्य-देशी ने सिखाया है॥

जब मुहम्मद को मदीना में जाने की आशा हुई तब वह उत्तर की ओर के राज्यों की कुछ चिन्ता करने लगा और एक बार यूनानी राज्य के विषय में नबुअत किई। फारसी लोगों ने यूनानी लोगों पर जय पाई थी और उस समय फारसियों की सेना कान्सटेन्टीनोपल शहर के पास थी। मुहम्मद ने कहा कि यूनानी लोग अन्त में जय पावेंगे। और ऐसा ही हुआ। थोड़े दिनों में यूनानियों के राजा ने फारसियों को भगा दिया॥

मालूम होता है कि करीब इस समय मुहम्मद ने या तो ईसाई गुलामों से या किसी पुस्तक से यीशु के जीवन चरित्र के विषय में कुछ सीखा। उस ने ठीक नहीं सीखा क्योंकि क़ुरान में जो बातें यीशु के विषय में लिखी हुई हैं उन में ऐसी कहा-नियां मिलाई गई हैं जो अयोग्य हैं। यीशु के विषय में मुहम्मद ज़ोर से सिखाता रहा कि यह न ईश्वर का पुत्र है न मर गया और न ईश्वर में पिता पुत्र पवित्र आत्मा का भेद है॥

मक्के में उस के काम से कुछ भी फल न हुआ तौभी वह काम करता रहा। वह यरूशलीम का अपने जीते जी बड़ा आदर करता था और जब तक मदीना में उस की यहूदियों से लड़ाई न हुई तब तक वह सिखाता रहा कि वह किबला (वह स्थान जिस की ओर मुंह करके प्रार्थना करना चाहिये) है॥

मुहम्मद ने इस समय एक स्वप्न देखा। उस ने समझा कि जब्राएल मुझे उड़ते हुए घोड़े पर चढ़ा कर यरुशलीम ले गया वहां पुराने नबियों की सभा लगी थी। फिर वह उड़ते २ पहिले अस्मान फिर दूसरे और इसी प्रकार सातवें आस्मान तक उड़ गया वहां उसने अल्लाह को साक्षात देखा और अल्लाह ने उस से कहा कि अपने लोगों को आज्ञा दो कि वे दिन में ५ बार प्रार्थना करें। भोर होते ही वह अपना स्वप्न लोगों से कहने लगा। जो अविश्वासी थे सो उस का ठट्ठा करने लगे और बिश्वासियों का बिश्वास यहां तक डुलाया गया कि कोई २ मुकर गये पर अबुबकर कहने लगा कि इस में कुछ शक्क नहीं वह अवश्य गया। एक कहानी है कि जिस चटान पर ओमर की मसजिद बनी है उस चटान में मुहम्मद के पैर का चिन्ह है॥

॥ दसवां अध्याय ॥

अकबा की दूसरी बाचा और उस का मदीना को भागना।
सन् ई० ६२२। उस की अवस्था ५२ या ५३ बर्ष की थी।

मदीना में इसलाम की अधिक उन्नति हुई पर मक्के का वही हाल रहा। मेले का समय फिर आया मुहम्मद ने मदीना के लोगों के आने के लिये अधिक तैयारी किई पर वह डरता था कि यदि खुरैश लोगों को मालूम होवे कि मुहम्मद अन्य जातियों को ग्रहण करता है तो वे तलवार से लड़ेंगे। मुहम्मद की भेंट मदीना के लोगों से रात के समय फिर पहिले के समान हुई। १२ बजे रात को वह अपने काका अब्बास को लेकर ठहराये हुए स्थान में गया डर के मारे मक्के के इसलामी कोई न आये थे और इन दोनों के सिवाय किसी को मालूम भी न था। यह बात मुहम्मद ने अपने लोगों को न बताई उस ने सोचा कि अच्छा है कि किसी को मालूम न होवे। मदीना से ७३ पुरुष और २ स्त्रियां आई थीं अब्बास ने उन से कहा कि हम मुहम्मद की रक्षा करने को तैयार हैं पर वह आप लोगों के बीच में रहना चाहता है इस लिये अच्छी तरह इस बात की जांच

करो यदि तुम लोग इस की रक्षा कर सक्के हो तो भला नहीं तो जाने दो। इस पर वेरा नाम मदीना के अध्यक्ष ने कहा कि हम ने विचार करके ठाना है कि हमारी जान और सारा सामान नबीका ही है अब मुहम्मद ही कहे। मुहम्मद ने उन्हें समझाया और अन्त में वे बाचा बांधने लगे बात चीत की अधिक आवाज होने लगी इस लिये अब्बास ने कहा कि सब चुप रहें और मुहम्मद का हाथ पकड़कर कहा कि आप प्रधान लोगों से बाचा बांधिये। वेरा ने कहा कि हे मुहम्मद हाथ बढ़ा और उन्हों ने हाथ ठोंक कर बाचा बांधी इसी प्रकार एक २ करके सभों ने किया और मुहम्मद ने उन में से १२ जनों को चुन कर कहा कि जिस प्रकार यीशु ने १२ प्रेरितों को चुना उसी प्रकार मैं ने तुम बारहों को चुना है। इतने में किसी के आने की आवाज सुन कर सब अपनी २ जगह को भाग गये॥

खुरैश लोगों को किसी ने बताया कि मुहम्मद से मदीना के लोग मिले थे। प्रातःकाल खुरैश लोग ने आकर मदीना के लोगों से पूछा कि क्या हुआ पर लोगों बहुत करके नहीं जानते थे और जो लोग जानते थे सो बात को छिपाते थे मदीना के लोग चले गये पर शाम तक खुरैशों को यह बात जो हुई थी सो मालूम हो गई इस लिये खुरैश लोगों ने मदीना वालों का पीछा किया उन्हों ने दो को पकड़ा पर पीछे छोड़ दिया। खुरैश लोगों को यह भी मालूम हुआ कि मुहम्मद भागने वाला है इस लिये वे और भी नाराज हुए वे नहीं चाहते थे कि मुहम्मद और उस के लोग हमारे हाथ से बच जावें उन्हों ने और भी अधिक दुःख दिया और मुहम्मदियों को बन्द करना चाहा जिस्तें वे मदीना को न भागने पावें। इस के कुछ दिन पीछे मुहम्मद ने अपने शिष्यों से कहा कि मदीना में भाग जाओ क्योंकि अल्लाह ने वहां हमें भाई बन्धु दिया है और वहां एक शरणस्थान है सो वे छिप कर एक २ दो २ ऊंटों पर व पैदल भागने लगे। मदीना मक्के से २५० मील दूर है दो माह के भीतर प्रायः मुहम्मद के सब शिष्य मदीना को भाग गये कोई २ थे जो किसी विशेष कारण से न भागे जो भागे सो १५० जन थे मदीना वालों ने इन्हें आनन्द

से ग्रहण किया और अपने २ घरों में उन की पहुनाई किई॥

मक्के के लोग यह देख कर आश्चर्य करते थे निदान मुहम्मद और अबुबकर के घरानों को छोड़ कोई मुहम्मदी मक्के में न रहा अबूबकर जल्द भागने चाहता था और दो तेज चलने वाले ऊटों को तैयार किया पर मुहम्मद ने कहा कि अभी भागने का समय अच्छा नहीं है। खुरैश लोग दुबधा में थे कि मुहम्मद क्या करने वाला है सो उन्हों ने एक सभा करके बिचार किया कि उसे मार डालें या शहर से निकाल दें पर उन्हों ने कुछ न ठहराया केवल इतना किया कि एक पंचायत उस के पास भेजी। जब वे उस के घर पर गये तब क्या देखा कि वह भाग गया है धोखा देने के लिये उस ने अपना लाल कम्बल अली को ओढ़ा दिया। शाम के समय वे एक खिड़की से निकल कर बाहर पहुंचे पहिले दक्षिण की ओर गये। वहां एक पहाड़ की गुफा में छिप गये और कुछ समय तक ठहरे क्योंकि वे जानते थे कि खुरैश लोग उत्तर की ओर मदीना के रास्ते में पीछा करेंगे। मक्के में इस समय बड़ी गड़बड़ हो रही थी जब लोगों ने अली से पूछा कि मुहम्मद कहां है तब उस ने कहा क्या मैं उस का रखवाला हूं ? तुम लोगों ने उस से जाने को कहा इस लिये वह चला गया है। उन्हों ने उसे चारों ओर ढूंढ़ा पर न पाया। मक्के के लोग खुश थे कि गड़बड़ करने वाला चला गया है। इस गुफा के विषय में बहुत सी कहानियां हैं॥

इस गुफा के मुंह पर मकड़ी ने अपना जाला डाला था जिस से उन के ढूंढ़ने हारे उन्हें न देख सकें। जब मक्के में गड़बड़ बन्द हुई तब उन्हों ने सोचा कि अब एक दम यहां से भागना चाहिये हर एक रात अबुबकर का नौकर उन के लिये दूध और खाना लाया करता था और डर था कि इसे देख कर खुरैश लोगों को मालूम न हो जावे। तीसरे दिन ऊंट वाले उन के पास ऊंटों को लाये। चौथे दिन की रात को वे वहां से भाग गये यह सन् ६२२ की जून २५ तारीख को हुआ यह हिजरी का पहिला साल है अली ३ दिन मक्के में रह कर चला गया॥

॥ ग्यारहवां अध्याय ॥

मदीना में मुहम्मद का पहुंचना, मसजिद को बनाना, सन ६२२ के जून से सन ६२३ की जनवरी तक, उस की अवस्था ५३ साल, हिजरी का पहिला साल।

कई दिन से मदीना के लोग मुहम्मद की बाट जोहते थे क्योंकि उन्हें मालूम हो गया था कि वह मक्के से निकल गया है वे लोग उस का गुफा में छिपना नहीं जानते थे सो वे लोग सोचते थे कि वह जल्द आवेगा और हर एक दिन ऊंचे स्थान से उसे देखते थे। एक दिन एक यहूदी ने उसे आते हुए देखा और सब लोग उस से मिलने को निकले वहां के लोगों ने उसे प्रणाम किया और उस ने आदर और गम्भीरता से उन के साथ बातें किई उस ने कहा कि मेल मिलाप की बातें करने से अपने को आनन्दित दिखलाना, कङ्गालों को दान देना, रिश्तेदारी का बन्धन पक्का करना और जब दूसरे लोग सोते हैं तब तुम प्रार्थना में लगे रहो इस प्रकार के काम करने से तुम बिहिश्त को जाने पाओगे। जिस जगह वह उतरा था वह स्थान कोबा कहलाता है। इस स्थान में वह अबुबकर के साथ अली के आने तक ठहरा। यहां उस ने अपने लोगों के लिये एक प्रार्थना घर की बुनियाद डाली इसे अल्लाह के डर की मसजिद कहते हैं। वह कोबा में सोमवार के दिन पहुंचा था शुक्रवार के सवेरे अपने ऊंट अलकसवा पर चढ़ अबुबकर के साथ शहर में गया। रास्ते में एक जगह ठहर के उस ने करीब १०० शिष्यों के साथ इबादत किई। प्रार्थना के पीछे उस ने एक व्याख्यान सुनाया जिस में उस ने अपने मत की बड़ाई करके उसे मानने की आज्ञा दिई। इस समय से शुक्रवार मुहम्मदियों में इबादत का दिन ठहराया गया है। इस जगह में एक मसजिद बनाई गई जिसे मसजिद अलजुम्मा कहते हैं। यहां से फिर आगे बढ़ा। बनि खज़रज़ के लोगों से उस की कुछ रिश्तेदारी थी इस लिये उस ने शहर में उन्हें कहला भेजा कि तुम लोग मुझे लेने को आओ पर भेजने की कुछ आवश्यकता न थी क्योंकि मदीना के सब लोग उसे आनन्द से ग्रहण करने को

निकले थे। उन में से हर एक चाहता था कि मुहम्मद हमारे मुहल्ले में रहे सो ऊंट की लगाम को पकड़ कर ले जाने लगे लेकिन मुहम्मद डरता था कि उन के बीच कहीं झगडा न होवे और जिस घर वाले के पास मैं जाऊंगा उस के बैरी मेरे वैरी होंगे सो उस ने कहा कि ऊंट को छोड़ दो वह मेरे लिये जगह चुनेगी। अलकसवा पूर्व्वी ओर जाकर एक आंगन में थक कर वैठ गई। सो मुहम्मद वहां अबूअयूब के घर में जाकर रहने लगा। जब तक उस के लिये एक घर न बन गया तब तक उसी घर में रहा यान वह ७ माह तक वहां रहा ॥

जिस स्थान पर अलकसवा ठहरी उस जगह को अबुबकर ने मुहम्मद के लिये मोल लेकर वहां एक मसजिद बनाई। उस की एक ओर दो कोठरियां बनाईं एक सौदा और एक अयेशा के लिये। यह जगह पहिले कबरस्थान थी इस कारण उसे साफ करना पड़ा। उसके साफ होने से पीछे मुहम्मद ने अपने घराने के लोगों को बुलाने के लिये जैद को भेजा। मक्के के लोगों ने उन के लाने में कुछ दुःख न दिया अबुबकर का घराना भी उन के साथ आया। मसजिद के बनाने में मदीना के सब मुहम्मदियों ने हाथ लगाया। इसी स्थान में आज कल एक मसजिद है। उसकी लम्बाई १०० हाथ की थी। किबला अभी तक यरूशलीम था इस कारण मुहम्मद इबादत के समय उस की तरफ मुंह करके प्रार्थना करता था और उस के सब अनुयायी उस के समान करते थे फिर मुंह फिरा कर उन्हें व्याख्यान दिया करता था। मसजिद के आंगन की एक ओर मुहम्मद की स्त्रियों और लड़कियों के लिये कोठरिया थीं और उस के मुख्य साथी लोगों ने उस के पास रहने के लिये आंगन की दूसरी ओर मकान बनाये थे। यह मसजिद बहुत शोभायमान न थी तौभी इसलाम के इतिहास में बहुत प्रसिद्ध थी। मुहम्मद और उसके साथी अपना समय इस में बिताते थे। यही मसजिद है जिसमें पहिले पहिल इबादत किई गई इसी में मदीना के सब इसलामी प्रत्येक शुक्रवार को इकट्ठे हुआ करते थे इसी में रहकर मुहम्मद ने देशों के जीतने के उपाय का विचार किया। यहां वे लोग जो लड़ाई

में जीते गये खड़े किये जाते थे यहीं से उस ने वे आज्ञाएं दीं जो सारे अरब देश में चलती थीं इसी में वह मर गया और इसी में अबुबकर और ओमर उस के साथ गाड़े गये ॥

मसजिद के बनाने के कुछ दिन बाद उस की शादी अयेशा के साथ हुई इस समय से उस की कई स्त्रियां थीं उस की कोई निज की कोठरी न थी परन्तु एक २ करके अपनी स्त्रियों की कोठरी में रहा करता था वह अयेशा को सब से अधिक प्यार करता था ॥

॥ बारहवां अध्याय ॥

मदीना में कई पक्ष । हिजरी का दूसरा साल । सन् ई० ६२३ ।

थोड़े समय के पीछे मदीना के लोग मुहम्मद को कम चाहने लगे उन में चार पक्ष हो गये यथाः— (१) मुहाजरीन । ये लोग उस के साथ मक्के से भाग कर आये थे। (२) अन्सार । ये लोग मदीना में मुहम्मदी हुए थे। (३) वे थे जो मुहम्मदी नहीं हुए थे। (४) वे लोग जो यहूदी थे ॥

तीसरे पक्ष के लोग पहिले उस के बैरी न थे और वे लोग मानते थे कि जो लोग मुहम्मदी होवें सो उसके अधिकार में हैं पर अब उस के अधिकार की बढ़ती को देखकर वे जलन करने लगे। इन का अगुवा अब्दुल्ला इब्न ओवे था। जिस समय मुहम्मद मदीना में आया उस समय यह राजा होनेवाला था पर मुहम्मद के आने के कारण वह रोका गया। सो मुहम्मद इस से और इस के साथियों से इतना डरता था कि उन के सब काम और बातों को सुनने के लिये अपने भेदियों को भेजता था। उस ने उन्हें कुरान में श्राप दिया ॥

मदीना में यहूदियों के तीन मुहल्ले थे आरंभ से मुहम्मद मानता था कि यहूदियों की धर्म्मपुस्तक सच्ची है वह बहुत चाहता था कि यहूदी लोग हमारे मित्र होकर हमें मानें इस कारण मुहम्मद ने उन से संधि किई कि जब हम दूसरे पर या

दूसरे इस पर चढ़ाई करें तब आपस में एक दूसरे की सहायता देवें। कुछ समय तक मित्रता बनी रही पर कुछ दिनों में मालूम हुआ कि यहूदी धर्म्म और है और इसलामी और है इस कारण उनका मेल नहीं हो सक्ता है। उसने अपने नबी होने का प्रमाण पुराने नियम से दिया पर न कहा कि मैं वह मसीह हूं जिस की बाट यहूदी लोग जोहते हैं वह कहता था कि यीशु, मसीह था जिसको यहूदियों के बापदादों ने मार डाला है पर वह कहता था कि पुराने नियम में एक दूसरे नबीके आनेकी नबूवत है जो यीशु से बड़ा होवेगा इस बात को यहूदी लोग अच्छी तरह जानते हैं पर अपनी धर्म्मपुस्तक को बदल कर इसे छिपाते हैं। यहूदी लोग अपने धर्म्म में बने रहे। वे कहते थे कि ईश्वर की प्रतिज्ञा इस्माएल के बंश के लिये नहीं पर इजहाक के सन्तानों के लिये है इस कारण मुहम्मद की आशा टूट गई। यहूदियों में कुछ बिश्वासघाती थे जो कहते थे कि मुहम्मद का कहना ठीक है। मुहम्मद यहूदियों की बदनामी करने लगा। इस समय कुरान का जो भाग लिखा गया सो यहूदियों की बुराई से भरा हुआ है ॥

॥ तेरहवां अध्याय ॥

दस्तूर और रीतियां।

मुहम्मदी दीन में प्रति दिन ५ बार प्रार्थना करना होता है और वही बातें जो एक समय बोलते हैं उन्हों को बार २ कहते हैं उठना बैठना, झुकना और कुरान से ली हुई कुछ बातें कहना यही नमाज पढ़ना है। दिन को वे मसीजद में नमाज पढ़ते थे परइस की कुछ आवश्यक्ता नहीं थी शुक्रवार दो पहर को सब मुहम्मदी इबादत करने के लिये मसजिद में जमा होते थे। यद्यपि मुहम्मदी लोग शुक्रवार को मानते थे तौभी उन्हों ने उस को पवित्र न किया वह यहूदियों के विश्रामवार के समान न था। अब तक मुहम्मद ने यहूदियों और ईसाइयों की रीतियां मना न किई थीं ॥

ईसाई बिना अपने धर्म्म को छोड़े मुहम्मदी हो सक्ता था वैसे ही यहूदियों के विषय में था अनुमान है कि उस समय कुछ यहूदी मसजिद और सभा घर दोनों में आराधना करने को जाया करते थे। मुहम्मद के मदीना में पहुंचने के डेढ़ साल बाद यह सब बदल गया उस समय से अच्छे यहूदी मुहम्मदियों की इबादत में शामिल नहीं होते थे। मुहम्मद ने यरूशलीम को बदल कर मक्के को क़िबला ठहराया कुरान में लिखा है कि "हम तुझे उस क़िबला की ओर फिरावेंगे जो तुम्हे अच्छा लगे मक्के के पवित्र मंदिर की ओर अपना मुंह करना" अब से इसलामी धर्म्म जो यहूदी और ईसाई धर्म्म की ओर झुकता था बदल के उनका विरोधी हो गया। क़िबला का बदलना यहूदियों को बहुत बुरा लगा इस लिये नहीं कि मुहम्मद ने उन को छोड़ा था पर इस लिये कि उस ने एक मूर्त्ति से भरे हुए मंदिर को चुना॥

इस समय मुहम्मदियों को नमाज के लिये बुलाने की एक रीति ठहराई गई। मुहम्मद ने अपने हब्शी नौकर बिलाल से कहा कि गुम्मट पर चढ़के प्रातः काल लोगों को नमाज के लिये बुलाया करो और बुलाने के लिये कछ शब्द भी ठहराये जिन को उस समय से लेकर आज तक वे मसजिदों में बड़े सबेरे बोलते हैं इस पुकार को अज़ान कहते हैं। फिर इस समय उस ने एक रोजा भी ठहराया। अब तक मुहम्मद यहूदियों के निस्तार पर्व को मानता था पर अब से रमजान का पूरा माह उस के स्थान में ठहराया गया। पहिले उस ने यहूदियों के समान ठहराया कि आदमी माह भर दिन और रात उपवास करे पर पीछे ठहराया कि सुबह से शाम तक उपवास करना है। रात भर मनमाना खा सक्ते हैं। यात्रियों और बीमारों के लिये उस ने ठहराया कि उन्हें पूरी रीति से रोजा न मानना पड़ेगा॥

ये रोजा जाड़े के दिनों में स्थापित किये गये थे पर मुहम्मदियों के साल छोटे होते हैं इस कारण यह महीना हर साल कुछ पहिले आता है और ३३ वर्षके पीछे फिर उसी समय में आ जाता है। जब ये रोजा गरमी के दिनों में पड़ते हैं तब उन को

बड़ी तकलीफ होती है। शौअल माह में चांद के दीखने पर ये रोजा बन्द हो जाते हैं। इस समय एक त्योहार होता है जिसे ईद उल फित्र (उपवास का तोड़ना) कहते हैं। फिर एक और त्योहार ठहराया गया जिसे बलिदान का दिन कहते हैं। मक्के के मेले के अन्त में मिना की तराई में पुराने समय से जानवरों का काटना चला आया था सो मुहम्मद ने मदीना में की पहिली साल में उस के लिये कुछ न किया परन्तु उस के बदले यहूदियों के प्रायश्चित के दिन को बलिदान चढ़ाया। जब वह यहूदियों से नाराज हो गया तब इसे बदल कर जिस दिन को मिना की तराई में जानवर काटे जाते हैं वही दिन मदीना में भी स्थापन किया तौभी यहूदियों का इतना अंश रहा कि दो बकरे काटे जाते थे एक मुहम्मद और उस के घराने के लिये और एक इतर मुहम्मदियों के लिये॥

पहिले मुहम्मद एक खम्भे के पास खड़ा होकर प्रार्थना करता था। यह देख के कि वह खड़े रहने से थक जाता है एक जन ने बैठक बनाने को कहा। इस से मुहम्मद बहुत खुश हुआ। सो उस जन ने बबूल की लकड़ी से एक कुर्सी बनाई और तीन सीढ़ियों के ऊपर उसे रख दिया सो मुहम्मद उस पर बैठा करता था। यह कुर्सी मसजिद की दक्षिण और दीवाल के पास रक्खी गई। जिस खम्भे से वह टिक कर खड़ा होता था वह उस सीढ़ी के नीचे गाड़ दिया गया॥

॥ चौदवां अध्याय ॥

मक्के से झगड़ा और लड़ने की आज्ञा।

हिजरी के पीछे ६ या ७ माह तक मदीना का मक्के के लोगों के साथ व्यवहार न हुआ इस का कारण यह है कि पहिले खुरैश लोगों ने उन का पीछा न किया। दूसरे मुहम्मद का मन मदीना में यहां तक लगा कि उस ने मक्के का कुछ भी विचार न किया। परन्तु आठ माह पीछे जाड़े के दिनों में मक्के से सुरिया को व्यापारी लोग जाने लगे। ये लोग बहुत माल और धन

लेकर जाया करते थे। उन का रास्ता मदीना के पास से जाता था इसलिये मुहम्मद उन्हें देख सक्ता था और यदि चाहता तो उन्हें लूट भी सक्ता था। उस साल उस ने लूट के लिये लोगों को तीनवार भेजा पर उन का सब काम निष्फल हुआ। दूसरे साल में वह आप ही अगुआ होकर गया और तीन वार चढ़ाई किई पर इस समय भी कुछ न बना। इस समय खास मदीना के लोग भी लूटने के लिये पल्टन में शामिल हुए। मक्के के लोगों ने इस वात को पहिचानकर व्यापारियों के साथ पल्टन भेजी। करीव इस समय खुरेश लोगों का प्रधान अवुसोफियां बहुत माल और धन लेकर सुरिया को जाता था। इसके विषय में कुछ माह पीछे वड़ा संग्राम हुआ॥

उस साल मुहम्मद ने जाड़े के दिनों में आठ जनों को कुछ कागज देकर दक्षिण की ओर भेजा और उन से कहा कि जव तुम अमुक स्थान पर पहुंचो तब कागज खोल कर मेरी आज्ञा पढ़ो। सो उन्हों ने वहां पहुंचकर यह पढ़ा कि नखला तक आगे वढ़ के मक्के के व्यापारियों को लूटो। सो उन्हें थोड़ी देर ठहरना पड़ा और खुरैश के ४ जन वहुत माल लिये हुए आये सो वे अन्यदेशियों को देखकर डर गये। यात्रा करने के माह का यह पिछला दिन था इस कारण अर्वियों में लड़ाई करना मना था। धोखा देने के लिये मुहम्मद के दूतों ने अपने सिर मुड़वाये थे जिस से दूसरे लोग जाने कि ये यात्री हैं। सो इन को देखकर मक्के के लोगों का डर मिट गया। मुहम्मद के दूत दुवधा में थे क्योंकि इस दिन में लड़ाई करना मना था और यदि कल तक ठहरते हैं तो लोग माल सहित निकल जावेंगे। इतने में तीर चला कर एक ने एक व्यापारी को मार डाला और वे उन पर चढ़ गये। एक व्यापारी भाग कर मक्के में पहुंच गया। बाकी को पकड़कर वे उन्हें माल सहित मदीना ले गये। जब मदीना में पहुंचे तब मुहम्मद उन पर नाराज हुआ क्योंकि उन्हों ने यात्रा करने के माह में लड़ाई किई इस कारण उस ने लूट को नहीं बांटा पर उस को अलग रख दिया। कुछ दिन पीछे उसे दर्शन में यह वचन मिला कि

पवित्र माह में लड़ना अच्छा नहीं पर इस से अधिक बुरा अल्लाह के सेवकों को घर से निकाल देना है। सूरा २:२१७। यह बताकर उस ने लूट अपने दूतों को बांट दिई। उन दो कैदियों के मित्रों ने मुहम्मद को उन के छोड़ देने के लिये बहुत रुपया दिया॥

मुहम्मदी इतिहास रचक इस बात को बड़ी समझते हैं। एक कहता है कि यह पहिला समय है जिस में मुहम्मद की आज्ञा से मनुष्य मारा गया और यही पहिले बन्धुए थे और यही पहिली लूट है। कुछ दिनों तक मक्के के लोगों ने उन से कुछ बदला न लिया पर बिना कारण एक मनुष्य का लोहू बहाया गया था अबियों के बीच लोहू बहाने का बदला लोहू बहाना ही लिया जाता था। मदीना के लोग जानते थे कि बदला अवश्य लिया जावेगा इसलिये लड़ाई की तैयारी करने लगे। इस समय मुहम्मद ने मदीना के लोगों को लड़ाई के लिये उसकाने को कुरान में आज्ञा दिई सूरा २२:४१, २:१९१। ये पद केवल मुहम्मदियों के लिये बोले गये पर जब मुहम्मद बेद्र को गया तब मदीना के हर प्रकार के लोग उस की सेना में भरती हुए। मुहम्मद की इच्छा यह थी कि व्यापारियों को लूटूं और मदीना के लोग आशा करते थे कि हम लूट का भाग पावेंगे॥

॥ पन्द्रहवां अध्याय ॥

बेद्र की लड़ाई।

बताया गया है कि अबुसोफियां व्यापार करने के लिये सुरिया को गया था और मुहम्मद ने मन में ठाना था कि इसे लौटते समय अवश्य लूटूंगा। सो उस ने उस की खबर लेने को भेदियों को भेजा। यह बात अबुसोफियां को मालूम हो गई। इस लिये मक्के को दूत भेज कर सहायता मांगी और आप दूसरे मार्ग से आगे बढ़ा। भेदियों ने देरी की सो मुहम्मद अधीर होकर लोगों से कहने लगा कि कुरैश बहुत धन लिये हुए आ रहे हैं हम निकलें क्या जाने अल्लाह उन्हें हमारे हाथ में

सौंपेगा। मदीना के लोग बड़े आनन्द से निकल कर उसकी सेना में मिल गये। इस सेना में ३०५ जन थे जिन में से ८० मुहाजरीन थे। उन के पास दो घोड़े और ७० ऊंट थे। उनका सोच था कि वेद्र में अबुसोफियां को पकड़ें। दो भेदिये आगे भेजे गये। उन्हों ने वेद्र की दो स्त्रियों से पूछ कर यह खबर पाई कि वह एक या दो दिन में आवेगा। इतने में अबुसोफियां अपने लोगों को पीछे छोड़ अकेला वेद्र को आया। वहां उसे मुहम्मद के भेदियों की खबर मिली इस कारण वह जल्द लौटा। और अपने लोगों को बहुत ही जल्द चलाकर इस रास्ते को छोड़ समुद्र के किनारे २ मुहम्मद के पहुंचने से पहिले निकल गया। यह सुन के कि मक्के से सेना निकली है उसने उनके पास यह खबर भेजी कि अब डर नहीं है तुम लौट सक्ते हो॥

जब मक्के के लोगों को मालूम हुआ कि मुहम्मद अबुसोफियां के माल को लूटना चाहता है तब वे बड़े नाराज होकर उस से लड़ने के लिये सेना तैयार कर निकले। जब आधे रास्ता में पहुंचे तब दूत ने खबर दिई कि अब कुछ डर नहीं है इसलिये वे आपस में बिवाद करने लगे कि क्या करना चाहिये क्या लौटें अथवा मुहम्मद से बदला लेवें। अन्त में यह ठहराया गया कि बदला लेना चाहिये। सो दो चार जनों को छोड़ कर सब बदला लेने के लिये आगे बढ़े। जब मुहम्मद वेद्र के निकट पहुंचा था तब नहीं जानता था कि अबुसोफियां आगे चला गया है पर जब वेद्र में गया तब उसे बताया गया कि अबुसोफियां की सहायता के लिये एक सेना आ रही है सो एक दम एक सभा बैठ कर विचार करने लगी। सब की सलाह यह हुई कि आगे बढ़ना चाहिये। मुहम्मद ने कहा कि अल्लाह हम पर आशीष देवेगा क्योंकि उस ने मुझ से कहा है कि या तो लूट या सेना उन में से एक अवश्य मिलेगा। खबर लेने के लिये आगे अली भेजा गया। उस ने एक कुए के पास दो जनों को पाया। उन से यह मालूम हुआ कि मक्के की सेना में १००० सिपाही हैं। यह सुन मुहम्मदी कुछ घबराये और मुहम्मद ने अपनी सेना के आराम के लिये बन्दोबस्त किया। रात को वे

आराम से सोये। सवेरे उसने उनके तीन झुंड कर उन्हें लड़ाई के लिये तैयार किया। खुरैश भी तैयारी कर रहे थे पर उन के बीच झगड़ा था। उनमें से एक कहता था कि बैरी थोड़े तो हैं पर उन के ऊंटों पर मौत सवार है क्योंकि बिना हम में से किसी को मारे वे न मरेंगे। इस को सुनकर लोग कुछ डरने लगे अबुजहल ने उन को समझाया कि वे लड़ने को तैयार होवें। जब सब कुछ तैयार था तब खुरैश लोगों ने आगे बढ़ कर चढ़ाई किई। इन्हें देख कर मुहम्मद और अबुबकर ने एक छप्पर में जाकर प्रार्थना किई। खुरैश आगे बढ़े पर मदीना के लोग स्थिर रहे। आज्ञा थी कि जब तक हुक्म न मिले तब तक कोई कुछ न करे; पहिले दो २ जन लड़ने लगे। कुछ समय के बाद खुरैश लोगों के बीर मार डाले गये और दोनों सेनाएं मिलकर लड़ने लगी। खुरैश लोगों का मन लड़ने में न था। यदि वे जय भी पाते तौभी उन्हें कुछ न मिलता पर मदीना वाले खूब उसकाये गये थे। लड़ाई के समय आंधी आई और मुहम्मद ने पुकारा कि जब्राएल १००० दूतों को लेकर हमारी सहायता करने को आया है। इसी प्रकार दूसरी और तीसरी आंधी आई जिनको देख मुहम्मद ने कहा कि मीकाएल और सराफील आये हैं। फिर लड़ाई के बीच में मुहम्मद ने एक मुट्ठी कंकर उठाकर खुरैश लोगों की ओर फेंका और कहा कि घबराहट तुम को पकड़े। इस पर खुरैश लोग घबड़ाकर भाग गये॥

जब मुहम्मद की सेना ने उन का पीछा किया तब वे अपने जानवरों हथियारों और दूसरे सामानों को छोड़कर भाग गये। इन की सेना के ४९ जन मार डाले गये और इतने ही कैद किये गये। मुहम्मद की सेना में से केवल १४ जन मारे गये। अबुजहल घायल होकर पड़ा था सो अब्दुल्ला उस का सिर काट कर मुहम्मद के पास लाया। वह इसे देखकर बड़ा खुश हुआ। मुहम्मदी लोगों ने एक गढ़ा खोद कर उस में मक्के के मृतकों को दफना दिया। मुहम्मद कबर के पास खड़ा होकर पुकारने लगा कि अब तुम्हें मालूम हो गया कि अल्लाह की बात सच है। हाय उन पर जो अल्लाह और उस के नबी को ग्रहण नहीं करते

हैं। एक जो पास खड़ा था बोला क्या आप मृतकों से बातें करते हैं? मुहम्मद ने उत्तर दिया कि हां उन्हें मालूम हो गया कि अल्लाह का वचन पूरा हुआ। मदीना वाले अपने मृतकों और घायल लोगों को शहर में ले गये॥

इतने में उन के बीच लूट के बांटने के विषय झगड़ा होने लगा पर मुहम्मद दर्शन पाकर उन से कहने लगा कि अल्लाह कहता है कि लूट मेरी और उस के नबी की है। सो अल्लाह से डरो और उसके नबी को मानो। मुहम्मद ने लूट मेंसे एक २ को एक ऊंट या चमड़े का पलंग दिया और अपने वास्ते अबुजहल का ऊंट और एक तलवार जो प्रसिद्ध थी (उस का ज़ूलफिकार नाम था) रक्खी। इस के थोड़े समय पीछे यह ठहराया गया कि लूट का पांचवां हिस्सा नबी और उस के राज्य का होवेगा। यह दस्तूर आज तक माना जाता है कि सुलतान को पांचवां हिस्सा देकर बाकी बराबर बांटते हैं। जय पाते ही मुहम्मद ने जैद को अपने ऊंट पर चढ़ा के मदीना को खबर देने को भेजा। उस के वैरियों ने जैद को मुहम्मद के ऊंट पर देख आनन्द किया क्योंकि वे चाहते थे कि मुहम्मद हार जावे। परन्तु जब जैद ने उस की जय का संदेश दिया तब सारे शहर में लोग चिल्लाने लगे कि पापी अबुजहल मारा गया है। कैदियों के हाथों में हथकड़ी डाली गईं। रास्ते में मुहम्मद ने दो कैदियों को घात करने की आज्ञा दिई। एक ने कहा कि मुझ पर अधिक क्रूरता क्यों किई जाती है। उत्तर मिला कि तू अल्लाह और उस के नबी का वैरी है। उस ने कहा कि मेरी लड़की का पालन कौन करेगा। मुहम्मद ने कहा कि नरक की आग। इस पर वह कैदी घात किया गया। इसे देखकर मुहम्मद ने कहा कि मैं अल्लाह को धन्यवाद देता हूं कि मैंने इस की मृत्यु देखकर शांति पाई। कोई २ चाहते थे कि कैदियों को मार डालें। विशेषकर ओमर यह चाहता था पर अबुबकर उन्हें बचाने चाहता था। इतने में मुहम्मद ने कहा कि मुझे जब्राएल ने कहा है कि जैसा तुम चाहो वैसा ही करो पर यह जानो कि हरएक कैदी के बदले में जो मारा न जाय एक २ मुहम्मदी मरेगा॥

कुरान के आठवें सूरा में लिखा है कि जब तक तुम अपने शत्रुओं को पूरी रीति से बश में न करो तब तक उन्हें कैदी रखना उचित नहीं है। उन की एक कहानी है कि एक साल पीछे ओहोद की लड़ाई में हर एक कैदी के बदले में एक २ मुहम्मदी मार डाला गया। कैदियों में से कई एक मुहम्मदी हो गये। बाकी उद्धार के लिये रक्खे गये। बहुत दिनों तक खुरैश अपने को यहां तक नम्र न कर सके कि धन देकर अपने लोगों को छुड़ावें। मक्के के लोग बदला लेने की इच्छा के कारण शोक नहीं करते थे। उन के मनों में यह बात थी कि हम फिर मुहम्मद से लड़ें॥

॥ सोलहवां अध्याय ॥

मदीना में नर हत्या का होना, एक यहूदी जाति का निकाला जाना, सन् ६२४।

बेद्र की जय के कारण मदीना में मुहम्मद का अधिकार बहुत बढ़ गया। इस के पीछे जब उस ने देखा कि अब मेरा अधिकार जम गया है तब वह मदीना के अविश्वासियों और यहूदियों को सताने लगा और उन्हें बश में लाने की कोशिश किई। मदीना में जो पहिला जन मुहम्मद के द्वारा मरा सो एक स्त्री थी। यह स्त्री इसलाम से बहुत घिन करती थी। उस का नाम असमः था। वह कवि थी और मुहम्मद और उस के धर्म के विरुद्ध कविता लिखा करती थी। बहुत लोग इस कविता को याद कर बोलते थे। मुहम्मदी लोग बहुत नाराज हुए। उन में से एक अन्धे ने जो पहिले असमः का पति था यह किरिया खाई कि मैं उसे मार डालूंगा। सो वह आधी रात को उस के कमरे में घुस कर जहां वह अपने बच्चों के साथ सो रही थी वहां उसे तलवार से घात कर डाला। सबेरे प्रार्थना के समय उसने मुहम्मद को बताया और पूछा कि क्या इससे कुछ डर है? मुहम्मद ने कहा कि कुछ डर नहीं है। इसके विषय में दो

बकरे भी टक्कर न मारेंगे। फिर उस ने उन से जो इकट्ठे हुए थे कहा कि एक मनुष्य को देखो जिस ने अल्लाह और उस के नबी की सहायता किई है। ओमर ने कहा कि क्या इस अन्धे ने किई है मुहम्मद ने कहा कि उसे अन्धा मत कहो वह देखने वाला है। रास्ते में अन्धे को असमः के घराने के लोग मिले। उन्हों ने उस पर यह दोष लगाया सो उस ने कहा कि हां मैंने तो किया और यदि तुम सब चुप न रहो तो तुम्हें भी वैसे ही होवेगा। सो असमः के घराने के लोग चुप हो गये॥

कुछ दिनों के पीछे मुहम्मदियों ने एक बूढ़े यहूदी को मार डाला। उस का नाम अबुअफक था। यह भी कविता बोलने के द्वारा इसलामियों को सताता था। मुहम्मद ने अपने साथियों से कहा कि कौन इस सतानेहारे से मुझे छुटकारा देवेगा। थोड़े दिनों के पीछे एक मुहम्मदी ने उसे उस समय मार डाला जब वह घर में सोता था। इसलिये यहूदी लोग बहुत ही डर गये। जो यहूदी जाति मदीना के पास रहती थी उन में बेनिकाइनुकाह नाम एक सुनार जाति थी। बेद्रसे लौटने के कुछ समय बाद मुहम्मद उन के पास जाकर कहने लगा कि तुम मुझे मानो नहीं तो खुरैशों के समान तुम्हारा भी हाल होगा। उन्हों ने इन्कार किया और लड़ने का मौका जल्दी मिला। एक मुहम्मदी स्त्री उन के बाजार में जाकर बैठ गई। किसी मूर्ख ने छिप कर उस के लहंगे को उस की चोली से उलटा जोड़ दिया सो जब वह उठी तब सब देखनेहारे हंसने लगे और वह स्त्री चिल्लाने लगी। किसी मुहम्मदी ने उस का चिल्लाना सुनकर उस मूर्ख को मार डाला जिस पर यहूदियों ने उस मुहम्मदी को मार डाला। इस कारण उनके बीच में लड़ाई होने लगी। मुहम्मद ने मेल के लिये कुछ भी यत्न न किया पर अपने लोगों को इकट्ठा कर झंडा हमज़ा के हाथ में दिया और लड़ने को निकला। गढ़ को वे एकदम नहीं ले सक्के थे इस कारण उन्हों ने उस को घेर लिया जिस्तें कोई आने जाने न पावे। १५ दिन तक यह हाल होता रहा। यहूदी लोग सोचते थे कि दूसरे यहूदी लोग हमारी सहायता करेंगे पर मदद न पाकर अन्त में इन्हों ने

हार मानी। मुहम्मदियों ने जब यहूदी गढ़ से निकले तब उन्हें बांधा कि मार डाले जावें। अब्दुल्ला इब्न ओवे इसे सह न सका सो उसने मुहम्मद से बिन्तीकर कहा कि इन्हें न मारिये। मुहम्मद ने मुंह फेरकर उसे की न सुनो। उस ने फिर मुहम्मद का हाथ पकड़ कर बिन्ती किई पर मुहम्मद ने कहा कि मुझे छोड़। उसने कहा जब तक आप मेरे मित्रोंपर दया न करेंगे तब तक मैं न छोड़ूंगा। यहां ७०० मनुष्य हैं जो मेरे साथ लड़ाई में गये हैं क्या आप इन्हें एक दिन में काट डालेंगे। अन्त में मुहम्मद ने कहा उन्हें छोड़ दो लेकिन अल्लाह का स्राप उन के और तेरे साथ जावे॥

यहूदी सुरिया को भाग गये और मुहम्मदियों ने उन के मुहल्ले का लूट लिया। काब इब्न असराफ नाम एक यहूदी था जो पहिले मुहम्मदी हो गया था पर जब मुहम्मद यहूदियों के बिपरीत हुआ तब उस ने मुहम्मद को छोड़ दिया और यह देख कर कि इसलाम बहुत बढ़ता है वह क्रोधित होकर मक्के को गया। वहां वह उन खुरैशों की जो बेद्र में मारे गये थे तारीफ करने लगा और लोगों को बदला लेने के लिये उसकाने लगा। फिर मदीना में आकर मुहम्मदियों की स्त्रियों को प्रेम पत्रियां लिख कर मुहम्मदियों को सताने लगा। मुहम्मद इस पर बड़ा नाराज हुआ। एक समय प्रगट में उस ने यह प्रार्थना किई कि हे अल्लाह इस असराफ के हाथ से मुझे छुड़ा। फिर अपने लोगों को उसका कर कहा कि मुझे इस के हाथ से कौन छुड़ावेगा। सो उन में से एक ने कहा कि मैं छुड़ाऊंगा। वह एक समय चार साथियों को लेकर निकला। उधार लेने का बहाना करके वे असराफ के घर आधी रात को गये और उस से कहा कि यह हथियार हम जमानत के लिये लाये हैं। जब वे जाने पर थे तब मुहम्मद ने उन्हें आशीष दिई। धोखा खाकर असराफ उन के पास आया और उन्हों ने उसे मार डाला। पर उस ने अपने बचाने की कोशिश अच्छी तरह किई और एक मुहम्मदी को घायल किया। वे असराफ का सिर काट कर मुहम्मद के पास ले गये॥

इस के पीछे और एक हत्या हुई। जब यहूदियों ने मुहम्मद को न माना तब वह क्रोधित होकर उन्हें मारने की आज्ञा दिई। इस से यहूदी लोग डर के मारे अपने मुहल्ले को नहीं छोड़ते थे तो उन की एक पंचायत मुहम्मद के पास जाकर कहने लगी कि हमारे साथ ठीक व्यवहार नहीं किया जाता है। असराफ कैसी बुरी रीति से मार डाला गया है। तब उसने उत्तर दिया कि यदि वह बुरा न करता तो वह ऐसा न मारा जाता और यदि तुम लोग भी मुझे सताओ तो यही हाल तुम्हारा भी होगा। मुहम्मद के कहने से यहूदियों और मुहम्मदियों के बीच एक सन्धि किई गई पर तौभी यहूदी लोग डर के साथ रहते थे॥

इस साल में जो हिजरी का तीसरा साल था कई छोटी २ लड़ाइयां हुईं। अबुसेफियां ने बेद्र की लड़ाई का बदला लेने की किरया खाई कि मैं मदीना में आग और तलवार लेकर जाऊंगा। दो सौ साथियों और कुछ यहूदियों की सहायता से मदीना के आसपास के खेतों को नाश कर किसानों को मार डाला। वह यह समझकर कि मैंने अपने वायदा को पूरा किया वह भाग गया। अब से कुरैश लोग व्यापार के लिये सुरिया का मार्ग नहीं ले सक्ते थे। इस लिये मक्के के लोग दूसरे मार्ग से चक्कर खाके जाते थे। मुहम्मद ने इस मार्ग को भी अपने बश में करने के लिये लोगों को भेजा। एक समय जैद ने सौ मनुष्यों को लेकर इस रास्ता पर कुछ व्यापारियों को पकड़ा जिन के पास बहुत धन था॥

इस साल में मुहम्मद ने एक तीसरी स्त्री से शादी किई। यह ओमर की बेटी हफसा थी। जिन स्त्रियों से उस ने मदीना में शादी किई उन से एक भी सन्तान न हुआ और मुहम्मद की लड़कियों को सिवाय फातिमा के और किसी को सन्तान न हुआ फातिमा की शादी अली के साथ हुई थी। शादी के पहिले साल में हसन और दूसरे साल में हुसैन पैदा हुआ॥

॥ सत्तरहवां अध्याय ॥

ओहोद की लड़ाई, जनवरी सन ६२५, हिजरी का तीसरा साल

मदीना में मुहम्मद के रहने के तीसरे साल के अन्त में लड़ाई रूपी बादल मदीना पर छा रहे थे। मक्के के लोग बेद्र का बदला लेने चाहते थे। कई बार मदीना में खबर आई थी कि मक्के के लोग लड़ाई के लिये तैयारी कर रहे हैं। एक दिन मुहम्मद को एक चिट्ठी मिली जिस में लिखा था कि एक बड़ी सेना मदीना पर चढ़ाई करने के लिये रवाना हो गई है। मुहम्मद ने इस बात को छिपाना चाहा पर थोड़ी देर में वह प्रगट हो गई। यह मदीना के लोगों के लिये भयानक बात थी। मक्के के लोगों ने मरुस्थल के लोगों से संधि कर उन से सहायता लिई। उन की सेना ३००० योद्धा की थी दो सौ घोड़ों पर सवार थे और बाकी ऊंटों पर थे उन के साथ १५ स्त्रियां गईं कि गीतों के द्वारा सिपाहियों को उसकावें। मदीना के साधारण रास्तों में चलकर वे मदीना के नजदीक पहुंचे फिर बाईं ओर घूम के वे ओहोद की टेकरी के पास एक मैदान में टिक गये। उन के और शहर के बीच में कुछ पत्थरीली टेकरियां थीं सो वे शहर पर चढ़ाई करने से डरे। वे लोग आशा करते थे कि मदीना के वे लोग जो मुहम्मद के बिरुद्ध हैं हमारी सहायता करेंगे। और यह भी सोचते थे कि मुहम्मद शहर से बाहर निकल के लड़ाई करेगा। मुहम्मद भेदियों के द्वारा मालूम करता था कि मक्के के लोग क्या कर रहे हैं। मदीना में उस की रक्षा के लिये पहरुवे उस के द्वार का पहरा देते थे॥

एक समय उस ने एक स्वप्न देखा कि मैं अस्त्र शस्त्र पहिने एक मेढ़े पर सवार हुआ इतने में मेरे हाथ ही में मेरी तलवार टूट गई और एक बैल काटा गया। सबेरे अपने मंत्रियों को बुला कर वह आप ही उस स्वप्न का अर्थ कहने लगा। तलवार के टूटने का अर्थ मुझे कुछ हानि होगी, बैल काटा गया याने प्रजा को कुछ तकलीफ होगी या कुछ मारे जावेंगे, मेढ़े का अर्थ बैरी लोग भी मारे जावेंगे और यह शस्त्र जिसे मैं पहिने हुए था मदीना है।

जिस के लिये कुछ डर नहीं है यदि हम मदीना में रहें तो कुछ डर नहीं पर यदि बाहर निकलें तो हम जोखिम में पड़ेंगे ॥

अब्दुल्ला इब्न श्रोवे श्रौर शहर के प्राचीनों ने यह विचार ठीक समझा कि खुरैश लोगों को वहीं रहने दो श्रौर इस से उन की दशा बुरी हो जायगी श्रौर श्रन्त में वे लौट जावेंगे उन्हों ने विचार किया कि मदीना के जो लोग बाहर हैं उन को भीतर लाना चाहिये। पर इन बातोंसे जवान लोग नाखुश थे कि यदि हम यहां बैठके उन्हें श्रपने खेतोंको उजाड़ने दें तो श्ररब के लोग हम पर हंसेंगे। जैसे हमने बेद्रमें उनको मारा वैसे श्रब मारेंगे। श्रन्त में मुहम्मदने जवानों की सुनकर लड़ने की श्राज्ञा दिई। शुक्र की इबादत के पीछे उन्हों ने लोगों को लड़ने के लिये उभाड़ा। जब लोग तैयारी कर रहे थे तब मुहम्मद् श्रपने शस्त्र को पहिन कर निकला। उसे देख कर शहर के लोग कहने लगे श्राप जैसा ठीक समझते हैं वैसा ही कीजिये। तब उस ने कहा कि उचित नहीं है कि श्रल्लाह का नबी शस्त्र पहिनकर बिना शत्रु से लड़े उसे उतारे। तुम स्थिर रहो तो श्रल्लाह श्रवश्य जय देगा। सो उस ने लोगों के तीन भाग कर प्रत्येक भाग को एक २ झंडा दिया फिर श्रपने घोड़े पर सवार हो श्रोहोद का मार्ग लिया। रास्ते में उसने कुछ यहूदी सिपाही देखे उस ने उन्हें लौटा दिया श्रौर कहा कि हम श्रविश्वासियों से लड़ने में श्रविश्वासियों की सहायता न लेवेंगे। श्राधे रास्ते में वे रात को टिके श्रौर सवेरे उठ कर श्रागे बढ़ कर श्रोहोद के मैदान में पहुंचे। सेना में १००० सिपाही थे। जब वहां पहुंचे तब सूर्य निकला था सो बिलाल ने पुकार कर सभों को प्रार्थना के लिये बुलाया श्रब मुहम्मदी प्रार्थना के लिये गये। श्रब्दुल्ला मुहम्मद से इस कारण कि उस ने यहूदियों को लौटा दिया था नाराज था सो श्रपने ३०० साथियों को लेकर मदीना को लौट गया श्रब मुहम्मद के पास केवल ७०० बाकी रहे। खुरैश लोगों के साथ ३००० थे। मुहम्मद ने श्रपनी सेना को श्रच्छी जगह में खड़ा कर खुरैशों की चढ़ाई के लिये ठहरा। मक्केवालों का सेनापति श्रबुसोफियां था। जैसे बेद्र में बड़े २ लोग पहिले लड़े थे वैसे ही यहां हुश्रा

पर थोड़ी देर में सब मिल कर लड़ने लगे। पहिले मदीना के लोग जीतने लगे पर उन्होंने यह भूल किई कि इधर उधर बैरियों का पीछा करने लगे। खरैश लोगों के सामान के पास कुछ मुहम्मदी गये और उसे लूटने लगे। कुछ धनुषधारी जिन्हें मुहम्मद ने सख्त आज्ञा दिई कि तुम इसी स्थान में रहना वे लूट को देखकर दौड़ने लगे इस से खुरैश लोगों ने अवसर पा फिर इकट्ठे हो मुहम्मदियों पर चढ़ाई किई। मुहम्मदी उन्हें रोक न सके। हमजा मार डाला गया। बचाव के लिये मुहम्मदी लोग ओहोद की पहाड़ी टेकरियों में भाग गये मुहम्मद ने रोकना चाहा पर घायल हो गया और लोग चिल्लाने लगे कि मुहम्मद मारा गया है। इसे सुनकर मुहम्मदी अधिक घबरा गये जिस से यह लाभ हुआ कि खुरैशों ने समझा कि हमारा अभिप्राय पूरा हुआ है और लड़ने को छोड़ दिया॥

मुहम्मद मरा नहीं पर केवल बेहोश हो गया था। उस के सङ्गियों ने उसे एक गुफा में जो नजदीक थी छिपा दिया। जब खुरैश लोगों ने मुहम्मद को ढूंढ़ा पर न पाया तब सोचने लगे कि वह नहीं मरा है। अबुसोफियां ने टेकरियों पर चढ़ कर मुहम्मद, अबुबकर और ओमर को पुकारा। मुहम्मद ने कहा कि कोई उत्तर न देवे। सो वह कुछ उत्तर न पाकर कहने लगा कि सब मर गये हैं अब से वे हमें न सतावेंगे। पर ओमर उस को न सह सका और कहने लगा कि हे अल्लाह के बैरी वे जीते हैं और तुझ से बदला लेवेंगे। अबुसोफ़ियां ने कहा यह बेद्रका बदला है फिर वह होबाल और ओज्जा की जय पुकारने लगा। ओमर ने उत्तर दिया कि अल्लाह हमारा है न कि तेरा। अबुसोफ़ियां ने कहा कि एक साल पीछे हम फिर बेद्र में लड़ेंगे। जब मक्के वाले चले गये तब मुहम्मद उतर कर अपने मरे हुओं को गिनने लगा। मदीना के ७० और मक्के के २० मनुष्य मरे थे। मदीना के जो लोग मुहम्मद के बैरी थे सो घबरा गये और मक्के वालों से संधि करने का बिचार करने लगे॥

मक्के के लोगों में से कुछ लोग मदीना शहर ही पर धावा करने चाहते थे पर अधिक लोगों ने कहा कि हम ने बदला ले लिया है और क्या करें सो वे मक्के को लौट गये । मुहम्मद के भेदियों ने उसे यह बात बताई । जब ये बातें उन्हें मालूम हुईं तब मदीना वाले अपने लोगों को ढूंढ़ने लगे और बड़ा विलाप करने लगे । मुर्दों को वहीं गाड़ा और हमजा के लिये बड़ा विलाप हुआ । मदीना में उस दिनसे यह दस्तूर पड़ गया कि जब कोई स्त्री विलाप करने चाहती तब आरम्भ में हमजा का नाम लेती है । दूसरे दिन मुहम्मद ने अपने लोगों को खुरैशों का पीछा करने के लिये उसकाया पर वे खुरैशों को न पा सके। दो तीन कूच मुकाम करके वे ठहर गये फिर मुहम्मद ने ऊंचे २ स्थानों में ५०० जगह आग लगवाकर कहा कि अब से खुरैश लोग हमें फिर न मारेंगे । यह आग लगाना जय का चिन्ह था । मदीना में बड़ी घबराहट हुई लोग कुड़कुड़ाने लगे । मुहम्मद ने सिखलाया था कि अल्लाह मुझे जयवन्त करता है और यह एक निशान है कि मैं उस का नबी हूं । अब लोग कहने लगे कि मुहम्मद हार गया है इस कारण अल्लाह उस के साथ नहीं है पर मुहम्मद ने बड़ी चतुराई से उनको समझाया । उसने तीसरे सूरे का एक भाग लिखा । उस में लिखा है कि मुहम्मद से अल्लाह बातें करता है फिर कि बेद्र में मैं खुद उतर कर लड़ा और ओहोद की हार अवश्य थी जिस से प्रगट हो कि कौन विश्वासी और कौन अविश्वासी है वे उस मुकुट को चाहते थे जो उन्हें मिलता है जो बिहिश्त के लिये मरते हैं पर जब वह नजदीक आया तब वे भाग गये तौभी उन का भागना व्यर्थ हुआ क्योंकि हर एक का समय ठहराया गया है । अल्लाहने उन्हें जय दिई थी पर उन के कायरपन के और आज्ञा लंघन के कारण जय से हार हुई इस प्रकार मुहम्मद ने अपने को जयवन्त बतलाया पर हार का दोष दूसरों पर लगाया ॥

॥ अठारवां अध्याय ॥

दो घटनाएं। बनिनधीर का निकाला जाना। सन ई० ६२५। हिजरी का चौथा साल। मुहम्मद की उमर ५७ साल॥

खुरैश लोग ओहोदकी लड़ाई से सन्तुष्ट हुए। अबसे बहुत समय तक मक्के के लोगों ने मदीना के लोगों को नहीं सताया। इस लड़ाई से मरुस्थल की जातियों में मुहम्मद का अधिकार घट गया वे मदीना के लोगों को बहुत सताने लगे पर मुहम्मद भेदियों के द्वारा उन की चढ़ाइयों का सन्देश पाकर उन को रोक सका दो बार मुहम्मद को हानि उठानी पड़ी। बनिलहयां नाम एक जङ्गली जात थी जो खुरैशों के अधिकार में थी। वे मदीना पर चढ़ाई करने चाहते थे। मुहम्मद ने अपने मनुष्यों को भेज कर उन के प्रधान को मरवा डाला। इस के बदले में मुहम्मदके ६ भेदियोंको पकडकर उन लोगों ने ४ को मार डाला और दो को गुलाम के लिये मक्के के दो प्रधानों के हाथ बेंच दिया। ये कुछ समय तक बन्दीगृह में रहे परन्तु पीछे शहर के बाहर बड़ी भीड़ के साम्हने क्रूरता के साथ मार डाले गये। जब वे मरने पर थे तब यह प्रार्थना किई कि हे अल्लाह मक्केवाले एक एक करके नष्ट होवें एक भी बचने न पावे। मक्के के लोग उस स्राप से बचने के लिये औंधे मुंह गिरे॥

फिर मुहम्मद ने एक जाति को बश में करने के लिये ७० मनुष्यों को भेजा। वे बीरमौना के सोते के पास ठहर के एक चिट्ठी में उस जाति के प्रधान के पास भेजकर कहा कि आप मुहम्मदी हो जाइये। उसने कुछ जबाब नहीं दिया पर एक जाति को जिस के बीर बेद्र की लड़ाई में मारे गये थे उसकाया। उन्हों ने इन सत्तर जनों पर चढ़ाई कर दो को छोड़ सभों को मार डाला। ये दोनों भाग रहे थे सो एक को इस जाति के दो जन रास्ते में मिले उन्हें उस ने मार डाला। पीछे मालूम हुआ कि ये लड़ाई में शामिल नहीं थे पर मुहम्मद से इस जाति के नाम में संधि किई है। इन दोनों के मरने में मुहम्मद नाखुश था सो उसने उस जातिके लोगों के पास उनके खून का दाम भेजा॥

जब मुहम्मद खून का दाम वसूल कर रहा था तब कहा कि बनिनधीर के लोगों से भी कुछ वसूल करना चाहिये। सो वह उन यहूदियों के मुहल्ले में गया। वे लोग खाना तैयार कर रहे थे इसलिये कहा कि आप आकर खाइये। जब वे लोग कुछ तैयारी कर रहे थे तब वह बिना कुछ कहे अपने साथियों को वहाँ छोड़ चला गया और पीछे न लौटा तब उस के साथी भी गये और उसे मसजिद में यह बोलते हुए पाया कि वे लोग मुझ पर ऊपर से पत्थर फेंकने वाले थे। यह बात मुझे अल्लाह ने बताई। थोड़ी देर के बाद उसने उनके पास यह संदेश भेजा कि अल्लाह का नबी कहता है कि दस दिन के अन्दर तुम मेरे देश से निकल जाओ। जो इस के पीछे रहेगा सो मार डाला जावेगा। इसे सुनकर बनिनधीर के लोग विस्मित हुए॥

बनिनधीर के लोग आसपास की जातियों पर सहारे का भरोसा कर न निकले। अब्दुल्ला इब्न ओबै ने मेल कराने का बड़ा यत्न किया पर कुछ न बना। जब मुहम्मद को मालूम हुआ कि वे नहीं निकले हैं तब बड़ा खुश हुआ। उस ने और उस के साथियों ने हथियार पहिन उन के मुहल्ले को घेर लिया। कुछ समय तक बनिनधीर के लोगों ने मुहम्मदियों को रोका पर उन की सहायता के लिये कोई नहीं आया। कोरैत्सा नाम एक और यहूदी जाति थी पर उन्हों ने डर के मारे कुछ न किया। यदि ये लोग सहायता देकर नष्ट भी होते तौभी उन के लिये अच्छा होता क्योंकि दो वर्ष पीछे मुहम्मद ने उन्हें बड़ी बुरी रीति से मार डाला। बनिनधीर कुछ समय तक लड़ते रहे सो मुहम्मद अधीर होकर एक काम करने लगा जिसे अरबी लोग बड़ा खराब समझते थे। वह उनके मुहल्ले के आसपास के खजूर वृक्षों को काट कर उन की जड़ों को आग से जलाने लगा। इस पर यहूदी लोगोंने उसे डांटा क्योंकि ऐसा काम न केवल आप से खराब है परन्तु मूसा की व्यवस्था में भी मना है (व्य० वि० २०:१९) मुहम्मद ने यह जानकर कि मैंने अनुचित काम किया है कहा कि यह आज्ञा मुझे अल्लाह से मिली। कुछ काल के बाद बनि-

नधीर के लोग यह जान कर कि सहायता की आशा नहीं है उस के पास यह कहला भेजा कि हम अपने हथियारों को छोड़ चले जाते हैं। मुहम्मद डरता था कि यदि इस झगड़े में अधिक समय तक लगू तो दूसरे लोग मुझे सतावेंगे सो उस ने उन्हें जाने दिया ॥

इस समय बनि नधीर के लोगों ने अपना सब माल अर्थात द्वार की चौखट तक निकाल कर अपने ऊंटों पर लाद दिया और सुरिया का माग पकड़ा। मुहम्मद ने अपने लोगों से कहा कि इस समय कोई संग्राम नहीं हुआ इसलिये लूट जो मिली है सो नबी की आज्ञानुसार बांटी जाव क्योंकि यह बात मुझे अल्लाह से बताई गई है। लूट में बहुत से हथियार और उपजाऊ खेत थे सो उस ने अपने कुटुम्ब के लिये कुछ लेकर बाकी को मुहाजरीन लोगों में बांट दिया। इस से मुहाजरीन लोग धनवान हुए और उन को मदीना के लोगों से सहायता लेना फिर न पड़ा। बनिनधीर को निकालना उन के लिये बड़ी बात थी। मुहम्मद अपने विरोधियों को या तो बश में करता था या उन को निकाल देता था । इस के विषय में ५९ सूरा देखो। इस समय तक उस का लेखक एक यहूदी जन था जो इब्री और सुरियानी भाषा में लिखता पढ़ता था पर अब से थाबित का बेटा जैद लेखक के काम के लिये मुकर्रर किया गया जिस ने खलीफों के समय में कुरान इकट्ठी किई ॥

॥ उन्नीसवां अध्याय ॥

जैनब से उस की शादी और घर की कुछ बातें।

सन ईस्वी ६२५ या ६२६ हिजरी का ४ या ५ साल।

मुहम्मद की उमर ५७ या ५८ साल।

कुछ समय तक कोई लड़ाई न हुई। ओहोद की लड़ाई के एक साल बाद जो लड़ाई होनेवाली थी सो न हुई। अबुसोफियां

एक बड़ी सेना लेकर मक्के से निकला था परन्तु अक.ल के कारण लौट गया। मुहम्मद १५०० योद्धाओं को लिये हुए ठहराये हुए स्थान पर गया और अपने साथ बहुत सा सामान भी ले गया क्योंकि उस समय बेद्र में बाजार लगता था। वहां एक सप्ताह ठहरे रहे। इस से मुहम्मद खुश था। खुरैश लोग लज्जित होकर मदीना पर दूसरी चढ़ ई की तयारी करते थे। गर्मी के दिनों में खबर आई कि डाकू लोग सुरिया के रास्ते में मुसाफिरों को मार डालते हैं और डर है कि वे लोग मदीना पर चढ़ाई न करें। सो मुहम्मद इन्हें बश में करने के लिये एक हजार की सेना लेकर दूमह शहर तक गया जो सुरिया देश की सीमा पर था। डकैत छिन्न भिन्न किये गये। इस समय कोई बड़ी लड़ाई न हुई पर मदीना के उत्तरीय देशों में मुहम्मद का डर फैल गया॥

इस समय उस ने दो स्त्रियों से शादी किई। पहिली जैनब थी यह दान देने में प्रसिद्ध थी लोग उसे कङ्गालों की मा कहा करते थे वह दो वर्ष बाद मर गई। इस शादी के एक माह पीछे उस ने ओमसलमः के साथ शादी किई॥

मुहम्मद इस समय ६० वर्ष का होने वाला था मालूम होता है कि बुढ़ापे में उस को स्त्री की इच्छा और बढ़ती गई। एक दिन वह जैद के घर गया वह घर में न था। मुहम्मद ने उस की स्त्री जैनब को बिना कपड़ा पहिने देख लिया सो वह उस की सुन्दरता देखकर उस पर मोहित हुआ। उस ने प्रगट में कहा कि हे अल्लाह तू मनुष्यों के मनों को कैसे फिराता है। जैनब ने इसे सुना और मुहम्मद के मोहित होने से खुश होकर अपने पति से कहा। सो जैद मुहम्मद के पास गया और कहा मैं उसे अलग कर आप को दूंगा। मुहम्मद ने कहा कि अपनी स्त्री को रखना पर तौभी वह उसे चाहता था। जैद नाटा और कुरूप था इस लिये जैनब दूसरे को चाहती थी। जैद ने त्यागपत्र देकर उसे छोड़ दिया पर मुहम्मद कुछ ठहर गया क्योंकि जैद उस का ले पालक बेटा था और उस की स्त्री को लेना अर्बियों में बर्जित था। वह जानता था कि इस के कारण मुझ

पर बड़ा दोष आवेगा पर उस की इच्छा न रुकी इस कारण उस ने मन में ठाना कि मैं उसे लूंगा। एक दिन वह आएशा के कमरे में बैठा हुआ था तब कहने लगा कि जैनब के पास जाकर उससे कौन कहेगा कि तुझे अल्लाह ने शादी द्वारा मुहम्मद के साथ जोड़ दिया है। एक दासी दौड़कर उस के पास गई। इस सन्देश से वह इतनी आनन्दित थी कि जो गहिने वह पहिने थी सब उस दासी को दे दिये। मुहम्मद ने कुछ देर न कर एक भोज तैयार करा मसजिद के आंगन में लोगों को खिलाया और जैनब से शादी करली। इस शादी के कारण लोगों में उस की बदनामी तो हुई पर अपने को निर्दोष ठहराने के लिये जब्राएलकी सहायता ली। इस से सब लोग चुप हो गये। देखो सूरा ३३॥

इस के पीछे लोग जैद को मुहम्मद का बेटा नहीं कहते थे पर हारित का। इस समय के लगभग स्त्रियों का परदे में रहने का आरम्भ हुआ। इस का अभिप्राय यह था कि बदमाश लोग स्त्रियों को देख कर उन पर कुदृष्टि न करें और न उन से बुरी बातें कहने पावें सूरा २४। मुहम्मद ने अपनी स्त्रियों के लिये इस से कड़ा नियम ठहराया था कि बिना हुक्म पाये कोई उनके घरमें न जाने पावे और बिना पर्दाकी आड़ कभी कहीं न बैठें। वे किसी से बातें न करें सूरा ३३। इस समय से मुहम्मद की स्त्रियां विश्वासियों की माताएं कहलाने लगीं। आंगन के पूर्वी ओर ६ घर थे जिन में मुहम्मद की ६ औरतें रहती थीं॥

मुहम्मद का दस्तूर था कि सिलसिलेवार एक दिन रात एक २ के घर में रहता था पर तौभी आएशा के घर में अधिक रहता था इसलिये दूसरी स्त्रियां कुड़कुड़ाने लगीं। उन के चुप कराने के लिये उसने जब्राएल की सहायता ली सूरा ३३। ये बातें कुरान में हैं और मसजिदों में कुरान की दूसरी बातों के साथ पढ़ी जाती है॥

॥ बीसवां अध्याय ॥

बनीमुस्तलिक के विषय में, अयेशा पर दोष का लगाया जाना सन् ई० ६२६, हिजरी ५ साल, उमर ५८ साल।

कुछ समय के पीछे खबर आई कि मक्के के लोग लड़ाई के लिये तैयारी कर रहे हैं सो मुहम्मद ने मन में ठाना कि मैं उन की चढ़ाई के लिये न ठहरूंगा पर बनीमुस्तलिक नाम एक जाति जिसने खुरैशों के साथ सन्धि किई है उस पर चढ़ाई करूंगा। इस लिये एक बड़ी सेना लेकर मुहम्मद ने उस जाति के सब लोगों को पकड़ लिया। दो सौ घराने के लोग, दो हजार ऊंट, ५ हजार भेड़ और बहुत सामान उन के हाथ लगा और सब सेना के लोगों को बांटा गया॥

इतने में खास मदीना के लोगों और मुहाजरीनों के बीच में झगड़ा होने लगा क्योंकि एक मुहाजरीन ने एक मदीना वासी को मारा था। वे तलवार से लड़ने वाले थे लेकिन मुहम्मद ने उन्हें रोका। मदीना के कुछ लोगों ने कहा कि हम मुहम्मद से खुश नहीं हैं। अब्दुल्ला इब्न ओबे ने कहा कि ठहरो जब हम मदीना में पहुंचेंगे तब बलवन्त दुर्बल को आप निकाल देगा। इसे सुनकर मुहम्मद डरा क्योंकि दोनों पक्ष के लोगों में झगड़ा होने वाला था सो उस ने उन को चलने का हुक्म दिया। यद्यपि वह समय चलने के लिये अनुकूल न था तौभी रात भर वे चलते रहे और जब धूप बहुत तेज होने लगी तब रास्ते में टिके सो वे सब थकित हो सो गये और झगड़े को भूल गये। अब्दुल्ला ने मुहम्मद से कहा कि यह बात मैंने नहीं कही सो मुहम्म दियों में से कुछ लोगों ने चाहा कि उसे कठिन दण्ड मिले पर मुहम्मद ने उसे जाने दिया जब झगड़े का डर मिट गया तब इस विषय में मुहम्मद ने अब्दुल्ला और उस के साथियों को बहुत डांटा सूरा ६३। इस युद्ध में जो क़ैदी मिले उन में से एक उच्चजाति की स्त्री थी वह बड़ी सुन्दर थी उसका नाम जी वैरिया था जिस मनुष्य के वश में वह आई थी तिस ने उस के लिये

बहुत कीमत मांगी। वह स्त्री मुहम्मद के पास जाके कहने लगी कि कीमत कुछ कम किई जावे। उस समय अयेशा मुहम्मद के पास बठी थी उस ने पहिचान लिया कि विन्ती करने हारी ने मुहम्मद को अपने वश में किया है। मुहम्मद ने उस से कहा मैं तुम को इस से अच्छी बात सुनाता हूं। स्त्री ने कहा कहिये मुहम्मद ने कहा मैं दाम देकर अपने पास रखूंगा। स्त्री खुश हुई और उस के लिये घर बनाया गया। मदीना के लोगों ने यह हाल सुन कर कि यह जाति हमारी रिश्तेदार हुई है। कहने लगे कि कैदियों को छोड़ना पड़ेगा। अयेशा कहा करती थी कि इस के समान और कोई स्त्री अपनी जाति के लिये आशीष का कारण न हुई॥

जब मुहम्मद यात्रा करता था तब जो स्त्रियां उस के साथ जाया करती थीं सो ऊंटों पर पर्दों में जाती थीं। जब लोग मदीना में पहुंचे तब उन को मालूम हुआ कि अयेशा अपने पर्दे में नहीं है। अयेशा ने बतलाया कि यह इस प्रकार से हुआ कि बड़े फ़ज़र मैं पर्दे के अन्दर बैठ गई इतने में मैं ने देखा कि मेरी माला नहीं है सो मैं उस को ढूंढने के लिये गई इतने में क्या हुआ कि ऊंट वाले यह समझके कि अयेशा पर्दे के भीतर बैठी है पर्दे और डेरे को ऊंट पर लाद के ले गये सो मैं इस आशा में कि वे अपनी भूल को पहिचान कर लौटेंगे वहीं बैठ गई। लेकिन सूर्य निकलने के समय वहां एक मुहाजरीन आया उनके बीच में केवल इतनी बातचीत हुई कि पुरुष ने उस से कहा कि ऊंट पर चढ़ो। यद्यपि उन्हों ने ऊंट को खूब दौड़ाया तौभी मुहम्मद के पीछे मदीना में पहुंचे सो सभों के देखने में वह ऊंट पर बैठी हुई मदीना में गई॥

लोग जल्दी अयेशा के विषय में बुरी बातें उड़ाने लगे। जब यह बात मुहम्मद के सुनने में आई तब वह उसे कम प्यार करने लगा। अयेशा बीमार होकर अपने पिता के घर चली गई इसलिये बदनामी करने वाले अधिक बदनामी करने लगे। जितने मुहम्मद और अयेशा के बैरी थे वे भी बदनामी करने लगे। कुछ समय के बाद मुहम्मद ने इसे बन्द करने को ठाना।

एक दिन उस ने मसजिद में कहा कि यह बात हमारी है न कि तुम्हारी। तुम लोग चुप रहो जिस के विषय कोई प्रमाण नहीं है उस के विषय में कुछ मत बोलो। फिर वह अबुबकर के पास जाकर वहां के लोगों से सलाह लेने लगा बाद को वह घरमें गया जहां अयेशा बैठी हुई थी। उस के पास बैठ कर वह कहने लगा कि हे अयेशा तू जानती है कि लोग तेरे विषय में क्या कहते हैं। यदि तू दोषी है तो अल्लाह का तौबा कर क्योंकि वह अपने लोगों का तौबा ग्रहण करता है। वह चुप रही क्योंकि वह सोचती थी कि मेरे माता पिता इसे झूठा कहेंगे। पर वे भी चुप चाप ही रहे। फिर रोती हुई कहने लगी कि मैं लाचार हूं। यदि मैं मानूं तो अल्लाह जानता कि मैं निर्दोष हूं। यदि मैं इन्कार करूं तो मेरी कोई नहीं सुनता है। मुहम्मद चुप रहा इतने में वह बेहोश हो गया सो उन्हों ने उस के सिर के नीचे तकिया और ऊपर कपड़ा ओढ़ा दिया। कुछ समय बाद वह उठ कर कहने लगा कि हे अयेशा आनन्द कर क्योंकि अल्लाह ने तुझे निर्दोष ठहराया है फिर वह निकलकर मसजिद में परस्त्री गमन के विषय में नियम बताने लगा कि वेश्याओं को कोड़ा मारो इस काम करने वालों को मार डालो। परन्तु चार प्रत्यक्ष साक्षियों की साक्षी होनी चाहिये यदि ये चार न मिलें तो दोष लगाने हारे झूठा ठहरे और उन्हें ८० कोड़े मारना चाहिये। इस का यह फल हुआ कि उन के बीच में ऐसे लोगों को सजा नहीं मिलती। वह अयेशा के दोषदायकों के विषय में बोला कि ये झूठे हैं सूरा २४। इस के पीछे उन्हें दण्ड दिया। उस की स्त्रियों के विषय में सूरा ३३ देखो। इस बात से यह ज्ञात होता है कि कुरान के नियम किस प्रकार से ठहराये गये। जब मुहम्मद को दुःख या कोई इच्छा उत्पन्न हुई तब उस समयानुसार नियम ठहराये गये॥

॥ इक्कीसवां अध्याय ॥

मदीना पर खुरैशों की चढ़ाई. सन ईस्वी ६२७। हिजरी का ५वां साल।

इस समय मक्के के लोग मदीना पर चढ़ाई करने के लिये फिर तैयारी करने लगे। मक्के से ४००० और आसपास की जातियों में से इतने लोग आये कि कुल १०००० थे। इन्हें देख मदीना के लोग घबरा गये। वे जानते थे कि हम शहर के बाहर मैदान में लड़ के जीत न सकेंगे। उन के पास एक दास था जिस ने लड़ाई की विद्या सीखी थी। उस ने मदीना के लोगों को समझाया कि शहर की जिस तरफ न पहाड़ न दीवाल है वहां नाला खोदो और जो मिट्टी नाले से निकले उस से उस नाले के भीतर एक बन्ध बांधो। यह बात मुहम्मद को अच्छी मालूम हुई। सो इस को बनाने के लिये उस ने हुक्म दिया। लोगों को साहस दिलाने के लिये मुहम्मद ने आप इस काम में हाथ लगाया। ६ दिन में नाला और बन्ध बन गया। बन्ध के ऊपर बहुत से पत्थर रक्खे गये जिस्तें जब शत्रु आवें तब उन के ऊपर फेंक दिया करें। मक्के के जो लोग बन्ध के बाहर रहे सो भीतर बुला लिये गये॥

जब खबर आई कि मक्के के लोग ओहोद में पहुंच गये हैं तब मदीना की सेना शहर के बाहर निकल कर शहर और बन्ध के बीच एक मैदान में टिक गई। मक्के के लोग यह सोच कर कि कोई रोकने वाला नहीं है आगे बढ़े पर नाले के पास ठहर गये। कुछ समय तक वे दूर से बान चलाते रहे। इस के बीच में अबूसोफियां ने उस यहूदी जाति से जो रह गई थी सन्धि किई। इस से मुहम्मद शहर के लोगों के सङ्ग घबरा गया। शहर में इन यहूदियों के बहुत से मित्र थे। जिस ओर यहूदी लोग रहते थे उस तरफ की दीवाल कमजोर थी। उस जाति का नाम बनी कोरैतसा था। उनकी तरफ की दीवाल पर और शहर के भीतर भी पहरा बैठाना पड़ा जिस्तें कि दुश्मन

मक्के वालों को शहर के भीतर आने न पावे। मुहम्मद के तम्बू के पास भी पहरा बैठाया गया॥

मक्के की सेना उस नाले को पार न कर सकी। इस कारण से वे नाराज होकर पुकारने लगे कि नाला खोदना बड़ी शरम की बात है। किसी अरबी ने इस प्रकार का काम कभी नहीं किया। यह अरबियों के लिये अनुचित काम है। तौभी उस नाले के कारण मदीना बच गया। बारम्वार कुरैशों ने चढ़ाई करने की कोशिश किई पर चढ़ न सके। एक दिन उन्हों ने देखा कि एक जगह पर कोई रोकने वाला नहीं है। उन के कुछ सिपाही एक दम चढ़ के बन्ध के भीतर पहुंच गये पर मदीना के लोगों ने उन्हें निकाल भगाया। इस के दूसरे दिन को मक्के की सारी सेना चढ़ने लगी। इस समय मदीना के लोगों को बड़ा परिश्रम करना पड़ा। कई बार कुछ मक्के वाले भीतर पहुंचे पर सब निकाल दिये गये। रातके समय मक्के के लोग बाहर ही रह गये। यद्यपि वे दिन भर लड़ते रहे तौभी मक्के की ओर केवल तीन और मदीना की ओर पांच जन मारे गये। मदीना की सेना अधिक थकित हो गई थी। मक्के की इतनी भारी सेना को देखकर वे निराश होने लगे। जब उन्हों ने देखा कि मक्के के लोग हमारे खेतों को नाश कर रहे हैं तब बाहर जाने की आज्ञा मांगने लगे कि खेतों की रक्षा करें। इस समय मुहम्मद का अधिकार टूटने पर था। जब चढ़ाई के बारह दिन हो चुके थे तब मुहम्मद ने सोचा कि अब मैं जङ्गली जातियों को धन देकर मक्के वालों की ओर से उन्हें अलग करूंगा। जब उस ने उन से बातें किईं तब वे इतना धन मांगने लगे कि कुछ न बन पड़ा। फिर जङ्गली जातियों का एक प्रधान जो बड़ा चतुर था मुहम्मद के पास छिप कर आया और कहने लगा कि मैं आप की सहायता करूंगा। सो मुहम्मद ने उस से कहा कि तुम मक्के वालों और जङ्गली जातियों के बीच बैर उत्पन्न कराओ। उसने उनके बीच चुगली करके बैर उत्पन्न कराया। उस ने यहूदियों से से कहा कि मक्के वाले यहां से चलकर तुम को मदीना वालों के वश में छोड़ेंगे। वे तुम को मदीना के लोगों के क्रोध से न बचा-

वेंगे । फिर मक्के वालों के पास जाकर कहा कि यहूदी लोग बिश्वास योग्य नहीं हैं। वे बहाना करके न लड़ेंगे सो जब मक्के वाले लड़ने को फिर निकले तब यहूदियों ने कहा कि विश्रामवार का दिन है। हम आज के दिन लड़ नहीं सक्ते हैं। फिर वे जामिन मांगने लगे। यह सुन मक्के वाले डरने लगे कि यहूदी लोग हम पर चढ़ाई न करें। इस के पीछे मक्के वाले निराश होने लगे। बारम्बार उन की सेना नाले के पास रुक गई थी। रसद घट गई। उन के ऊंट मरने लगे। उस रात को आंधी आई। पानी के कारण मैदान दल दल सा हो गया तम्बू गिरा दिये गये और आग बुझाई गई। अबुसोफियां अपने साथियों से घबरा के कहने लगा कि मैं तो जाता हूं। सुबह तक उन का कोई मनुष्य न रहा ॥

जब इस की खबर मुहम्मद को मिली तब उस ने कहा कि यह तो हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर है। यह आंधी ईश्वर की ओर से आई ॥

॥ बाइसवां अध्याय ॥

बनी कोरेतसा का नाश होना।

सन ईस्वी ६२७, हिजरी का पांचवां साल।

मदीना की सेना के लोग आनन्द के साथ अपने घर को लौट गये। मुहम्मद ने मक्के वालों का पीछा नहीं किया। उस का इरादा और प्रकार का था। उसी दिन उस ने हुक्म दिया कि सेना फिर इकट्ठी होकर यहूदी लोगों पर चढ़ाई करे। मुहम्मद ने कहा कि जब्राएल ने उतर के मुझे डांटा है कि "जब तक स्वर्ग दूत हथियार न उतारे तब तक तुम क्यों उतारते हो? बनी कोरेतसा पर चढ़ाई करो, देख मैं उन के गढ़ की नेव हिलाऊंगा"। शाम तक मुहम्मदियों की सेना ने बनी कोरेतसा के गढ़ को घेर लिया। मुहम्मदियों को थोड़ी दूर हटना पड़ा

क्योंकि एक यहूदिन ने चक्की का पाट फेंककर एक मुहम्मदी को मार डाला। थोड़े दिनों में यहूदियों को बड़ी तकलीफ हुई। उन्हों ने कहा कि यदि आप हमें छोड़ देवें तो हम खाली हाथ चले जावेंगे। पर मुहम्मद और सख्ती से बदला लेने चाहता था॥

अन्त में यहूदियों ने भूख के मारे कहा कि यदि आप बनी औस के लोगों को हमारी सजा ठहराने देवें तो हम अपने को आप के हाथ में सौंप देंगे। मुहम्मद राजी हुआ। इस पर यहूदी लोग जो २००० जन के करीब थे गढ़ से निकले। पुरुष लोग रस्सियों से बांधे गये और स्त्री और बच्चे लोग अलग किये गये। लूट अलग रक्खी गई कि यहूदियों को सजा देने के पीछे बांटी जावे। बनी औस के लोग चाहते थे कि यहूदी लोग छोड़ दिये जावें। उन्हों ने कहा कि जैसे कि बनीनधीर और बनी खजरज के लोग छोड़ दिये गये वैसे इन को छोड़ना चाहिये। मुहम्मद उन्हें छोड़ने नहीं चाहता था। उस ने बनी औस के लोगों से कहा कि यदि मैं तुम लोगों में से एक को चुनूं तो क्या तुम उस की बात मानोगे? उन्हों ने कहा कि हां हम मानेंगे। सो मुहम्मद ने सद नाम एक मनुष्य को चुना जो लड़ाई में यहूदियों से घायल किया गया था। इस चोट के कारण सद निहायत क्रोधित था। उस का घाव अब तक अच्छा न हुआ पर लोगों ने उसे सवारी पर बैठा के मुहम्मद के पास पहुंचाया। जाते समय बनी औस के लोगों ने उसे घेर के बिन्ती किई कि यहूदियों को छोड़ दीजिये। सद ने उत्तर में एक शब्द न कहा। पहुंचकर सद ने कहा कि "सद को यह अनुग्रह मिला है कि ईश्वर के काम करने में उसको दोष लगाने हारों की बातों की कुछ चिन्ता नहीं है" जब वह सवारी से उतरा तब मुहम्मद ने उस को सजा ठहराने की आज्ञा दी। सद ने लोगों से कहा कि क्या तुम ईश्वर की किरिया खाके प्रतिज्ञा करोगे कि हम सद की बात को मानेंगे? उन्हों ने उत्तर दिया कि मानेंगे। तब सद ने कहा कि मैं यह ठहराता हूं कि पुरुष मार डाले जावें और स्त्री और बच्चे लोग दास होने को

बेंचे जावें। इस को सुन सब लोग विस्मित हुए पर मुहम्मद ने कहा कि सद का फैसला ईश्वर ही की ओर से है॥

मदीना के लोग अपने २ घर को गये। बन्धुओं में से रिहाना नाम एक सुन्दर स्त्री मुहम्मद के लिये अलग रक्खी गई। रात भर यहूदी लोग अपनी धर्मपुस्तक की बातों से एक दूसरे को साहस दिलाते रहे। रात को मदीना के लोगों ने बाजार के बीच नाले खोदे। सुबह मुहम्मद ने हुक्म दिया कि पुरुष लोग छः छः करके लाये जावें। मुहम्मदियों ने उन को नाले के पास बैठा के और उन के सिरों को काट के उन की लोथों को नाले में फेंक दिया। इस प्रकार से एक स्त्री भी मारी गई। यह वही थी जिसने चक्कीके पाट से एक मुहम्मदी को मार डाला था। यह घटना दिन भर और रात को भी हुई इस प्रकार से आठ सौ मनुष्य मार डाले गये। उन की लोथें मट्टी से तोप दिई गईं। इस के पीछे मुहम्मद रिहाना के पास गया पर उस ने मुहम्मद से शादी करने से इंकार किया। वह मुहम्मद से बच न सकी। मुहम्मद ने उसे सहेली के तौर पर रक्खा। वह दो चार बरस बीतने पर मर गई॥

बच्चों को छोड़ एक हजार स्त्रियां थीं। इन में से मुहम्मद ने कुछ सुन्दर स्त्रियां अपने मित्रों को दिईं। बाकी स्त्रियां और बच्चे नेज्द को भेजे गये जहां घोड़ों और हथियरों के बदले बिके। बाकी लूट मुहम्मदियों के नियम के अनुसार बांटी गई॥

जब सद यहूदियों की सजा ठहरा चुका तब वह अपनी सवारी पर चढ़ लौटने लगा। पर इतना परिश्रम उस के लिये अधिक था और उस का घाव बढ़ गया था। यह सुन कि सद अधिक बीमार है मुहम्मद उस के पास गया और सद का सिर गोद में लेकर यह प्रार्थना करने लगा कि हे अल्लाह सचमुच सद ने तेरी सेवा किई है अब उस को अपने पास ले। वह मर गया और जब लोग उसे ले जाने लगे तब उस की मा कुछ अरबी कविता बोल कर विलाप करने लगी। लोगों ने उसे बरजा पर मुहम्मद ने कहा कि विलाप करने दो उस को छोड़ सब कवि

लोग झूठे हैं यद्यपि सद बड़ा मोटा था तौभी ढोनेहारों को अर्थी हलकी मालूम हुई। किसी ने कहा कि यह तो खून के फैसले के कारण है। मुहम्मद ने कहा कि नहीं पर स्वर्ग दूत अर्थी को उठाये हुए हैं इस लिये हलकी मालूम होती है। स्वर्ग पर का सिंहासन सद के कारण हिल गया है। स्वर्ग का फाटक खुल गया है और सद के पीछे सत्तर हजार स्वर्ग दूत चलते हैं जिन्हों ने इस से पहिले पृथ्वी पर पैर कभी न रक्खा। जब सद को कबर में रखने लगे तब मुहम्मद घबरा गया और उस का चेहरा पीला पड़ गया मुहम्मद ने पीछे इस का कारण इस प्रकार से बताया कि जब वे उस को कबर में उतार रहे थे तब कबर सकरी हो गई पर ईश्वर ने उस को उस में स्वतंत्रता दिई॥

मक्केवालों को रोकने से और बनी कोरैतसा के लोगों को नष्ट करने से मुहम्मद का अधिकार बढ़ गया। मदीना में उस के वैरी विस्मित होकर चुप हुए। आस पास की जातियां डरने लगीं॥

॥ तेइसवा अध्याय ॥

हिजरी का छटवां साल, सन ईस्वी ६२७-६२८।
मुहम्मद की उमर ५९॥

इस समय से एक साल तक मदीना शान्त रहा। कोई बड़ी लड़ाई न हुई। डाकुओं को मारने के लिये और व्यापारियों को लूटने के लिये सत्रह बेर थोड़े सिपाही भेजे गये। इस से मुहम्मद का नाम बढ़ गया। एक बार लूट के साथ कुछ बंधुए लाये गये जिन में अबुल आस था। इस ने मुहम्मद की बेटी जैनब से शादी किई थी। हिजरी के समय जैनब मक्के में रह गई थी। खुरैशों ने अबुल आस से कहा कि इस स्त्री को त्याग देओ पर उस ने नहीं माना। बेद्र की लड़ाई में अबुल

आस पकड़ा गया। उस के उद्धार के लिये जैनव ने अपने जेवर भेजे। इस को देख मुहम्मद ने अबुल आस को इस शर्त पर छोड़ने की आज्ञा दिई कि वह जैनब को मुहम्मद के पास भेजे। अबुल आस ने इस शर्त को पूरी किया। मुहम्मद ने जेवर को लौटा दिया। जब जैनब मक्के से मदीना आ रही थी तब कुछ बदमाशों ने उस को ऐसे मारा कि वह जीवन भर बीमार रही। चार बरस बीते थे कि अबुल आस फिर पकड़ा गया। वह मदीना में लाया गया। रात को उस ने चुपके से जैनव से मुलाकात किई जिस ने उस को बचाने की प्रतिज्ञा किई। सुबह के नमाज के समय जैनब ने खिड़की से पुकार के कहा कि मैंने अबुल आस को बचाने की प्रतिज्ञा किई। यह सुन मुहम्मद ने अपने लोगों से कहा कि अल्लाह की कसम मैं इस विषय में कुछ नहीं जानता हूं पर अपने लोगों की प्रतिज्ञा को पूरी करना चाहिये। इस पर अबुल आस छोड़ दिया गया। वह मक्के को गया पर जैनब के प्रेम के कारण वह फिर मदीना में आकर मुहम्मदी हो गया। इस के एक साल पीछे जैनब मर गई। उस की बीमारी उन बदमाशों के मारने से हुई। उन बदमाशों के विषय में मुहम्मद ने कहा कि यदि उन में से कोई पकड़ा जावे तो उस को जीता जलाना चाहिये। पीछे उस ने इस हुक्म को बदला और कहा कि ईश्वर को छोड़ उचित नहीं है कि कोई आग के द्वारा सजा देवे यदि उन को पकड़ो तो तलवार से उनको मारो॥

एक बार सुरिया के रास्ते पर किसी बदवीन जाति के लोगों ने मदीनाके कुछ व्यापारियों को लूट लिया उन को सजा देने के लिये कुछ सिपाही भेजे गये। बदवीन लोग पकड़े गये उन की मुखिया एक बूढ़ी स्त्री थी। उस स्त्री के एक २ अंग में एक २ ऊंट को जोत के उन्हों ने ऊंटों को हांक के उस के शरीर को टुकड़े २ कर दिया। जैदने इस को कराया। जब उस ने इस को खबर मुहम्मद को सुनाई तब मुहम्मद ने उस को गले लगाकर उसे चूमा॥

एक वार आठ बदवीन मनुष्य मुहम्मदी हो गये। मदीना में वे बीमार रहे सो मुहम्मद ने उन को किसी ऊंट चराने वाले के पास भेजा कि वहां रहकर और ऊंटों का दूध पीके वे अच्छे हो जावें। जब वे अच्छे हो गये तब उनके मनों में लूटने की इच्छा पैदा हुई। उन्होंने ऊंटों को चुरा लिया और जब चराने वाले ने उन का पीछा किया तब उन्हों ने उसे मार डालके उस के अंगों को काटा। वे बदवीन पकड़ गये और जब वे मुहम्मद के साम्हने लाये गये तब उसने हुक्म दिया कि इन के हाथ पैर काटो और उन की आंखों को फोड़ो फिर जब तक वे न मरें तब तक उन के धड़ों को जमीन में डाल के उन में पैनी मेखें ठोको। पीछे मुहम्मद को यह शोच आया कि इस में अधिक क्रूरता है सो कुरान में यह आज्ञा है कि डाकूओं को हाथ पैर काटने से अधिक सजा न दी जावे॥

जब से मदीना के यहूदी लोग नष्ट किये गये तब से कुरान में मुहम्मद ने उन के विषय में और कुछ न लिखाया। एक वार जब नमाज हो रही थी तब लोगों ने लौटते हुए व्यापारियों की आवाज सुनी इस को सुन वे सब मसजिद से निकल कर देखने को दौड़े। इस पर मुहम्मद ने कुरान में ऐसों को डांटा। सुरा (६२) फिर एक वार कुछ लोग नशे में हो कर मसजिद में आये। इस पर मुहम्मद ने इन को डांटके कहा कि मदिरा, जूआ, खेलना, मूर्ति और टोना ये सब शैतान के काम हैं। सुरा (५) और मुहम्मदियों का नियम है कि शराबी कोड़े से मारा जावे पर यह नियम ढीला पड़ गया है॥

॥ चौबीसवां अध्याय ॥

मुहम्मद मक्के की यात्रा करता पर यात्रा पूरी न हुई। होदेइबिया की सन्धि, सन् ईस्वी ६२७ का मार्च महीना, हिजरी का छठवां साल॥

छः बरसों से मुहाजरिन लोगों ने मक्के को नहीं देखा था उन को मक्के में जाने की और काबा में इबादत करने की बड़ी लालसा थी, मुहम्मद का हुक्म था कि हर मुहम्मदी मक्के की और काबा की यात्रा करे उस ने कुराइश लोगों पर यात्रियों को रोकने का दोष लगाया मुहम्मद को मालूम था कि जिस आज्ञा को पालन करने का मौका नहीं मिलता वह आज्ञा ढीली पड़ती है। इस लिये उसने यह बिचार किया कि अवश्य है कि मैं अपने लोगों के साथ मक्के की यात्रा करूं, एक बार उसने स्वप्न में अपने को और अपने लोगों को मक्के के काबा में इबादत करते देखा, उसने अपने लोगों को यह स्वप्न बताया और ठहराया गया कि मक्के की यात्रा करनी चाहिये, समय पवित्र महीने का था जिस में लड़ाई मना थी॥

मुहम्मद चाहता था कि बहुत लोग जावें सो उसने उन बद्वीन लोगों को बुलाया जिन के साथ उसने संधि किई थी पर लूट की आशा न थी इस कारण से बद्वीन लोग बहाना करने लगे। मदीना के लोगों में से बहुत जाने चाहते थे। यात्री का पहिराव दो कपड़े का है। इसे पहिनकर मदीना के १५०० लोग निकले। पहिले मुकाम पर उन्हों ने लब्बैक लब्बैक (मैं हाजिर हूं हे प्रभु मैं हाजिर हूं) पुकारके अपने को यात्रा के लिये अर्पण किया। फिर बलि करने के लिये पशु ठहराये गये। इस प्रकार से सत्तर ऊंट ठहराये गये जिन में अबू जहल का ऊंट था। वह बेद्र में पकड़ा गया एक एक मनुष्य धनुष बान और एक २ तलवार लिये था। उन के आगे कुछ सवार चलते थे कि जोखिम का सन्देस देवें। मुहम्मद अपनी स्त्रियों में से एक को अर्थात ओम सलामा को अपने साथ लेगया॥

यद्यपि मुहम्मद यात्रा करने को आया तौभी मक्के के लोगों के मनों में शक था। वे हथियार बांध के उसे शहर में घुसने से रोकने के लिये निकले। यात्रियों को दो मंजिल पहिले ही इस की खबर उनको मिली। मुहम्मद से कहा गया कि कुराइश लोग बड़ी सेना लिये हुए रास्ते में हैं वे क्रूर

और मानो शेर का चमड़ा पहिने हुए हैं। वे अपनी स्त्रियां और बाल बच्चे साथ लिये हुए हैं। और किरिया खाते हैं कि हम मृत्यु तक मुहम्मद को रोकेंगे। इतने में मक्के के सवार देखने में आये और यह देखकर कि हम बिना लड़ाई किये आगे नहीं बढ़ सक्ते हैं मुहम्मद दहिने हाथ को घूम के होदेबिया नाम एक स्थान में आया जो पवित्र भूमि की सीमा पर है। वहां मुहम्मद की ऊंटनी खड़ी हो गई। लोगों ने कहा कि वह थक गई और उसे हांकने लगे पर मुहम्मद ने कहा कि ऐसा नहीं ईश्वर ने उसे रोका। एक पानी का सोता वहां मिला सो वे टिक गये॥

इस पर कुराइशों ने दूतों को यह पूछने के लिये भेजा कि आप किस अभिप्राय से आये हैं। उन के बीच दूत कई बेर भेजे गये कि अन्त में मुहम्मद ने कुराइश से बातें करने के लिये ओथमान को भेजा। ओथमान की बात सुनकर कुराइश लोगों ने कहा कि आप यदि काबा में जाके इबादत करने चाहें तो जा सक्ते हैं पर हम ने किरिया खाई है कि इस साल में हम मुहम्मद को शहर में पैर धरने न देंगे। यह बात बताने को ओथमान लौटा। बात चीत करते करते उस को देरी हुई जिस के कारण से मुहम्मदी लोग डरने लगे कि कहीं वह मार डाला न गया हो इस कारण से उन्हों ने आपस में बाचा बांधी कि हम मर भी जावें तौभी ओथमान को बचावेंगे। इस के थोड़ी देर बाद ओथमान लौटा॥

अन्त में कुछ कुराइश लोग मुहम्मद से सन्धि करने के लिये आये। मुहम्मद ने अली से सन्धि पत्र लिखने के लिये कहा। मुहम्मद ने कहा कि ऐसा लिखो कि अल्लाह रहमान रहीम के नाम से"। मक्केवाले ने उसे रोक के कहा कि ऐसा न लिखना अल्लाह को हम जानते हैं पर इस नाम से नहीं जानते हैं। मुहम्मद ने कहा कि अच्छा ऐसा लिखो कि "हे अल्लाह तेरे नाम से सन्धि पत्र लिखा जाता है मुहम्मद रसूल उल्लाह और फिर उसे रोक कर मक्केवाले ने कहा कि यदि आप रसूल उल्लाह होते तो हम आप से न लड़ते दस्तूर के स-

मान अपने बाप का नाम लिखो। मुहम्मद खुश हुआ और यह लिखा गया की " अबदल्लाह का पुत्र मुहम्मद और अम्र के पुत्र शोइल के बीच।" यह ठहराया गया कि दस बरस तक उनके बीच कोई लड़ाई न होवे। जिस के साथ जो जाति सन्धि करना चाहे सो बिना रोक टोक कर सके चाहे मुहम्मदियों के साथ चाहे मक्केवालों के साथ जो लोग मक्के में इसलामी हो जावें सो बिना रोक के मदीना को जा सकें। मुहम्मद एक दम बिना शहर में गये मदीना को लौटे पर दूसरे साल मदीना के लोग बिना हथियार बांधे मक्के की तीन दिन की यात्रा कर सकें॥

इस समय यात्रा पूरी करने की आशा न रही सो मुहम्मदियों ने उस स्थान में बलि किया और अपने सिर मुड़वाये। दस एक दिन ठहरके वे लौटने लगे। मदीना के लोग कुड़कुड़ाने लगे कि मुहम्मद ने यात्रा पूरी करने की प्रतिज्ञा करके उसे पूरी न की। मुहम्मद ने उनको समझाया कि जो बातें हुईं उन में हमारी बड़ी जय हुई। फिर सच है कि ईश्वर ने हमें काबा में जाने का हुकम दिया पर यह न कहा गया कि इसी साल में जाओगे। दूसरे साल में हम जाने पावेंगे। सचमुच जो सन्धि मक्केवालों से किई गई उसमें मुहम्मद कि बड़ी जय हुई। मक्केवालों ने उसे अपने बराबर माना और मुहम्मदियों को न सताने की प्रतिज्ञा किई। इस बात के कारण मुहम्मदियों की संख्या बहुत ही बढ़ गई। इस समय मुहम्मद १५०० मनुष्य लेकर आया पर दो बरस बाद दस हज़ार सिपाही लेकर वह मक्के पर चढ़ाई करने को आया॥

जब मुहम्मद मदीना में फिर पहुंचा तब उस ने उन बदवीन जातियों के लिये जो उस के संग नहीं गई। यह सज़ा ठहराई कि वे किसी लड़ाई में न जावें और लूट के भागी न होवें॥

॥ पचीसवां अध्याय ॥

मुहम्मद अपने नबी होने का सन्देश संसार के राजा लोगों के पास भेजता है।

सन् ईस्वी ६२८। हिजरी का सातवां साल॥

करीब इस समय मुहम्मद के मन में यह बात आई कि उचित है कि मैं संसार के राजा लोगों को सन्देश देऊं कि मैं ईश्वर का नबी हूं कि मूर्त्ति पूजा पाप है और कि ईश्वर एक है। किसी ने उस से कहा कि राजा लोग बिना छाप की चिट्ठी ग्रहण नहीं करते हैं। इस लिये उस ने चांदी की एक छाप बनवाई। इस छाप पर यह लिखा था अर्थात्" मुहम्मद रसूल उल्लाह" चिट्ठी लिख कर और छाप लगवा कर मुहम्मद ने उस को आस पास के सब राजाओं के पास भेजा॥

इस समय कान्सटेन्टीनोपल का महाराजा फ़ारसी लोगों पर जय पाकर लौट रहा था। वह यरूशलीम की यात्रा पेदल कर रहा था कि इस प्रकार से धन्यबाद करे। उस के पास चिट्ठी पहुंची। उस में लिखा था कि ईश्वर का नया नबी मानो यीशु और उसकी मा की मूर्त्ति पूजा छोड़ो अद्वैत ईश्वर के धर्म में आओ। महाराजा ने इस की कुछ चिन्ता न किई। बनी घस्सान के राजा हारिथ के पास जो चिट्ठी पहुंची सो महाराजा के पास भेजी गई और हारिथ ने आज्ञा मांगी कि मैं जाकर इस ढीठ मुहम्मद को सज़ा देऊं। पर महाराजा ने यह सोचकर कि यह मुहम्मद कोई बावला है इस बात को मना किया॥

फारस के राजा ने चिट्ठी को अनादर के सांथ फाड़ फूड़ फेक दिया। इस को सुन मुहम्मद ने कहा कि "इसी प्रकार से ईश्वर उसके हाथ से राज्य तोड़ेगा।,, यदि ये लोग इस समय मुहम्मदियों को तुच्छ न जानते तो उन के लिये अच्छा होता॥

मिसर के राजा ने दूत को आदर के साथ ग्रहण किया।

उत्तर में उस ने कहा कि "मैं जानता हूं कि एक नबी आने वाला है पर मेरा विचार है कि वह अरब में नहीं पर सुरिया में उत्पन्न होगा" उसने मुहम्मद के पास इनआम की तौर पर दो दासी, कुछ कपड़े और एक सफेद खच्चर भेजा। इस इनआम से मुहम्मद खुश हुआ। उन दो दासियों में से मरियम नाम एक सुन्दर थी। उसे मुहम्मद ने अपने लिये रख लिया। दूसरी को उसने हस्सन नाम एक कवि के पास भेजा। उस खच्चर को अरबी लोग बहुत सुन्दर समझते थे और मुहम्मद उस पर सवार हुआ करता था॥

येमेन देश के प्रधान ने मुहम्मद को माना पर येमामा के प्रधान ने जो एक ईसाई था कहा कि आप की बातें कैसी अच्छी हैं। मैं भी एक नबी हूं यदि आप मुझे अपने अधिकार में भाग देंगे तो मैं आप के साथ हो लेऊंगा। यह सुन मुहम्मद ने उसे स्राप दिया॥

अबीसीनिया के राजा के पास उस समय तक कुछ इसलामी शरण पाने के लिये रहे। उस राजा ने कहा कि मैं मुहम्मद को मानूंगा पर मैं मुहम्मद के पास खुद नहीं जा सक्ता हूं। अबीसीनिया में अबूसोफियां की बेटी थी। इस स्त्री का पति एक ईसाई था पर मर गया था। मुहम्मद ने राजा से यह बिन्ती किई कि अबूसोफियां की बेटी से मेरी शादी का बन्दोबस्त करके उसे मेरे पास भेज दीजिये। उस का नाम ओम हबीबा था। इस में मुहम्मद के लिये दो लाभ थे एक यह कि उस को एक और स्त्री मिली और दूसरी यह की इस शादी से वह अबूसोफियां का रिशतेदार हो गया। मुहम्मद आशा रखता था कि इस रिशतेदारी के करने से अबूसोफियां का बैर घटेगा। अबीसीनिया के राजा ने मुहम्मद कीइच्छा अनुसार किया और स्त्री के साथ अपने यहां के सब मुहम्मदियों को मुहम्मद के पास भेजा॥

॥ छब्बीसवां अध्याय ॥

खैबर को जीतना। सन् ईस्वी ६२८। हिजरी का सातवां साल ॥

जब मुहम्मद के लोग मक्के की यात्रा पूरी करने न पाये तब मुहम्मद ने उनसे प्रतिज्ञा किई कि थोड़े दिनों में हम किसी पर जय पाके बहुत लूट को पावेंगे। चार एक महीने तक इस प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिये मुहम्मद ने कुछ न किया। पर अगस्त महीने में उसने अपनी सेना इकट्ठी किई। मदीना के उत्तर की ओर सुरिया के रास्ते पर करीब एक सौ मील दूर खेबर नाम एक तराई थी जिस में कुछ यहूदी लोग रहते थे। उन्होंने मुहम्मद की कुछ हानि कभी न किई थी पर मुहम्मद यहूदी लोगों से ऐसा बैर करता था कि सभों को नष्ट करने चाहता था। फिर वे यहूदी लोग धनवान् थे और मुहम्मद जानता था कि यदि हम उनको जीत लेवें तो मेरे लोग लूट पाने से सन्तुष्ट हो कर मुझ पर न कुड़कुड़ावेंगे। मुहम्मद की सेना सोलह सौ सिपाहियों की थी। इन में एक सौ सवार थे। मदीना के आस पास के बद्वीन लोग इसमें शामिल होने चाहते थे पर मुहम्मद ने कहा कि मक्के की यात्रा करने से ये लोग मुकर गये सो मैं इन को अपने साथ न जाने देऊंगा। मुहम्मद अपनी स्त्रियों में से ओम सलमा को साथ ले गया ॥

खैबर की तराई बड़ी उपजाऊ थी। वहां के खेतों के बीच यहूदी लोगों के कई गढ़ थे। मुहम्मदियों की सेना बहुत जल्दी चलकर उन पर अचानक टूट पड़ी। यहूदियों को किसी बैरी का कुछ भी ख्याल न रहा। फजर जब वे काम पर निकलने लगे तब उन्होंने देखा कि एक बड़ी सेना हम पर चढ़ाई कर रही है। घबराकर वे गढ़ों के अन्दर भाग गये। वे बचाव की तैयारी कुछ करने न पाये। मुहम्मदी लोगों ने एक २ करके उनके गढ़ों को ले लिया। मुहम्मद पुकारने लगा कि अल्लाह अकबर खरीबत खैबर। फिर कहा कि हाय

उन लोगों को जिनके देश पर मैं टूट पड़ूं ॥

अन्त में सब से बड़े गढ़ के पास कुछ यहूदी लोग अपने प्रधान के साथ खड़े हो गये और ऐसी अच्छी तरह से लड़े कि मुहम्मदी लोग कुछ समय तक रुक गये। यहूदी थोड़े और मुहम्मदी अधिक थे इस कारण से यहूदी हार गये। मुहम्मदी लोगों के उन्नीस जन और यहूदियों के एक सौ जन मार डाले गये यहूदी क़ैदी इस शर्त पर छोड़ दिये गये कि वे अपना सब धन मुहम्मदियों को देकर देश से निकल जावें। यहूदियों का प्रधान किनाना नाम का था। उस पर दोष लगाया गया कि उस ने कुछ धन छिपा रखा है। किनाना ने कहा कि मेरे पास वह धन नहीं है पर एक यहूदी ने डर के मारे बताया कि एक जगह में कुछ छिपाया गया है। मुहम्मद ने सोचा कि और भी धन है सो उसने आज्ञा दिई कि जब तक वह न बतावे कि वह कहां छिपाया गया तब तक उसकी छाती पर आग लगाओ। इस कष्ट को सहते २ किनाना मर गया।

इससे थोड़े दिन पहिले किनाना की शादी सफिया नाम एक सुन्दरी से हो गई थी। किनाना के मरने पर मुहम्मद ने बिलाल को हुक्म दिया कि सफिया को लाओ। बिलाल उसे उठाके उस रास्ते से लाया जहां किनाना की लाश पड़ी थी लाश को देखकर सफि॰ा घबराई। मुहम्मद ने बिलाल को डांटा पर बिलाल ने कहा कि मैं उसे डराने के लिये उस तरफ से लाया। मुहम्मद सफिया से शादी करने चाहता था। सफिया इस से खुश थी और उसी जगह पर उन की शादी हो गई। मुहम्मद ६० बरस का और सफिया १५ बरस की थी॥

जैनब नाम एक यहूदिन थी जिस का बाप, भाई, और पति लड़ाई में मार डाले गये। उसने बदला लेने का यह उपाय निकाला कि एक बकरी के बच्चे को अच्छी तरह से पकाके उसे विष में भिगाया। इस को भेंट की तौर पर वह मुहम्मद के पास लाई। मुहम्मद ने अपने लिये एक

टुकड़ा रखके बाकी अपने मित्रों के बीच बांटा। जब वह खाने लगा तब एक निवाला मुंह में डालकर उसने पहिचाना कि इस में विष है। मुहम्मद पुकारने लगा पर बिशरा नाम उसका एक मित्र कुछ खा चुका था और मर गया। मुहम्मद के पेट में बड़ा दर्द होने लगा। जब तक मुहम्मद न मरा तब तक उसको इस विष के कारण से तकलीफ होती रही। उस जैनब को मुहम्मद के साम्हने लाकर लोगों ने पूछा कि तू ने यह क्यों किया। जैनब ने उत्तर दिया कि मुहम्मद ने मुझ पर बड़ी विपत्ति डाली है। मेरा बाप मेरे भाई और मेरा पति सब मार डाले गये हैं। मैं ने मन में कहा कि यदि वह नबी है तो वह एक दम पहिचानेगा कि इस में विष है यदि वह नबी नहीं है तो एक दुष्ट सतानेहारा मर जावेगा। कहते हैं कि जैनब मार डाली गई॥

अब खैबर और उस के आस पास का देश मुहम्मद के बश में आ गया। पिन्डखजूर, मधु, तेल अनाज, सोना, चांदी मणि, भेड़, बकरी, गाय, बैल, ऊंट, इन सभों की बहुत लूट मिली। यह सब दस्तूर के अनुसार बांटी गई पर ज़मीन और प्रकार से बांटी गई। उस का आधा भाग सरकार के लिये रखा गया। यह कुछ गरीब यहूदियों को अधियां पर दिई गई। बाकी मुहम्मद ने अपनी सेना के लोगों में बांटी॥ इस ज़मीन और धन के पाने से मुहम्मद धनवान् हो गया। उस ने अपनी एक २ स्त्री के लिये बन्दोबस्त किया कि उन को हर साल आमदनी से कुछ दिया जावे। उस की आमदनी से कुछ कङ्गालों के लिये भी ठहराया गया और बाकी पाहुन लोगों की पहुनाई के लिये और सरकारी काम के लिये ठहराया गया। अब से मुहम्मद न केवल अपनी शिक्षा से लोगों को अपनी तरफ खींचता था पर अपने धन से और अपनी सेना के द्वारा लोगों को अपने बश में कर सक्ता था॥

जब मुहम्मद खैबर से लौटा तब अबीसीनियां से कुछ मुहम्मदी लोगों को साथ लिये जाफर आया। जाफर की भेंट से मुहम्मद को बहुत खुशी हुई। जाफर अपने साथ अबूसो-

फियां कि बेटी ओम हबीब को लाया और इसके थोड़े दिन बाद मुहम्मद ने उस से शादी किई।

॥ सत्ताईसवां अध्याय ॥

मक्के की यात्रा पूरी किई जाती है।

सन् ईस्वी ६२९। हिजरी का सातवां साल।

मुहम्मद की उमर ६० बरस कि थी॥

खैबर को जीतने के पीछे मुहम्मद कुछ महीने तक मदीना में रहा। इन महीनों में कोई विशेष बात न उठी। कुछ सिपाही लोग इधर उधर भेजे गये और बहुत करके उन का काम सफल हुआ। उन के काम से मुहम्मद का नाम और अधिकार फैल गया॥

सन् ६२९ के फरवरी के महीने में वह समय आ गया जिस में ठहराया गया था कि मदीना के लोग मक्के की यात्रा कर सकेंगे। इस यात्रा पर दो हजार जन निकले। जैसे ठहराया गया एक २ जन के पास केवल धनुष बान और एक तलवार रही। कुराइशों के डर के कारण दूसरे लोगों के हाथ बहुत से हथियार भेजे गये और पवित्र भूमि की सीमा पर रखे गये जिसतें कि यदि कोई झगड़ा उठे तो उन को लड़ने के लिये हथियार मिल सकें। बलिदान चढ़ाने के लिये वे ६० ऊंट अपने साथ ले गये॥

जब मदीना के यात्री मक्के के पास पहुंचे तब शहर के सब लोग निकल कर और शहर को खाली छोड़ के तम्बुओं में पहाड़ों पर रहने लगे। वहां से वे देखते रहे कि मदीना के लोग क्या करेंगे। ७ बरस से मुहम्मद ने मक्के को न देखा था। जो लोग उस के सङ्ग मक्के से मदीना को भागे थे सो अब लौट के आनन्द से भर गये। जब काबा देखने में आया तब वे लबैक २ चिल्ला २ के दौड़ने लगे। मुहम्मद अपनी ऊंटनी पर बैठे हुए काबा के पास आया। अपनी लाठी से काले पत्थर को छूके

उसने सात बेर काबा की परिक्रमा किई। इतने में जो आदमी उस की ऊंटनी को हांकता था सो लड़ाई की पुकार करने लगा। मुहम्मद ने उसे रोकके कहा कि धीरे धीरे लड़ाई की पुकार के बदले में यह कहो कि अल्लाह को छोड़ कोई दूसरा नहीं। उस ने अपने नबी को संभाला और अपने लोगों को ऊंचा किया है उसी ने वैरियों की युक्ति को निष्फल किया है। यह सुन सब यात्री लोग ये बातें पुकारने लगे यहां तक कि सारी तराई उन के शब्द से गुंज उठी। काबा की परिक्रमा करके मुहम्मद सफ़ा और मरवा दो टेकड़ियों के बीच की यात्रा सात बेर किई। इस के पीछे बलिदान चढ़ाया गया। फिर अपने सिर को मुड़वाके उसने छोटी यात्रा को पूरी किई। दूसरे दिन को मुहम्मद काबा के पास जाके उसके अन्दर गया। यद्यपि उसमें अब तक मूर्त्तियां थीं तौभी मदीना के दस्तूर के अनुसार बिलाल ने छत पर चढ़के लोगों को नमाज पढ़ने के लिये बुलाया। जिस प्रकार से मदीना में उसी प्रकार से यहां काबा के पास मुहम्मद ने नमाज पढ़ाया॥

मुहम्मद के लिये काबा के पास एक चमड़े का तम्बू लगाया गया। मक्के के कई प्रधान लोग पहाड़ से उतरके उसके पास बातें करने को आये। मुहम्मद ने मेइमुना नाम एक स्त्री से शादी करने का बन्दोबस्त किया॥

अब तो ठहरे हुए तीन दिन हो चुके थे और कुराइश लोगों ने कहला भेजा कि आप का समय हो चुका आप चले जाइये। मुहम्मद ने कहा कि यदि मैं कुछ दिन ठहरके आप लोगों के बीच शादी करके आप लोगों के लिये जेवनार बनाऊं तो क्या हानि। कुराइश लोगों ने कहा कि ऐसा नहीं हम को आप के जेवनार की कुछ जरूरत नहीं है। आप चले जाइये। सो उसी दिन चलकर मुहम्मदी लोग आठ मील गये इस मुकाम पर मुहम्मद ने अपनी नई स्त्री को अपने तम्बू में ले लिया। यह मुहम्मद की आखरी शादी हुई। मेइमुना

मुहम्मद के मरने के पीछे पचास बरस तक जीती रही और मरने पर उसी जगह में गाड़ी गई जहां उन की शादी किई गई। इस समय दस स्त्रियां थीं एक मुहम्मद के मरने से पहिले मरी सो उस की मृत्यु के समय उस की नौ स्त्रियां और २ रखेली रह गईं। मुहम्मद ने ठहराया था कि हर मुहम्मदी चार स्त्रियां रख सक्ता है पर अपने कुरान में ठहराया कि नबी जितनी स्त्रियां चाहे उतनी रख सक्ता है। मुहम्मदी मनुष्य जितनी रखेली चाहे रख सक्ता है॥

इस के पीछे मक्के के कुछ प्रसिद्ध मनुष्य मदीना को जाकर मुहम्मदी हुए उन में से एक खालिद था जिस ने ओहद में मदीना वालों को हरा दिया॥

॥ अठाईसवां अध्याय ॥

मुता की लड़ाई।

सन् ईस्वी ६२९। हिजरी का आठवां साल॥

इस साल के अन्त में एक बड़ी लड़ाई हुई। सुरिया की ओर कुछ जातियां मुहम्मद के विरुद्ध हो गईं और मुता के प्रधान की आज्ञा से मुहम्मद का एक दूत मार डाला गया। इसका पलटा लेने के लिये मुहम्मद ने मदीना में ३००० सिपाहियों की सेना इकट्ठी किई। मुहम्मद ने सफेद झन्डा जैद के हाथ में देकर उसे आज्ञा दिई कि उस जगह पर जाकर जहां मेरा दूत मारा गया वहां के सब लोगों को मुहम्मदी होने की आज्ञा देओ यदि वे न मानें तो अल्लाह के नाम से तलवार को नङ्गी करके लड़ो मुहम्मद सेना के साथ थोड़ी दूर गया फिर उसे यह आशीष देकर कि अल्लाह तुम को जोखिम से बचावे और लूट से लदे हुए शान्ति से तुम्हें लौटावे शहर में लौटा॥

सरिया के लोग मुहम्मदी लोगों की सेना की खबर पाके घबरा गये। उन्हों ने जलदी सेना को इकट्ठी किया। उस

सेना में रोमी पलटन के कुछ सिपाही थे और उन का शतपति एक प्रसिद्ध योधा था। फिर इस सेना की खबर मुहम्मदी लोगों के पास पहुंची। बात यहां तक बढ़ाई गई कि कहते थे कि रोम का राजा आप लड़ाई को निकलता है। मुहम्मदी लोग सभा करके दो दिन तक विचार करते रहे कि हम लड़ें अथवा मुहम्मद के पास इसकी खबर भेज कर उसकी आज्ञा के लिये ठहरें। अन्त में गरम पक्ष के लोग प्रबल हुए उन्हों ने कहा क्या हम सिपाहियों की गिन्ती पर भरोसा रखते हैं अथवा अल्लाह की सहायता पर। हम या तो जय पावेंगे या शहीद होवेंगे। जब वे मृत्यु सागर के दक्खिन किनारे तक पहुंचे तब उन्होंने देखा कि हमारे सामने एक ऐसी सेना है जिसके देखने से घबराहट होती है मुहम्मदी लोग मुता तक लौट गये और वहां लड़ाई के लायक जमीन पाकर ठहर गये लड़ाई होने लगी पर जैद के सिपाही रोमी पलटन को रोक न सके जैद मार डाला गया और उस के पीछे जाफर मुहम्मदियों का अगुवा हुआ वह भी मार डाला गया और मुहम्मदी भागने लगे फिर खालिद सेना पति चुना गया। उस ने यह देखा कि अब हम जय नहीं पा सकते हैं सो रूमी पलटन को रोकने का कुछ यत्न न किया वह अपने लोगों को बचाने का यत्न करके उन्हें इकट्ठा करके मदीने को लौटा। मदीना के लोग उन्हें भगेडू कहके उन की ठट्ठों में उड़ाने लगे पर मुहम्मद ने यह रोक के कहा कि यह भगेडू नहीं हैं पर ऐसे मनुष्य हैं जो फिर के लड़ेंगे। जैद और जाफर की मृत्यू से मुहम्मद को बड़ा रंज था। वह इन दोनों के घरानों के पास गया कि शान्ति देवे और उन के साथ रोया। किसी ने मुहम्मद से पूछा कि आप क्यों रोते हैं मुहम्मद ने उत्तर दिया कि इस प्रकार का रंज मना नहीं है। मुहम्मदियों की हार के कारण उत्तर के लोग यहां तक साहस करने लगे कि उन को मदीना पर चढ़ाई करने का विचार था। मुहम्मद ने फिर एक सेना भेजी

जिस का सेना पति अमरू ठहराया गया। अमरू ने पूछ कर यह जान लिया कि जो सिपाही मेरे पास हैं सो बस नहीं हैं इस लिये उस ने मुहम्मद से मदद मांगी। मुहम्मद ने और सिपाहियों को भेजा और इस समय मुहम्मदी लोग जयवंत हुए। उत्तर की जातियां बश में किई गईं और मुहम्मद का नाम और अधिकार फिर बढ़ने लगा। इस के पीछे दूर दूर की जातियां मुहम्मद से सन्धि करने के लिये दूतों को भेजने लगीं ऐसे दूतोंको मुहम्मद बड़े आदर के साथ ग्रहण करता था और उन से इतनी बुद्धि के साथ व्यवहार किया कि लोग उस से खुश होने लगे। इन सब जातियों से इस शर्त पर सन्धि किई गई कि लड़ाई के समय वे मुहम्मद की मदद देने के लिये सिपाहियों को भेजें इससे यह नतीजा निकला कि मुहम्मद के बश में एक बड़ी भारी सेना आ-गई जिसके द्वारा वह दूसरों को बश में कर सका॥

॥ उन्तीसवां अध्याय ॥

मक्के को जीतना। सन् ६३० के जनवरी के महिने में॥
हिजरी का आठवां साल। मुहम्मद की उमर ६१॥

मुहम्मद ने खुरैश लोगों से संधि किई थी पर वह उस संधि के तोड़ने का मौका ढूंढने लगा। उस का बल यहां तक बढ़ गया कि वह समझता था कि अब मैं मक्के को जीत सक्ता हूं। सन्धि करने के दो बरस पीछे मुहम्मद को वह मौका मिला। मक्के के पास दो जातियां रहती थीं एक तो खोज़ा नाम की जो मुहम्मदी हो गई थी। दूसरी बेकरा नाम की जो खुरैश से मिल गई। पहिले से इन दो जातियों के बीच बैर था। जब एक मुहम्मद की और एक खुरैश लोगों की ओर हुई तब वे फिर आपस में लड़ने लगीं। बेकरा के लोगों ने कुछ खुरैश लोगों की सहायता से रात को चढ़ाई करके खोज़ा जाती के कुछ लोगों को मार डाला। खोज़ा लोग एक दम मुहम्मद के पास जाके बदला लेने के लिये सहायता मांगने लगे।

इन की बात सुनकर मुहम्मदने पहिचाना कि मेरा मौका आगया है कि मैं मक्के पर चढ़ाई करूं। उस ने खोज़ा लोगों से कहा कि यदि मैं आप लोगों का दुःख अपना दुःख समझके तुम्हें सहायता न देऊं तो अल्लाह फिर मेरी सहायता कभी न करे। तुम उधर बादल से पानी गिरते देखते हो उसी प्रकार से स्वर्ग से सहायता जल्दी उतरेगी॥

यह सुन कि बनी खोज़ा लोग मुहम्मद से मदद मांगने को गये हैं खुरैश लोग घबरा गये। उन्हों ने अबु सोफियां को भेजा कि वह बतावे कि जो किया गया सो हम लोगों की सलाह से नहीं हुआ पर मुहम्मद ने उस की कुछ न सुनी। यह देख कि मेरी सुनी नहीं जाती अबुसोफियां मसज़िद के आंगन के बीच खड़ा होकर पुकारने लगा कि हे सब लोगों मेरी सुनो मैं किरिया खाके प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं सभों को बचाके शान्ति से रखूंगा। पर मुहम्मद ने उत्तर में कहा कि तू ही कहता है हम लोग नहीं कहते हैं। अबु सोफियां निराश होकर चला गया। खुरैश लोगों ने देखा कि हमारी दशा खराब हुई है पर उन को मालूम नहीं था कि मुहम्मद एक दम हम पर टूट पड़ेगा॥

मुहम्मद ने अपने मन में ठहराया कि एक दम मक्के पर चढ़ाई करना चाहिये। यह बात छिपा के उस ने अपने मित्रों से भी कुछ न कहा। जितनों से उस ने सन्धि किई थी उन सभों के पास खबर भेज कर उस ने हुक्म दिया कि लड़ाई के लिये इकट्ठे हो जाओ। उस ने किसी से नहीं कहा कि किस से लड़ेंगे और धोखा देने के लिये कुछ सिपाहियों को दूसरी ओर भेजा। जब सब इकट्ठे हुए तब उस ने उन को बताया कि क्या अभिप्राय है पर सभों से कहा कि यह बात खुरैशों के कानों में न पहुंचे। उस ने रोज मस्ज़िद में यह प्रार्थना किई कि हे अल्लाह कोई भेदिया यह बात खुरैशों को न बतावे जब तक मैं अचानक उन पर टूट न पड़ूं तब तक उन की आंखें अंधी रहें॥

ऐसी बड़ी सेना मदीनावालों ने पहिले कभी नहीं देखी। दस हजार सिपाही इकट्ठे हुए। अपनी स्त्रियों में से मुहम्मद जैनब और ओमसलमा को ले गया। सेना ऐसी जल्दी चली कि एक हफ़्ते के अन्त में मक्के में पहुंचने को केवल एक मंजिल रहा। मक्केवालों को डराने के लिये उस रात को पहाड़ों पर दस हज़ार जगहों पर आग लगाई गई। यह देख कुरैश लोग जान गये कि हमारे लिये आशा नहीं है। मुहम्मद ने छिपके अब्बास के पास खबर भेजी। अब्बास मुहम्मद के पास आया। कुछ समय पीछे अबुसोफियां जो देखने को बाहर गया अब्बास को मिला। अब्बास उसे मुहम्मद के पास लाया। मुहम्मद ने उसे देखके कहा कि अरे अबुसोफियां क्या तू ने अब तक जान लिया है कि अल्लाह को छोड़ कोई दूसरा नहीं है। अबुसोफियां ने उत्तर दिया कि यदि कोई दूसरा होता तो अवश्य मेरी सहायता करता। फिर मुहम्मद ने कहा कि क्या तू मानता है कि मुहम्मद अल्लाह का नबी है। अबुसोफियां ने उत्तर दिया कि इस विषय में मेरे मन में शंका है। इतने में अब्बास ने कहा कि हाय तुझ पर यह शंका करने का कोई समय नहीं है। गर्दन को बचाने के लिये विश्वास करके मानो। यह सुन अबुसोफियां मान गया॥

सेना चढ़ाई करने पर थी सो मुहम्मद ने अबुसोफियां से कहा कि जल्दी जा कर अपने लोगों से कहो कि जो अबुसोफियां के मकान पर जावे सो मारा न जावेगा, और जो कोई अपने घर को बन्द करे सो बचेगा। जब अबुसोफियां ने ये बातें सुनाईं तब बहुत करके सब लोग या तो अबुसोफियां के घर पर या क़ाबा में गये। मुहम्मद की सेना चार भाग हो कर चार रास्तों से शहर में घुसी मुहम्मद ने दया करने की आज्ञा दिई। मक्केवालों ने रोकने का यत्न न किया केवल दक्खिन ओर खलीद के सिपाहियों को कुछ लड़ना पड़ा। उस तरफ जो लोग रहते थे सो मुहम्मद के विशेष बैरी थे और उन में कुछ थे जिन्हों ने बनीखोज़ा लोगों पर चढ़ाई किई थी। इन लोगो

ने मुहम्मदियों पर तीर चलाये । इस पर मुहम्मदी लड़ने लगे जिस से दो मुहम्मदी और अट्ठाईस मक्केवाले मारे गये। इस की आवाज सुन मुहम्मद ने पूछा कि मेरी आज्ञा क्यों तोड़ी गई। जब हाल उस को बताया गया तब उस ने कहा कि अल्लाह जो कुछ आगे से ठहरावे सो अच्छा है । सो शहर मुहम्मद के बस में आ गया ॥

सेना शहर के पास एक तराई में टिक गई । मुहम्मद का तम्बू अबुतालिब और ख़दिजा की कबरों के पास लगाया गया। मुहम्मद ने अपने तम्बू के पास अपना झण्डा लगाया। यह देखकर कि सब कुछ शान्त है मुहम्मद ने अपने तम्बू में जाकर कुछ आराम किया ॥

फिर उठ के वह क़ाबा को गया। प्रार्थना करने के पीछे उस ने वहां की एक२ मूर्ति की ओर इशारा करके आज्ञा दिई कि ये काट डाली जावें। जब होबाल की मूर्ति गिर गई तब मुहम्मद ने कहा कि सच्चाई आई है झूठ मिट गया है सूरा १७;२८। फिर चाबी मगांकर वह काबा के भीतर गया और वहां कुछ समय तक प्रार्थना में लगा रहा। जब प्रार्थना हो चुकी तब वह क़ाबा के दरवाजे में खड़ा होकर भीड़ को देखने लगा। वहां के चौकीदार को बुलाकर उस ने उस से कहा कि चाबी लेओ तू और तेरे सन्तान हमेशा इस घर के रक्षक ठहरें। फिर उस ने अब्बास से कहा कि हे अब्बास ज़म ज़म नाम कुए से यात्रियों को पिलाना आप का काम होवे । मैं आप को कोई पदवी नहीं देता हूं इस के पीछे क़ाबा की दीवाल पर जो तसवीरें थीं सो मिटाई गईं जब यह हो चुका तब क़ाबा के आंगन में भीड़ के लोगों ने नमाज़ पढ़ा फिर मुहम्मद ने सारे शहर में डोंड़ी पीटवाई कि किसी घर में कोई मूरती न रहे हर मूरती तोड़ दिई जावे। कुछ लोग पवित्र भूमि की सीमाओं के निशानों को सुधराने के लिये भेजे गये। इस से मालुम हुआ कि यद्यपि मुहम्मद मक्के की मूरती पूजा नाश करने का इरादा करता है तौभी वह उसे पवित्र शहर समझके उसकी पवित्रता

की रक्षा करने चाहता है। इस प्रकार से मक्के शहर की ओर अपना दया बताके उस ने मक्के के लोगों को अपनी ओर खींच लिया। मुहम्मद ने मक्के के विषय में कहा कि मेरी दृष्टि में तू पृथिवी का सब से मनोहर स्थान है। यदि तू मुझे न निकाल देता तो मैं तुझे कभी न छोड़ता। यह बात सुन मदीना के लोग डरने लगे कि मुहम्मद मदीना को न लौटेगा पर मुहम्मद ने यह कहके उनके डर को मिटाया कि ऐसी बात को अल्लाह न होने देवे। आप लोग जहां रहते हैं वहां मैं रहूंगा और वहां मैं मरूंगा भी॥

दस बारह जनों को छोड़ मुहम्मद ने मक्के के सब लोगों को क्षमा किया कि उन को सजा न दिई जावे इन दसों में से केवल थोड़े मार डाले गये। दो जन मुहम्मद की बेटी जैनब को सताने के कारण मृत्यु के योग्य ठहराये गये। इन में से एक भाग के बच गया। दो खूनी जो मदीना से मक्के में भाग गये और उन में से एक जन की एक रखेली जो कविता द्वारा मुहम्मद को सताती रही ये तीनों मार डाले गये॥

मक्के के लोगों पर मुहम्मद की दया बड़ी तारीफ़ के लायक है और उस से मुहम्मद को बहुत लाभ हुआ। सारे शहर के लोग उस का पक्ष करने लगे। जैसे मदीना में कई पक्ष थे जो मुहम्मद के विरोधी थे वैसे यहां नहीं था शहर के सब लोग एक मन के थे। थोड़े दिन पीछे दो हज़ार खुरैश सिपाही मुहम्मद की सेना में भरती होकर लड़ने को निकले॥

इस समय की गड़बड़ी में एक बात हुई जिस से साफ मालूम हुआ कि मुहम्मद मक्के की पवित्र भूमि के नियम को रखने चाहता था। गड़बड़ में बनी खोज़ा के लोगों ने मौका पाकर अपने कुछ बैरियों से बदला लेने में एक मनुष्य को मार डाला। दूसरे दिन जब सब लोग क़ाबा के पास इकट्ठे हुए तब मुहम्मद ने ये बातें कहीं। कि सचमुच जिस दिन को अल्लाह ने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया उसी दिन उस ने मक्के शहर को पवित्र ठहराया। यह शहर एक दिन के एक पहर को छोड़ मेरी दृष्टि में कभी अपवित्र न हुआ। हे बनी खोज़ा के लोगो लहू बहाने से

अपने हाथ को रोको। जिस को तुम ने मार डाला है उस के खून का दाम मैं ही देऊंगा पर इस के पीछे जो कोई खून बहावे उसी से पूछा जावे॥

मूर्तियों को तोड़ने के लिये आस पास के देश में सिपाही लोग भेजे गये। बहुत करके कोई रोकनेवाला नहीं था। किसी जाति ने खलीद का कुछ नुकसान किया सो उस ने बदला लेने के लिये उस जाति के कुछ कैदियों को मार डाला। यह सुन मुहम्मद ने स्वर्ग की ओर हाथ उठाकर कहा कि हे अल्लह इस में जो खलीद ने किया है मैं निर्दोष हूं। फिर उस ने अली को भेजकर उस जाति को मारे हुए मनुष्यों के खून का दाम दिया और लूट को लौटाया॥

मक्के को वश में करने से मुहम्मद की शक्ति यहां तक बढ़ गई कि वह सारे अरब देश को अपने वश में कर सका। क़ाबा का मालिक होकर वह उस में की पूजा की। रीतियां ठहरा सका और इस प्रकार से उस का हुक्म सारे अरबियों के धर्म्म पर चला॥

॥ तीसवां अध्याय ॥

तायफ पर की चढ़ाई। ६३० ईस्वी जनवरी से मार्च तक। हिजरी का आठवां साल॥

मक्के के पूरब में तायफ शहर है। उस के लोग जान गये कि मुहम्मद किसी मूर्ति को नहीं छोड़ेगा। यह शहर मक्के से करीब ७० मील दूर है। उस में एक मूर्ति थी जिस को आस पास की जातियां बहुत मानती थीं और जिस से शहर को बहुत फायदा हुआ। तायफ के लोगों ने यह विचार किया कि यदि हम देरी करें तो दूसरे समय में मुहम्मद हमें वश में कर के हमारी मूर्त को नाश करेगा यदि हम एक दम उस पर चढ़ाई करें तो आशा है कि उसे जीत कर हम बच जावें सो सेना इकट्ठी

करके वे मक्के की ओर निकले। यह सुन मुहम्मद उन से लड़ने को निकला। खुरैश लोग उस के संग गये सो मुहम्मद की सेना बारह हज़ार सिपाहियों की थी। इस सेना को देख अबू बकर उसे सराहने लगा और कहा कि आज सिपाहियों की कमी के कारण हम हार न जावेंगे॥

तायफ के लोग होनेइन की तराई में ठहर गये। वे लोग अपनी स्त्रियां बाल बच्चे झुण्ड माल साथ लिये हुए आये थे। इन सभों को उन्हों ने तराई को एक ओर रखा फिर सिपाही लोग थोड़ा आगे बढ़े। पश्चिम की ओर रास्ता एक सकरी जगह में दो पहाड़ों के बीच होके निकलता है। इस जगह में तायफ के सेनापति ने अपनी सेना को छिपा रक्खा। बड़े फजर मुहम्मदी सेना आगे बढ़ने लगी। मुहम्मद पीछे रहा और खलीद आगे था। मुहम्मदी सेना के उस सकरी जगह में पहुंचते ही तायफ के लोग उन पर टूट पड़े। सकेती के कारण केवल थोड़े मुहम्मदी सिपाही लड़ सके और थोड़ी देर में जो लड़ते थे सो हारके भागने लगे। इस पर सारी सेना घबराके भागने लगी। मुहम्मद चिल्लाने लगा कि कहां जाते हो लौटो २ पर शोर के कारण किसी ने उस को ना सुना। इतने में मदीने के कुछ सिपाही भागते हुए मुहम्मद के पास पहुंचे। उन्हें देख मुहम्मद ने अब्बास से कहा कि आप ज़ोर से चिल्ला सकते हैं आप उन से कहो कि हे मदीना के सिपाहियो पेड़ की बाचा के मनुष्यो सूरा बक्र के मनुष्यो (यह एक सूरा है जिस में वह बाचा लिखी है जो मदीनावालों ने मुहम्मद से बांधी कि हम मृत्यु तक आप की रक्षा करेंगे) यह सुन मदीना वाले ठहर गये। उन के ठहरने से बाकी भागनेवाले रुक गये और मुहम्मदियों की सेना फिर इकट्ठी किई गई। वे फिर लड़ने लगे और मुहम्मद किसी ऊंचे स्थान पर चढ़के लड़ाई को देखता रहा। वह देख कर चिल्लाने लगा कि अब भट्टी खूब गर्म हो गई। मैं अब्द अल मुतलिब के सन्तान का हूं। मैं वह नबी हूं जो झूठ नहीं बोलता है। एक मुट्ठी भर कंकर उठाके वैरियों की

ओर फेंककर पुकारा कि वे नष्ट होवें अल्लाह की कसम वे हार गये हैं। क़ावा के प्रभु की कसम वे भागते हैं अल्लाह ने उन को डराया है। थोड़ी देर में तायफ के लोग भाग गये। मुहम्मदियों ने उन का पीछा इतनी ज़ोर से किया कि तायफ की कुछ स्त्रियां और वालवच्चे भी मारे गये। स्त्रियों को और बच्चों को मारना मुहम्मद ने मना किया था॥

तायफ के कुछ सिपाही बचकर शहर में पहुंचे पर उन की स्त्रियां वालबच्चे और धन मुहम्मद के वश में पड़ा॥

६००० कैदी थे। इन को लूट समेत मुहम्मद ने दूसरी जगह में भेजा और उन की चौकीदारी करने को सिपाहियों को साथ भेजा सेना ने आगे बढ़के तायफ शहर को घेर लिया॥

होनेइन की लड़ाई में दूसरी लड़ाइयों की अपेक्षा मुहम्मदियों का अधिक नुकसान हुआ। मुहम्मद के विशेष मित्रों में से दस जन मारे गये। जंगली जातियों का अधिक नुकसान हुआ। दो जातियों के केवल दो चार जन बचे। इन के लिये मुहम्मद ने प्रार्थना किई कि हे अल्लाह इन को इस नुकसान के बदले में तू इनाम दे। कुरान में मुहम्मद इस घटना के विषय में कहता है कि यह इस लिये हुआ कि हम लोग बड़ी संख्या पर घमंड करते थे अंत में हम स्वर्गीय सेना की सहायता से जयवन्त हुए। देखो सूरा ९॥

तायफ शहर की दीवाल मजबूत थी। शहर में खाने पीने का सामान वहुत था। पहिले मुहम्मदी लोग दीवाल के नज़दीक गये। वहां तीर के द्वारा बारह जन मार डाले गये और वहुत घायल हुए जिन में आबू बकर का बेटा एक था। इस कारण से मुहम्मदी लोग कुछ हट गये। ओम सलमा और जैनब मुहम्मद के साथ तायफ को गई और उन के लिये तम्बू खड़े किये गये। उन के तम्बूओं के बीच मुहम्मद हर रोज नमाज पढ़ा करता था और उस जगह में पीछे तायफ की मसजिद बनाई गई। कुछ लोगों ने दीवाल को तोड़ने के लिये एक यन्त्र बनाया पर तायफवालों ने गला हुआ लोहा उस पर डालके

उसे जला दिया। तायफ के आस पास बहुत दाख की बाड़ियां थीं। शहर के लोगों को मनाने के लिये मुहम्मद ने हुक्म दिया कि ये बाड़ियां काट डाली जांय। शहर वालों ने कहा कि यह बड़ा अनुचित काम है सो मुहम्मद ने दाख की बाड़ियों को रहने दिया। फिर मुहम्मद ने कहा कि जितने गुलाम तायफ से भागेंगे उन सभों को मैं स्वतंत्र करूंगा। बीस गुलाम शहर से निकले और मुहम्मदी सेना में भरती हुए॥

दो हफ्ते तक मुहम्मदियों के यत्न से कुछ बन न पड़ा। सेना के लोग लूट को बांटने चाहते थे। यह देख मुहम्मद ने सभा बैठा के अपने अफसर लोगों की सलाह मांगी। एकने कहा कि यदि लोमड़ी बिल में है तो तुम वहां बैठो और वह अंत में मिलेगी। यदि तुम चले जाओ तो वह तुम्हारा कुछ नुकसान न करेगी। फिर मुहम्मद ने एक स्वप्न देखा और उस ने हुक्म दिया कि हम चलके लूट को बांटें॥

जब लूट बांटने का बन्दोबस्त हो रहा था तब एक बुढ़िया मुहम्मद के पास आके कहने लगी कि मैं हलीमा की बेटी हूं। आप के बचपन में मैं ने आप की सेवा किई। मुहम्मद ने उसे इनाम देकर विदा किया। यह देख उस स्त्री के जातवाले जो कैदियों में थे छुटकारा मांगने लगे। मुहम्मद ने उन की बिन्ती सुनी॥

जब मुहम्मद अपने तम्बू की ओर जा रहा था तब भीड़ के लोग उसे दबाके कहने लगे कि लूट को बांटो ऊंट और ढोर बांटो। मुहम्मद को अपनी रक्षा के लिये एक पेड़ के पास जाना पड़ा और भीड़ के एक मनुष्य ने उस के दुपट्टे को छुड़ा लिया। मुहम्मद ने पुकारके कहा कि हे मनुष्य मुझे मेरा दुपट्टा दे अल्लाह की कसम यदि ऊंट और ढोरों की संख्या बन के पेड़ों की संख्या के समान होती तौभी मैं सब को बांटता। फिर अपनी ऊंटनी के कुछ बाल उखाड़के और दिखाके उस ने कहा कि मैं इतना भी न रखूंगा। अपने पांचवें हिस्से को छोड़ सब कुछ तुम में बांटूंगा। यह सुन लोग शान्त हुए॥

लूट बांटी गई एक २ को उस का उचित भाग मिला। इस से अधिक मुहम्मद ने अपने भाग में से मक्के के प्रधान लोगों को बड़े २ इनाम दिये। इस को देख मदीना के लोग कुड़कुड़ाने लगे कि अब मुहम्मद अपने मक्केवालों से मिलकर हम लोगों को भूल गया है। यह सुन मुहम्मद ने उन कुड़कुड़ानेवालों को अपने पास बुलाकर उन से कहा कि क्या मैं ने आप लोगों का बड़ा उपकार नहीं किया है। उन्हों ने उत्तर दिया कि हां आप ने किया है। फिर मुहम्मद ने कहा कि यदि आप लोग चाहते तो कह सकते कि हे मुहम्मद आप एक नकारे हुए मनुष्य हमारे पास आये और हम ने आप को ग्रहण किया आप कंगाल थे और हमने आप को खिलाया। जब आप लोगों ने मेरे लिये इतना किया तब आप क्यों इस पर घबराते हैं कि जिस विश्वास में आप लोग स्थिर हैं उस विश्वास में दूसरों को स्थिर कराने के लिये मैं उन दूसरों को इनाम देता हूं। जब आप लोग लौटते समय अपने संग नबी को ले जावेंगे तब क्या आप इन के पास ये ढोर छोड़ने को तैयार नहीं हैं। मैं आप लोगों को कभी न छोड़ूंगा। अल्लाह मदीना के मनुष्यों को और उस के सन्तानों को सदा लों आशीष देवे। मुहम्मद ने इस प्रकार से उन को शान्त किया पर उस पर कुड़कुड़ाने से उन्हों ने एक भारी कुसूर किया इस लिये उन को डांटने के लिये नौवें सूरा में कुछ लिखा और यह भी लिखा गया कि लोगों को विश्वास में लाने और स्थिर कराने के लिये उन को इनाम देना उचित काम है॥

लूट के बांटने के पीछे मुहम्मद मक्के को गया और छोटी यात्रा को पूरा करके मदीने को लौट गया। इस के थोड़े दिन पीछे मक्के में मेला लगा पर मुहम्मद नहीं गया। अब तक मूर्ति-पूजक लोग क़ाबा में जाने से रोके नहीं गये॥

———:०:———

॥ इकतीसवां अध्याय ॥

मरियम और उस का बेटा सन् ई० ६३०-६३१।

हिजरी के नौव साल तक फतीमा को छोड़ मुहम्मद की सब बेटियां मर गईं करीब इस समय उस के एक बेटा हुआ। मिसर के राजा ने मुहम्मद के पास इनाम की तौर पर दो दासियां भेजी थीं। इन में से मुहम्मद ने एक को जिस का नाम मरियम था अपने लिये रक्खा मरियम पहिले एक ईसाइन थी पर अब मुहम्मदी हो गई होगी उस के लिये शहर के किनारे पर मुहम्मद ने एक घर बन-वाया मुहम्मद उस के पास जाया करता था। जब देखा गया कि वह गर्भवती है तब जिस दाई ने खदीजा की सेवा किई थी वही मरियम की सहायता के लिये बुलाई गई। मुहम्मद के ताईफ़ से लौटने के थोड़े दिन बाद मरियम एक पुत्र जनी। मुहम्मद को बड़ा आनन्द हुआ उस ने अपने पुत्र को अबिराम नाम दिया। सातवें दिन को एक बकरा काटा गया और मुहम्मद ने अपने सिर को मुंडवाया। फिर उस बाल के वज़न के बराबर उस ने चांदी को कंगालों में बांटा। पीछे वह बाल जलाया गया॥

मुहम्मद रोज बच्चे को देखने के लिये जाया करता था उस की दूसरी स्त्रियां मरियमपर जलने लगी एक दिन मुहम्मद बच्चे को लेकर उसे अयेशा को दिखाया। मुहम्मद ने कहा कि देखो उस के चेहरे का रूप मेरे सरीखा है। अयेशा ने कहा कि मुझे ऐसा मालूम नहीं होता। मुहम्मद ने कहा कि यह क्या बात है क्या तुम नहीं देखती हो कि वह कैसा सुन्दर और मोटा है। अयेशा ने कहा कि कोई भी बच्चा यदि इस के बराबर दूध पीता तो मोटा होता। सो मुहम्मद की स्त्रियां जलने लगी।

एक दिन जब हफ़सा की पारी आई कि मुहम्मद उसके साथ रहे तब हफ़सा अपने पिता के यहां रही। जब वह लौटी तब उसने देखा कि मरियम मेरे घरमें मुहम्मद के साथ है। इस पर हफ़सा बहुत क्रोधित हुई मुहम्मद ने बिन्ती किई कि इस के विषय में किसी से कुछ न कहो यदि तुम कुछ न कहो तो मैं फिर मरियम के पास न जाऊंगा। पर हफ़सा चुप न रही उसने अयेशाको यह बात बताई वह गुस्सा करने लगी। बात यहां तक फैल गई कि मुहम्मद की सब स्त्रियां उस से नाराज़ हुईं। इस अवसर में मुहम्मद ने कहा कि स्वर्ग से हुक्म आया है कि तुम मरियम को मत छोड़ो। इस हुक्म में मुहम्मद की स्त्रियां डांटी जाती हैं और यह भी कहा गया कि यदि वे तौबा न करें तो डर है कि वे त्यागपत्र के द्वारा अलग न किई जावें और उन की जगह पर आज्ञाकारी स्त्रियां रक्खी जावेंगी॥

इस के पीछे मुहम्मद अपी सारी स्त्रियों को छोड़ो एक महीना भर मरियम हीके साथ रहा। इस बातके कारण अबुबाकर और ओमर को बड़ी शर्म हुई कि एक दासी के लिये मुहम्मद हमारी बेटियों को छोड़ता है। पीछे मुहम्मद नेअपनी स्त्रियों को क्षमा करके उनके साथ रहने लगा। देखो सुरा ६६। इस सुरा में इस बात का पूरा बयान है॥

मुहम्मद अपने बेटे को बहुत ही प्यार करता था पर किसी कारण से वह बीमार हुआ। कुछ दिन पीछे मालम हुआ कि बच्चा बच नहीं सक्ता है यह देख मुहम्मद बच्चे को अपनी गोद में लेकर रोने लगा। लोगों ने उसे शांत करने चाहा और कहा कि आप दूसरों को विलाप करने से रोकते हैं। मुहम्मद ने कहा कि इस प्रकार के विलाप को मैं नहीं रोकता हूं पर जो लोग विलाप में मृतकों की झूठी तारीफ करते हैं उन को मैं डांटताहूं हे अबिराम २ यदि मैं न जानता कि सब को मरना है और यदि मुझ को पुनरुत्थान की आशा न होती तो मैं अधिक विलाप क-

रता । उसके कहते ही अविराम भर गया । मरियम को शान्ति देकर मुहम्मद अर्थी के पीछे कबरस्थान को गया । उस ने वहां प्रार्थना किई और जब लोग कबर को भर रहे थे तब वह देखता रहा । पीछे उसने अपने हाथ से मिट्टी को बराबर करके उस पर पानी डालने की आज्ञा दिई । उसने कहा कि जब तुम कबर को भरते हो तो खबरदारी से करो क्योंकि उससे दुःखित मन को शान्ति होती है । इससे मृतक को न नुकसान है न लाभ पर जो जीते हैं सो उससे शान्ति पाते हैं ॥

———:o:———

॥ बत्तीसवा अध्याय ॥

तेबुक की लड़ाई । ताईफ का वश में आना ।

सन् ईस्वी ६३० , हिजरी का ९ वां साल ।

होनेन की लड़ाई के पीछे मुहम्मद के जीते जी और कोई भारी लड़ाई न हुई । जंगली जातियों को वश में रखने के लिये कई बार कुछ सिपाही भेजे गये । इन लड़ाइयों में से केवल एक बयान करने के योग्य है । यह देख कि मुहम्मदी लोग बलवन्त हो रहे हैं और कि वे हमारे देश के लोगों को लूटा करते हैं रूमी राजा ने आज्ञा दिई कि सूरिया के लोग मुहम्मदी लोगों को रोकने के लिये एकट्ठे होवें । इस बात को बहुत बढ़ाके लोगों ने उसे मदीना में सुना था । यद्यपि दिन गर्मी के थे और पानी की कमी थी तौभी मुहम्मद ने लड़ने की आज्ञा दीई और सेना को एकट्ठी किया । जंगली जाति के लोग लड़ने से इनकार करने लगे और मदीना के भी लोग बहाना करने लगे । लोग जानते थे कि इस लड़ाई में हमें बड़ी तकलीफ होगी । मदीना के कुछ लोगों को मुहम्मद ने छुट्टी दिई पर जंगली जातियों को मुहम्मद ने

चलने का हुक्म दिया। खास मुहम्मदी लोग बड़ा परिश्रम करने लगे कि तैयार होवे और सामान के लिये उन्हों ने बहुत धन दिया। अब्दुला इब्न श्रोवे जाने को तैयार हुआ पर मुहम्मद ने अन्त में उस से कहा कि आप मदीना में रह सकते हैं। अपने घराने की रक्षा के लिये मुहम्मद ने अली को मदीना में छोड़ दिया। इस में यह भी बात थी कि यदि शहर में मुहम्मद की गैरहाज़िरी में कोई गड़बड़ होवे तो अली उस को दबा सकेगा॥

कहते हैं कि उस सेना में तीस हज़ार सिपाही थे। वे उत्तर की ओर करीब तीन सौ मील गये और तेबुक में ठहरे क्योंकि वहां सभों के लिये पानी और पेडों की छाया थी। वहां पहुंचकर उन्हों ने मालुम किया कि रूमी लोग हम पर चढ़ाई करने वाले नहीं हैं पर केवल अपनी रक्षा का बन्दोबस्त करते हैं मुहम्मद वहां ठहरा पर खलीद को दुमा तक भेजा। मुहम्मद ने तेबुक के आस पास के यहूदी और ईसाई लोगों से कर देने की शर्त पर संधि किई। योहन नाम अयला का प्रधान जो ईसाई था वह मुहम्मद के पास आया। मुहम्मद ने उसे आदर के साथ ग्रहण किया और कहा कि आप यदि कर देवें तो आप लोग अपने ईसाई धर्म में बने रह सकते॥

खलीद ने दुमा को जीत लिया और उस के प्रधान को पाकर के उसे मुहम्मद के पास लाया। वह प्रधान ईसाई धर्म को छोड़ मुहम्मदी हो गया। मुहम्मद तेबुक में कई हफ़्ते तक रह कर मदीना को लौटा। वहां आकर उसने उन लोगों को जो उस के साथ नहीं गये बहुत ही डांटा। इस विषय में सुरा ९ को देखो। कुछ लोगों ने मुहम्मद के पास भेंट लाकर क्षमा पाई। कुछ लोगों को सख्त सज़ा दिई गई विशेष करके तीन जनों को जो इस विषय में अधिक दोषी थे। उन के विषय में यह ठहराया गया कि उन के साथ कोई भी कुछ व्यवहार न करे। उन की स्त्रियां और बाल बच्चे उनसे अलग रहें। यह हाल पचास दिन तक होता रहा तब मुहम्मद ने उन का अपराध क्षमा किया॥

इस के थोड़े दिन बाद अब्दुला इब्न ओबे मर गया मदीना में वह मुहम्मद का सब से बड़ा बैरी था ' तौभी मुहम्मद ने उस की अर्थी के पीछे जाकर उस की कब्र पर प्रार्थना कर उसे सच्चा इसलामी माना। इस के मरने पर मुहम्मद के बैरियों में कोई प्रसिद्ध मनुष्य मदीना में न रहा। यह देख मदीना के जो लोग इसलामी न थे सो भी मुहम्मद को मानने लगे॥

करीब इस समय ताईफ़ मुहम्मद के वश में आया। मुहम्मद के सिखलाने से जंगली जातियां ताईफ़ के लोगों को हमेशा सताती रहीं। वे ताईफ़ के लोगों के जानवरों को चुराते थे यदि ताईफ़ का कोई आदमी अकेला बाहर जाता तो वह मार डाला जाता। इस सकेती में ताईफ़ के लोगों ने मुहम्मद के पास भेजा। उन के एलची लोग आदर के साथ ग्रहन किये। गये उन के लिये मसज़िद के पास तंबू खड़ा किया गया और सुबह शाम वे इसलाम की शिक्षा पाते थे। पहिले यह बताया गया कि तुम्हें हर मूर्ति को तोड़ना पड़ेगा। उन्हों ने कहा कि इस के लिये हम तो तैयार हैं पर यदि हम एक दम ताईफ की मूर्ति को तोड़ें तो शहर के लोग बलवा करेंगे। तीन साल तक उसको रहने दीजिये और इतने में लोग आप की शिक्षा से उसके तोड़ने के लिये तैयार होंगे। मुहम्मद ने कहा कि एक दिन भी मैं उस को रहने न देऊंगा। फिर वे मांगने लगे कि हमें रोज नमाज पढ़ना न पड़े क्योंकि थोड़े दिन हुए हमारे शहर में एक मनुष्य जो नमाज़ पढ़ता था सो मार डाला गया। फिर कहा कि आप अपने आदमियों को भेज कर मूर्ति को तोड़ दीजिये क्योंकि हम यह नहीं कर सकते हैं। मुहम्मद ने कहा कि अच्छा मूर्ती को तोड़ने के लिये हम आदमी भेज सकते हैं पर नमाज़ पढ़ना यह तो जीवन मरण की बात है क्योंकि बिना प्रार्थना का धर्म व्यर्थ है। मदीना के एक आदमी ने जाकर उनकी मूर्ति को काट डाला। यह देख ताईफ की स्त्रियां बिलाप करने लगीं। ताईफ को छोड़ और किसी जगह के लोगों ने मूर्ति के तोड़ने के कारण बिलाप न किया॥

॥ तैंतीसवां अध्याय ॥

अबु बकर के साथ मदीना के लोग मक्के की यात्रा करते हैं।
मुहम्मद मूर्तिपूजक लोगों से लड़ाई करने की आज्ञा देता है ।
सन ईस्वी ६३१ । हिजरी का ९वां साल ।

मक्के के मेले का समय फिर आया। जब से मुहम्मद ने मक्के को वश में किया तब से वह वहां नहीं गया था। इस का कारण यह था कि यात्रियों में बहुत मूर्ति पूजक थे। इस समय भी मुहम्मद नहीं गया पर उसने अपने मन में यह ठाना कि अब से मूर्ति पूजक लोग मक्के की यात्रा न करने पावेंगे। मुहम्मद का अधिकार यहां तक बढ़ गया था कि वह इस प्रकार का नियम चला सका। जब मेले में कोई मूर्ति पूजक न जावे तब मुहम्मद के लिये यात्रा करना उचित होगा। इस साल में मदीना से करीब तीन सौ यात्री गये। उन का अगुवा अबुबकर था।

उन के निकलने के दो चार दिन बाद मुहम्मद ने कहा कि अल्लाह ने मुझे मूर्ति पूजक लोगों के विषय में हुक्म दिया है। इस के विषय में सुरा ९ को देखो। इस हुक्म को क़तई जवाब कहते हैं। उस में लिखा है कि चार महीने बाद मुहम्मदियों और अविश्वावसियों के बीच हर प्रकार का सम्बन्ध टटेगा। जब तक वे इसलामी न हो जावें तब तक उन से लड़ना है। कोई काफिर फिर क़ाबा के पास न आने पावे। यह ख़बर सुनाने के लिये अली मक्के को भेजा गया। मेले के बड़े दिन को अली खड़ा होकर सब लोगों के सामने ये बातें सुनाईं यह मीना की तराई में किया गया। सुरा ९ की कुछ बातें सुना कर अली ने उन का अर्थ बताया। उस ने कहा कि मुझे यह हुक्म है कि मैं तुम को बताऊं कि कोई अविश्वासी (काफीर) स्वर्ग में न पहुंचेगा। इस समय से आगे कोई मूर्ति पूजक मक्के की यात्रा न करे न कोई नंगा होकर काबा की परिक्रमा करे। जिन मूर्ती

पूजकों के साथ सन्धी किई गई है उस सन्धी के ठहराये हुए दिन तक यह मानी जावेगी फिर बन्द होगी। चार महीने ठहराये गये हैं जिन के अन्दर तुम शान्ती के साथ अपने घरों को लौट सको पर उस के पीछे तुम को अल्लाह और रसुल की तरफ़ से क़तई जवाब है॥

भीड़ के लोग ये बातें सुन कर अपने २ घरों को चले गये और अरब देश के छोर तक ये बातें सुनाई गईं। इन से सब लोगों को मालूम हुआ कि अब से अरब देश में मूर्ति पूजा बन्द है और इस दिन से इस देश में इसलाम ही धर्म ठहरेगा॥

इस समय से भी यहूदी और ईसाई लोगों के विषय में कुछ बातें ठहराई गईं। अपने काम के आरंभ में मुहम्मद ने यहूदी और ईसाई लोगों को सराहा और उन के धर्मपुस्तक से अपने धर्म के बहुत प्रमाण निकालने चाहता था। फिर कुछ समय तक वह उन के विषय में चुप रहा। अब वह उन को दोषी ठहरा के कहता है कि यदि वे मुहम्मदियों के अधीन होकर मासूल देवें तो रह सकते नहीं तो नहीं। सुरा ९ को देखो। इस प्रकार से मुहम्मद यहूदी और ईसाई लोगों से बहुत मदद पाकर और उनकी शिक्षा से अपने धर्म में बहुत सी बातें मिला कर उन को छोड़ देता है। यह ऐसा है मानों कोई सीढ़ी के द्वारा ऊंची जगह पर चढ़कर फिर सीढ़ी को गिरा देवे। पर यहां एक भेद है। मूर्ति पूजकों को हर प्रकार से नष्ट करना है। मासूल देने पर भी उन को रहने देना उचित्त नहीं है। हां यदि वे इसलामी हो जावें तो बच सकते हैं। पर ईसाई और यहूदी लोग यदि आधीन होकर मासूल दिया करें तो अपने धर्म में रह सकते हैं॥

सचमूच यह नियम आरम्भ में अरब देश ही के लिये ठहराया गया पर पीछे जब मुहम्मदी लोग अरब से बाहर जा के दूसरे देशों को जीतने लगे तब उन्हों ने यह ठहराया

॥ चौंतीसवां अध्याय ॥

अन्य २ जातियों का मुहम्मद के अधीन होना ॥

सन् ईस्वी ६३० और ६३१। हिजरी का ९ वां और १० वां साल मुहम्मद की उमर ६२, ६३ ॥

जिस काम में मुहम्मद ने अपना हाथ लगाया था वह काम अर्थात कि मैं अरब देश की मूर्तिपूजा को नष्ट कर के उस के सब लोगों को अपने दीन में लाऊं पूरा होने पर था। इस का प्रमाण इस में दिखाई देता है कि अरब की हर तरफ से लोग अपने को मुहम्मद के वश में करने के लिये मदीना में आने लगे। मक्के को वश में करने से और क़ाबा के अधिकारी होने से मुहम्मद ने सारे अरब का अधिकारी होने के लिये अपना रास्ता खोल दिया। यद्यपि कुराइश लोग अपने को सारे अरब के अधिकारी नहीं बताते थे तौभी वे सारे अरबी लोगों के लिये कुछ बातें ठहराते थे। जैसे कि पवित्र महीनों का बन्दोबस्त करना आदि। अरब के सब लोग मानते थे। कि मक्के के अधिकारी हम से बड़े हैं। फिर मुहम्मद ने धर्म के अधिकार को और सरकारी अधिकार को एक में कर दिया। बिना एक को माने कोई मनुष्य दूसरे को नहीं मान सकता था अर्थात बिना इसलामी सरकार को माने कोई इसलामी धर्म को नहीं मान सकता था और बिना इसलामी धर्म को माने कोई मुहम्मदी सरकार को नहीं मान सकता था ये दोनों एक में ऐसी दृढ़ता से बांधे गये कि अलग न हो सके। यह ठहराया गया कि हर इसलामी अपनी आमदनी का कुछ भाग इसलामी धर्म के खर्च के लिये देवे। यह भाग ज़कात कहलाता है इस से अधिक जो कोई इसलामी अपनी खुशी से देवे तो उस को सदाक़त कहते हैं। जो मासूल अन्य लोगों से वसूल किया जाता है खिराज कहलाता है ॥

जो २ लोग अपने को मुहम्मद के आधीन करते थे उन से मुहम्मद ज़कात लेता था। इसे वसूल करने को मुहम्मद अपने कर्मचारियों को भेजा करता था। मुहम्मद के अधिकार का सब से बड़ा प्रमाण यह है कि वहां के लुटेरे लोग भी ज़कात दिया करते थे ॥

ताईफ़ के वश में आने से मुहम्मद का नाम बहुत बढ़ गया। हिजरी के ९ वें साल में येमेन बराइन, येमाना, ओमान ये देश मुहम्मद के वश में आये। दक्षिण की ओर से हद्रमौत के प्रधान और उत्तर की ओर से बेनी तय के प्रधान खुद मदीना में आये कि मुहम्मद से सन्धि करें। मदीनः में अरब के हर प्रकार के प्रसिद्ध लोग रहने लगे। मुख्य जगहों में मुहम्मद ने कुर्सातियारों को ठहराया जो मुहम्मद की ओर से सरकारी काम चलावें और उन के पीछे शिक्षक लोग भी जाते थे जो लोगों को इसलामी धर्म की बातें सिखलाते थे॥

कुछ लोग बड़ी धूम धाम के साथ मदीनामें मुहम्मद से मुलाकात करने को आये पर मुहम्मद ने अपनी ओर से कुछ धूम धाम न किई। कभी२ ईसाई लोग भी मुहम्मद से सन्धि करने को गये। मुहम्मद ने उन को अकसर करके आदर के साथ ग्रहण किया और कोई२ ईसाई अपने धर्म को छोड़ ईसलामी हुए। एक बार गुसल करके मुहम्मद ने उस मैले पानी को कुछ ईसाइयों को देकर कहा कि तुम जाके अपने गिरजे घर को तोड़के उस की ज़मीन पर यह पानी डालके वहां मसजिद बनाओ। किसी दूसरे ईसाई जाति से उसने कहा कि तुम ईसाई रहने चाहते हो तो रहो पर अपने बच्चों को बपतिस्मा मत देओ। जब नज़रान से ईसाई लोग मुहम्मद के पास आये तब उन का मुहम्मद से वाद विवाद हुआ। अखिर को मुहम्मद ने कहा कि आओ हम किरिया खावें कि जो झूठा है सो ईश्वर की ओर से स्रापित होवे। उन्हों ने उत्तर दिया कि हम आप के साथ किरिया न खावेंगे पर मासूल देकर आप से सन्धि करेंगे। उन का बिबाद यीशु के ईश्वरत्वा के विषय में हुआ॥

नज़रान की मूर्तिपूजक जातियां खालिद के हाथ से वश में किई गईं। वे लोग इसलामी हो गये॥

———:o:———

॥ पौंतीसवां अध्याय ॥

मुहम्मद आख़िरी वार मक्के की यात्रा करता है।
सन ईस्वी ६३२ के मार्च महीने में। हिजरी का दसवां साल
मुहम्मद की उम्र ६३ साल॥

मक्के की यात्रा का समय फिर आया। इस समय वहां न कोई मूर्ति न मूर्तिपूजक रहा सो मुहम्मद जा सका। यह विदाई की यात्रा कहाती है क्योंकि यह आख़िरी वार है कि मुहम्मद मक्के को गया। हिजरी के समय से इस समय तक उस ने बड़ी यात्रा न किई। केवल छोटी यात्रा किई यह एक ही वार हुआ कि मुहम्मद ने अधिकारी की तौर पर मक्के में यात्रा की पूरी रीति और व्यहारों को माना। इस लिये जो कुछ उस ने इस समय किया सो सारे इसलामियों के लिये नमूना है और वे छोटी से छोटी बातों में भी उस की नकल करते हैं॥

अपनी सब स्त्रियों को और यात्रियों की बड़ी भीड़ को साथ लिये हुए मुहम्मद मदीना से रवाना हुआ। वे धीरे २ चले। वलिदान के लिये उन के साथ एक सौ ऊंट गये। रास्ते में जहां २ मसजिद बनी थीं वहां २ मुहम्मद ने अपने लोगों के संग इबादत किई। मक्के से एक छोटी मंज़िल की दूरी पर वह ठहर गया। सुबह को गुसल करके और अपनी ऊंटनी पर चढ़ वह शहर में गया। क़ाबा के पास जाके उस ने अपने हाथ उठाकर उस पवित्र स्थान पर अल्लाह की आशीष मांगी। फिर क़ाबा को और शफा और मरवा को जाकर वह अपने तम्बू में आराम करने के लिये लौटा॥

दुज़ुल हिज्ज के सातवें दिन को मुहम्महद ने उन लोगों को जो क़ाबा की परिक्रमा करने और ज़मज़म कुए से पानी पीने को इकट्टे हुए व्याख्यान सुनाया। आठवें दिन को बड़ी भीड़ के साथ वह मिना को गया। मिना करीब ६ मील दूर था। वहां दस्तूर के अनुसार प्रार्थना करके वह रात को रहा। बड़े फ़जर आगे बढ़के वह अरफातके पास पहुंचा। इस पहाड़ पर चढ़ वह

अपनी ऊंटनी पर से लोगों को सुनाने लगा कि यह तराई पवित्र है और इस पहाड़ तक यात्रा का हद है। फिर प्रार्थना करके उस ने क़ुरान की बातें सुनाईं जिस के अंत में उस ने कहा कि आज मैं ने तुम्हारे लिये धर्म्म को पूरी रीति से तैयार किया है और ठहराया है कि इसलाम तुम्हारा धर्म्म होवे। देखो सूरा ५॥

यह दिन उस महीने का नौवां दिन था और वह अरफात के पास रीति व्यहार को मानने में बिताया गया। शाम को मुहम्मद लौटने लगा और चंद्रमा के उजियाले में थोड़ी दूर गया बड़े फ़जर उठकर उस ने आज्ञा दिई कि स्त्रियां और बालबच्चे जल्दी आगे बढ़ें कि भीड़ में वे दब न जावें। फिर उस ने लोगों से कहा कि सूर्य्य के उदय होने से पहिले अक़बा की टेकरी में पत्थर न फेंकना। मुहम्मदी लोग कहते हैं कि यह पत्थर फेंकने का दस्तूर इस प्रकार से आरम्भ हुआ कि इब्राहीम ने वहां शैतान को भागाने के लिये पत्थर फेंका॥

दसवें दिन को फ़ज़र के समय पानी पड़ा पर मुहम्मद अपनी ऊंटनी पर चढ़ कर चला चलते २ वह यह पुकारता गया कि हे अल्लाह मैं हाजिर हूं हे अल्लाह मैं हाजिर हूं, हे अल्लाह तुझ को छोड़ कोई दूसरा नहीं है। हे अल्लाह मैं हाजिर हूं राज्य महिमा और आशीष तेरी हो। हे अल्लाह मैं हाजिर हूं इन में तेरा कोई साथी नहीं है। हे अल्लाह मैं हाजिर हूं जब तक वह मिना में न पहुंचा तब तक वह यों ही पुकारता रहा। वहां उस ने पत्थर फेंका। फिर पशुओं को काटकर और अपने सिर को मुड़वाकर उस ने बड़ी यात्रा को पूरी किया॥

मुहम्मद मिना में तीन दिन रहा। हर शाम को उस ने ठहराये हुए स्थानों में पत्थर फेंका। महीने के ग्यारहवें दिन को उस ने मिना में लोगों को एक आख़िरी व्याख्यान सुनाया। उस ने कहा कि तुम एक दूसरे को न मार डालो न एक दूसरे का माल चुरा लो। बाप का धन उस की मृत्यु पर उस के लड़के का होवे। फिर कहा कि तुम्हारी स्त्रियों पर तुम्हारा दावा है और तुम पर तुम्हारी स्त्रियों का भी दावा है। स्त्रियों को

चाहिये कि वे पतिव्रता रहें और ढीठ न होवें। यदि वे पतिव्रता न होवें अथवा ढीठ होवें तो तुम उन को किसी कमरे में बन्द कर सकते हो और कोड़े भी मार सकते हो पर सख़्ती से नहीं। यदि वे योग्य चाल चलें तो उन को उचित रीति से खाने को और पहिनने को देओ। अपनी स्त्रियों से अच्छा बर्ताव करो क्योंकि वे बन्धुओं की तौर पर तुम्हारे साथ रहती हैं। फिर गुलामों के विषय में उस ने कहा कि जो खाना तुम आप खाओ और जो कपड़ा तुम आप पहिनो वैसे ही उन को खिलाओ और पहिनाओ। यदि वे कसूर करें तो उन को बेचो क्योंकि वे अल्लाह के हैं और उन को कष्ट देना अनुचित है॥

फिर उस ने कहा कि तुम एक भाईबन्धु हो। आज मैं ने अपने काम को पूरा किया। मैं ने तुम्हारे बीच ऐसी आज्ञा छोड़ दी है जिस को समझना सहज है। अर्थात् अल्लाह की किताब और व्यवस्थाएं जिन को तुम यदि दृढ़ता से मानो तो तुम कभी भूल में न पड़ोगे। फिर ऊपर दृष्टि करके वह पुकारने लगा कि हे अल्लाह मैं ने तेरा बचन सुनाके अपनी सेवकाई पूरी किई है। भीड़ के लोगों ने यह सुन चिल्ला के कहा कि सचमुच आप ने पूरी किई है। फिर मुहम्मद ने कहा कि हे अल्लाह मेरी विन्ती सुन साक्षी दे कि मैं ने अपनी सेवकाई पूरी किई॥

इतना कहके मुहम्मद ने लोगों को विदा किया। महीने के बारहवें दिन को मुहम्मद मक्के में जाकर और क़ाबा की परिक्रमा करके जमजम कुए से पानी पिया। फिर क़ाबा के अन्दर जाके उस ने प्रार्थना किई। वह थका हुआ था सो अपने तम्बू में गया। तम्बू को जाते समय उस ने प्यास के मारे एक आदमी से कुछ नबीध मोल लेकर पिया। नबीध पिण्ड खजूर और पानी से बनता है। कोई २ यात्री यह समझते हैं कि यदि हम नबीध न पावें तो यात्रा पूरी न होगी॥

मक्के में और तीन दिन रहकर मुहम्मद मदीना को लौटा॥

———— :o: ————

॥ छत्तीसवां अध्याय ॥

तीन बिरोधी सन्। ईस्वी ६३२ हिजरी का ११ वां साल ॥

इस समय के करीब अरब के सब लोग मुहम्मद को मानते थे पर तीन प्रधान उठे जो उसे मानने नहीं चाहते थे। ये तीन बताते थे कि हम ईश्वर के नबी हैं। ये लोग मुहम्मद की मृत्यु के थोड़े दिन पहिले उठे। एक नेजद के बनी असद का प्रधान तोलेइहा नाम का था। दूसरा अरब देश के बीच के येमामा देश का प्रधान मोसेइलम नाम का था। इन दोनों से मुहम्मद को कुछ तकलीफ न हुई पर मुहम्मद की मृत्यु के पीछे उन्हों ने बलवा मचाया। एक बार मोसेइलाम ने मुहम्मद के पास कहला भेजा कि आप मुझ को देश बांट कर दीजिये। उस के दूत लोगों ने मुहम्मद से बिन्ती किई कि ऐसा किया जावे। मुहम्मद उन को चुप करके कहने लगा कि यदि दूत लोगों को मारना अनुचित न होता तो मैं इसी दम तुम्हारे सिरों को कटवाता। उन को लौटाके मुहम्मद ने मोसेइलम से कहला भेजा कि तेरी चिट्ठी जिस में झूठ और अल्लाह की निन्दा है मेरे सामने सुनाई गई है। सचमुच दुनिया अल्लाह की है और वह अपने जिस दास को देने चाहे उसे देता है। मुहम्मद की मृत्यु के पीछे येमामा की लड़ाई में मोसेइलम मार डाला गया। तोलैहा भी मुहम्मद की मृत्यु के पीछे इसलामियों से लड़ा पर खालिद ने उसे बश में किया और वह इसलाम की सेना में भरती हुआ ॥

तीसरा विरोधी येमेन का असवद था। वह येमेन का पर्दावाला नबी कहलाता था। हिजरी के दसवें साल में बलवा करके उस ने मुहम्मद के मुख़तियारों को भगा दिया। साना शहर के प्रधान को मार डालके और उस की स्त्री को अपने लिये लेकर उस ने अपने को स्वतन्त्र कर दिया। यह बलवा फैल गया और मुहम्मद को मालूम न था कि कितना नुक़सान हुआ। उस ने अपने लोगों को यह सलाह दिई कि या तो घात लगवाके असवद को मरवा डालो या बड़ी सेना इकट्ठी कर

उस से लड़ो। पर बीच में यह हुआ कि असवद् घमंड में आकर अपने सहायक लोगों को जिन की सहायता से वह स्वतन्त्र हुआ। तुच्छ जानने लगा और उन की निन्दा किई ये लोग नाराज़ होकर मुहम्मदी लोगों से मिल गये असवद् की स्त्री ने भी उन की सहायता किई कि वे घात लगाकर उसे मार डालें। मुहम्मद् की मृत्यु के समय के करीब वह मार डाला गया ॥

॥ सैंतीसवां अध्याय ॥

मुहम्मद् की बीमारी और मृत्यु ॥
सन् . ईस्वी ६३२ के जून महिने में हिजरी का ११ वां साल ।
मुहम्मद् की उमर ६३ ॥

मक्के की आख़िरी यात्रा करने के दो महीने पीछे मुहम्मद् सूरिया पर चढ़ाई करने की आज्ञा दिई। मुता की लड़ाई में जो हार हुई उस का बदला अब तक लिया नहीं गया फिर सूरिया देश की सोमा पर जो ईसाई और मूर्तिपूजक जातियां रहती थीं उन को वश में करने का इरादा था। ओसामा को बुलाकर मुहम्मद ने उस को आज्ञा दिई कि उस स्थान को जाकर जहां तेरा बाप मार डाला गया उस का सत्या-नाश करो। देखो इसी लिये मैं ने तुझे सेना पति ठहराया है। बड़े फजर उस पर टूट पड़ो और वह आगसे जलायाजावे। देरी न करो नहीं तो तेरे पहुंचने से पहिले तेरी खबर उन के पास पहुंचेगी। यह हुक्म देने के एक दिन बाद मुहम्मद को बुखार हुआ पर तीसरे दिन को वह यहां तक अच्छा हुआ कि इस ने अपने हाथ से झंडा को तैयार कर के उसे ओसामा के हाथ में दिया। देते समय मुहम्मद ने कहा कि इस झंडे के नीचे अल्लाह के नाम से लड़ो इस प्रकार से तुम काफिरों को नष्ट करोगे ॥

मुहम्मद हिजरी के ग्यारहवें साल के तीसरे महीने में बीमार हुआ यह सन ईस्वी ६३२ के मई महीने की २७ तारीख़ को हुआ। इस से पहिले मुहम्मद केवल एक बार सख्त बीमार हुआ। कहते हैं कि उस समय कुछ यहूदियों ने मुहम्मद के कुछ बाल पाकर उन्हें किसी कुए में रखा इस कारण से वह बीमार हुआ। यह जान कर मुहम्मदी लोगों ने जादू को मिटा ने का उपाय किया जिस से मुहम्मद अच्छा हुआ। उस विष से जो उस ने खैबर में खाया उस को दुःख हुआ करता था। मुहम्मद ने सोचा कि उस विष से यह दर्द मेरे कमर में हुआ करता है। किसी स्त्री ने कहा कि यह दर्द विष से नहीं है पर फेफड़े की किसी बिमारी से है। मुहम्मद ने उत्तर दिया कि ऐसा नहीं वह बीमारी शैतान की ओर से है और अल्लाह अपने नबी पर ऐसी बीमारी को कभी आने न देगा॥

उस की आखिरी बीमारी के आरम्भ में वह कुछ समय तक अपने दस्तूर के समान अपनी स्त्रियों के पास पारी २ से रहता रहा। एक बार रात को नींद नहीं आई सो एक नौकर लेकर वह कबर स्थान में जाकर बहुत समय तक ध्यान में लगा रहा। फिर वह मृतकों से यों बोलने लगा कि सचमुच मैं ने और तुम ने वह पाया जो अल्लाह ने देने को कहा। धन्य तुम हो। उन की दशा से जो रह जाते हैं तुम्हारी दशा अच्छी है क्योंकि दुःख रात के अंधेरे के समान है जो अधिक पर अधिक होता जाता है। हे अल्लाह इन पर जो यहां गाड़े गये हैं दया कर। इतना कह के वह घर लौटा। फ़जर को अयेशा के घर के पास जाकर उस ने अयेशा का कहरना सुना। मुहम्मद ने कहा कि हे अयेशा तुझे नहीं मुझे कहरना चाहिये। फिर कहा कि क्या तू मुझ से पहिले मरने चाहती है कि मुहम्मद ही मुझे कपड़े में लपेट के मुझे गाड़ देवे। अयेशा ने कहा कि यह दूसरे को होवे न कि मुझ को मैं आप का अर्थ समझती हूं। मेरी मृत्यु पर आप किसी दूसरी सुन्दरी को मेरे घर में लाने चाहते हैं। मुहम्मद ने उत्तर नहीं दिया पर बीमारी से अशक्त हो कर मैमूना के घर में गया। बुखार फिर जोर करने लगा सो मुहम्मद ने अपनी स्त्रियों को बुला कर कहा कि तुम

देखती हो कि मैं बहुत बीमार हूं। मैं तुम्हारे पास पारी से नहीं आ सकता हूं। तुम्हे अच्छा लगे तो मैं अयेशा के घर में रहूंगा। वे खुश हुईं सो अली और अब्बास की सहायता से वह अयेशा के घर में गया। अयेशा इस समय करीब बीस बरस की थी। यद्यपि उस ने बीमारों की सेवा पहिले कभी न किई थी तौभी होशियारी और प्रेम के साथ उस ने मुहम्मद की सेवा किई॥

कुछ दिन तक यद्यपि बुखार न उतरा तौभी मुहम्मद मसजिद में जाकर इबादत करता रहा। एक हफ्ते के बाद उस के सुनने में आया कि लोग कुड़कुड़ाने लगे हैं कि मुहम्मद ने बूढ़ों को छोड़ एक जवान अर्थात ओसामा को सेना पति ठहराया है मुहम्मद ने समझ लिया कि मेरी बीमारी बढ़ती है सो उस ने ठाना कि मैं अभी लोगों को मसजिद में समझाऊंगा। उस ने हुक्म दिया कि सात कुओं से सात मशक पानी लाओ कि मैं गुसल कर के लोगों के पास जाऊं। जब वह नहा रहा था तब लोग मसजिद में इकट्ठे हुए और उन में कोई २ रोते थे। नमाज़ के समय वह मसजिद में गया और नमाज़ के पूरे होने पर वह लोगों के सामने बैठ गया। उस ने कुड़कुड़ानेहारों को डांटा और ओसामा के गुण और योग्यता बताई। उस ने कहा कि जैसे मैं ने उस के पिता को प्यार किया वैसे इस को भी प्यार करता हूं इस लिये उस के साथ योग्य बरताव करो क्योंकि वह सब से अच्छे लोगों में से एक है। फिर कुछ ठहर के वह कहने लगा कि सचमुच अल्लाह ने अपने एक सेवक को चुनने दिया कि इस वर्तमान जीवन में रहे या उस में प्रवेश करे जो अल्लाह के साथ है। उस दास ने उस जीवन को चुना है जो अल्लाह के साथ है। लोगों ने एक दम इस का अर्थ न समझा पर अबु बकर समझके रोने लगा। मुहम्मद ने अबु बकर से कहा कि आप न रोइये। फिर कहा कि मसजिद का हर किवाड़ बन्द किया जावे केवल वह खुला रहे जो अबु बकर के मकान का है॥

इस परिश्रम से मुहम्मद अधिक बीमार हुआ। दूसरे दिन जब उस ने नमाज़ पढ़ने को जाने चाहा तब नहीं जा सका सो उस ने हुक्म दिया कि अबु बकर नमाज़ को चलावे। इतना कह कर वह बेहोश हुआ। फिर होश में आके वह जान गया कि मेरा हुक्म अबु बकर को बताया नहीं गया सो वह नाराज़ हुआ। अयेशा उसे समझाने लगी पर मुहम्मद ने कहा कि तुम सब यूसफ के समय की मूर्ख स्त्रियों की नाईं हो। मेरा हुक्म मानो। मुहम्मद कमज़ोरी के कारण कुछ काम न कर सका। वह सूरिया पर चढ़ाई करने की चिन्ता करता रहा और कहा करता था कि ओसामा की सेना जल्दी चले॥

जून की ६ तारीख़ को बुखार अधिक ज़ोर करने लगा। उस को बहुत दर्द था इस को देख ओम सलमा एक बार चिल्लाने लगी। मुहम्मद ने उसे चुप करके कहा कि काफिरों को छोड़ कोई ऐसे नहीं चिल्लाता है। अयेशा ने एक बार कहा कि हे नबी यदि हम में से कोई इस प्रकार से कहरती तो आप हमें डांटते। मुहम्मद ने उत्तर दिया कि हां सच तो है पर मैं तुम में से दो की गर्मी से जलता हूं। यह सुन किसी ने कहा कि तो आप को दूना इनाम मिलेगा। मुहम्मद ने उत्तर दिया कि हां अल्लाह हर दुःखित विश्वासी के पापों को ऐसे अलग करता है जैसे कि पेड़ों से जाड़े के दिनों में पत्ते गिरते हैं। ओमर ने आके मुहम्मद के माथे पर अपना हाथ रखा पर उसे जल्दी खींच कर कहा कि आप का बुखार कितना तेज है मुहम्मद ने कहा कि हां पर रात को मैं अल्लाह की तारीफ़ में सत्तर सुरा बोला ओमर ने कहा कि आप आराम क्यों नहीं करते हैं क्योंकि क्या अल्लाह ने आप के पाप पहिले और पिछले दोनों को क्षमा नहीं किया मुहम्मद ने कहा कि क्या मैं उस की सेवा में लगा न रहूं॥

इतवार को जो जून की सात तारीख थी वह बहुत कमज़ोर रहा और कभी २ बेहोश हुआ। ओसामा सेना से आ कर उसे चूमा पर मुहम्मद बोल न सका केवल अपने हाथों को ओसामा

के सिर पर आशिष की तौर पर रक्खा। एक बार जब वह बेहोश हुआ तब उस की स्त्रियों ने उसे कुछ दवाई पिलाई जिस के विषय में अबिसीनिया के लोगों से उन्हों ने सीखा था। होश में आकर उस ने पूछा कि क्या करती हो। उन्हों ने बताया सो उस ने कहा कि यह दवाई एक खराब बिमारी के लिये है जिस को अल्लाह मुझ पर कभी आने न देगा। जैसे तुमने मुझे यह पिलाया है वसे तुम सभों को अब्बास को छोड़ पीना पड़ेगा। सो उन स्त्रियों ने मुहम्मद के सामने एक दूसरे के मुह में दवाई डाली॥

आपस में बातें करती २ वे अबिसीनिया के एक गिर्जे घर के विषय में बातें करने लगीं। दो स्त्रियां थीं जिन्हों ने उसे देखा था और बताती थीं कि वह बहुत ही सुन्दर है और उस की दिवालों पर सुन्दर तसबीरें लगी हैं। यह सुन मुहम्मद ने नाराज हो कर कहा कि ये मनुष्य हैं जो अपने सन्त लोगों की कबरों के ऊपर गिर्जा घर बनाते हैं और तसबीरों से उन्हें शोभायमान करते हैं वे सृष्टि भर में सब से खराब हैं। फिर बिस्तर को फेंक कर वह पुकारा कि हे अल्लाह यहूदी और ईसाइयों को नष्ट कर। ऐसे लोगों पर अल्लाह का कोप भड़के जो अपने नबियों की कबरों को पूजा के स्थान ठहराते हैं हे अल्लाह मेरी कबर कभी पूजी न जावे अरब भर में एक ही धर्म होवे फिर ओमर को देख कर उस ने कहा की स्याही कलम लाओ कि मैं तुम्हारे लिये कुछ लिखूं कि जिस के मनाने से तुम कभी सत मार्ग को न छोड़ोगे। ओमरने कहा कि वह बकता है स्त्रियों ने कहा कि आओ हम पूछे कि जाने कि वह होश में है कि नहीं। उन्हों ने इस का अर्थ पूछा पर वह नहीं जानता था कि क्या पूछती हैं। उस ने कहा कि रहने दो मेरी दशा उस दशा से अच्छी है जिस के लिये तुम मुझे बुलाते हो। फिर अयेशा को हुक्म दिया कि कुछ रुपया कंगालों को दिया जावे। वह सो गया और जब जागा तब पूछने लगा कि रुपया बांटा गया। उन्हों ने कहा कि अब तक नहीं सो उस की आज्ञा से अयेशा ने रुपया उस के हाथ में दिया

और मुहम्मद ने कहा कि यह अमुक २ को देओ। फिर उस ने कहा कि मैं शांत हूं सचमुच यह धन लेकर अल्लाह के पास जाना अच्छा न होता॥

इतवार की रात भर बुखार ज़ोर से चढ़ा रहा। लोगों ने उसे यह कहते सुना कि हे मेरे प्राण तू आराम के लिये अल्लाह कोछोड़ और कहीं क्यों जाता है। सोमवार की फ़जर को कुछ आराम हुआ और उस की ताकत कुछ अधिक हुई। मसजिद नमाज़ पढ़नेवालों से भर गई। अबु बकर उन का हादी था। वे पढ़ रहे थे कि बीच में अयेशा के घर का किवाड़ खुला और मुहम्मद मसजिद में आया। वह एक नौकर की सहायता से चलता था। लोगों ने उठ के उस के लिये रास्ता छोड़ दिया। उस ने कहा कि अल्लाह ने मुझे प्रार्थना में आराम दिया है। आवाज़ सुन अबु बकर ने समझा कि इस का क्या कारण है सो अलग हो गया कि मुहम्मद नमाज़ को चलावे पर मुहम्मद ने इशारा कर के कहा कि आप नमाज़ को पूरा कीजिये। महम्मद ज़मीन पर बैठ गया। नमाज़ के पूरे होने पर अबु बकर मुहम्मद से कुछ समय तक बातें करके अपनी किसी स्त्री के पास जाने की आज्ञा मांगी। आज्ञा पाकर वह चला गया॥

मुहम्मद ने मसजिद में लोगों से कुछ समय तक बातें किईं। उस ने ओसामा को चलने की आज्ञा दिई। फिर कहा कि हे फतीमा मेरी बेटी और तू सफ़िया वही काम करो जिस से तू अल्लाह के यहां ग्राह्य हो क्योंकि मझे तुम को बचाने का कोई अधिकार नहीं है। यह कह कर वह अयेशा के घर में लौट गया॥

वह बहुत थका था। यह देख अयेशा ने जमीन पर बैठ कर अपनी गोद में मुहम्मद का सिर रख लिया। वह अधिक कमजोर होने लगा। कुछ पानी मांग कर उस ने अपना मुंह धोके यह प्रार्थना किई कि हे अल्लाह मृत्यु की पीड़ा में मेरी सहायता कर। फिर तीन बार कहा कि हे जबरैल नजदीक आ फिर वह अपने हाथ पर और शरीर पर फूंकने लगा। अयेशा उस का हाथ दबाने लगी। पर महम्मद ने धीमी आवाज से

कहा कि अपना हाथ रोक दबाने से मुझे कुछ लाभ न होगा। फिर कहा हे अल्लाह मुझे क्षमा कर स्वर्गीय संगति में मुझे मिला स्वर्ग अनन्त। क्षमा। धन्य स्वर्ग्य संगति। फिर चुप हुआ। अयेशा की गोद में उस का सिर भारी हुआ अरब का नबी मर गया॥

अयेशा ने उस के सिर को तकिया पर रखा फिर दूसरी स्त्रियों के साथ विलाप करने लगी। वह दो पहर के समय के करीब था। एक घन्टा पहिले मुहम्मद मसजिद में लोगों से बातें कर रहा था। अब वह मौत के बश हो ठंडा पड़ा है॥

—————:0:—————

॥ अड़तीसवां अध्याय ॥

मुहम्मद को मट्टी देना। सन ईस्वी ६३२ के जून महीने की ८ और ९ तारीख़॥

मुहम्मद की मृत्यु का सन्देश पाकर अबु बकर मसजिद को जल्दी लौटा। वहां ओमर भीड़ को समझा रहा था कि मुहम्मद मरा नहीं पर बेहोश है और फिर होश में आके सब काफिरों को देश से मिटा डालेगा। अबु बकर अयेशा के घर में गया। वहां घुटने टेक कर उसने मुहम्मद को चूमा और कहा कि जीवन में मेरा प्यारा मृत्यु में भी मेरा प्यारा मुझ को आप माता पिता से भी प्यारे हैं। फिर थोड़ा उठ के वह मुहम्मद के चेहरे को ताकता रहा। वह बोला हां मेरा मित्र मेरा चुना हुआ तू मरा है। तू तो अल्लाह को इतना प्यारा है कि वह तुझे जीवन का प्याला फिर पीने को न देवे। फिर मुहम्मद को चूम के और उस के सिर को कपड़े से ढांप के बाहर गया। वहां उस ने कुरान की कुछ आयतें बोल कर ओमर को चुप कर के लोगों को बताया कि सचमुच मुहम्मद मरा है॥

इतने में कुछ लोग आके कहने लगे कि शहर के लोग आपस में अमीर चुनने का इरादा करते हैं। अबु बकर और ओमर ने जल्दी आ कर शहर के लोगों को रोका। लोगों के बीच झगड़ा होने पर था। कोई २ कहते थे दो अमीर होना चाहिये एक खुरैशों के लिये और एक हम मदीना वालों के लिये। अबु बकर ने उन को चुप कर के कहा कि यह कभी न हो सकेगा हम अमीर लोग हैं खुरैशों को छोड़ अरब के लोग किसी को न मानेंगे। मौका देख कर ओमर ने अबु बकर का हाथ पकड़ के कहा कि क्या मुहम्मद ने आप को नमाज पढ़ाने के लिये न चुना। आप जिस को मुहम्मद ने सब से अधिक प्यार किया आप हमारे मालिक हैं आप को मानने के लिये हम वाचा बांधेंगे। यह सुन दूसरे लोग ओमर के समान वाचा बांधने लगे और इस प्रकार से अबु बकर खलीफा ठहराया गया॥

रात को अली और ओमर कुछ दूसरों की सहायता से मुहम्मद की लोथ को गाड़ने के लिये तैयार किया कबर अयेशा के घर के अन्दर ही खोदी गई दूसरे दिन लोग उसे देखने को आये। वे लोथ को देख कर और थोड़ी प्रार्थना कर के दूसरी तरफ से निकल जाते थे। अबु बकर और ओमर एक संग आये और लोथ के सामने खड़े हो कर यह प्रार्थना किई कि हे अल्लाह की नवी शान्ति तुझ को मिले। अल्लाह की दया और आशीष तुझ पर होवे। हे अल्लाह हम साक्षी हैं कि जो बचन तेरे नवी पर प्रगट किया गया सोई उस ने हम पर प्रगट किया कि जब तक अल्लाह ने अपने धर्म को जय न कराई तब तक मुहम्मद अल्लाह के लिये लड़ता रहा। उस ने हम को अपनी ओर खींच लिया और सब विश्वासियों पर दया किई। उस ने धर्म का बचन कभी दाम के लिये न बेचा। यह सुन सब लोगों ने आमीन २ कहा जब पुरुष लोग मुहम्मद को देख चुके तब स्त्रियां आईं और बच्चे लोग भी उसे देखने को आये॥

उस दिन को मसजिद में लोगों ने खलीफा होने के लिये अबु बकर को ग्रहण किया। उस ने लोगों को इस प्रकार से समझाया कि हे लोगों यद्यपि मैं तुम लोगों में से सब से अच्छा नहीं हूं तौभी मैं तुम्हरा खलीफा हूं यदि मैं भला काम करूं तो मुझ से लगे रहो यदि मैं बुरा करूं तो मुझे समझाओ। फिर उस ने प्रतिज्ञा किई कि मैं बिना पक्षपात के न्याय के साथ अधिकार रखूंगा। इस के बाद वह लोगों को समझाने लगा कि तुम लोग अल्लाह के लिये लड़ना न छोड़ना क्योंकि जो लड़ने को छोड़े उस को अल्लाह नीचा करेगा। जिन बातों में मैं अल्लाह और उस के नबी की बातें मानूं उन्हीं बातों में मुझे मानो जिन बातों में मैं उन को न मानूं उन में मुझे मत मानो फिर नमाज़ पढ़के लोग विदा हुए॥

शाम को मुहम्मद कबर में रखा गया। ईंटों से कबर पक्की बनाई गई। मरने पर ओमर और अबु बकर भी मुहम्मद के पास गाड़े गये। अयेशा अपनी मृत्यु तक कबर के बाजू में एक कमरे में रही। आज तक हाजी लोग महम्मद की कबर को देखने के लिये आते हैं॥

———:o:———

सूची पत्र ।

विन्ती है कि यदि छापने में कहीं गलती हुई हों तो पढ़नेवाले क्षमा करें दो गलती हम बताने चाहते हैं।

२८ पृष्ट पर नौवें अध्याय का पहिला शब्द " मदीना " नहीं पर " मक्के " होना चाहिये।

६३ पृष्ट पर १४ वीं लकीर का तीसरा शब्द " खजरज नहीं पर " काइनुकाह " होना चाहिये।